EVERYONE HAS A STORY का हिंदी अनुवाद

हर किसी की होती है... कहानी

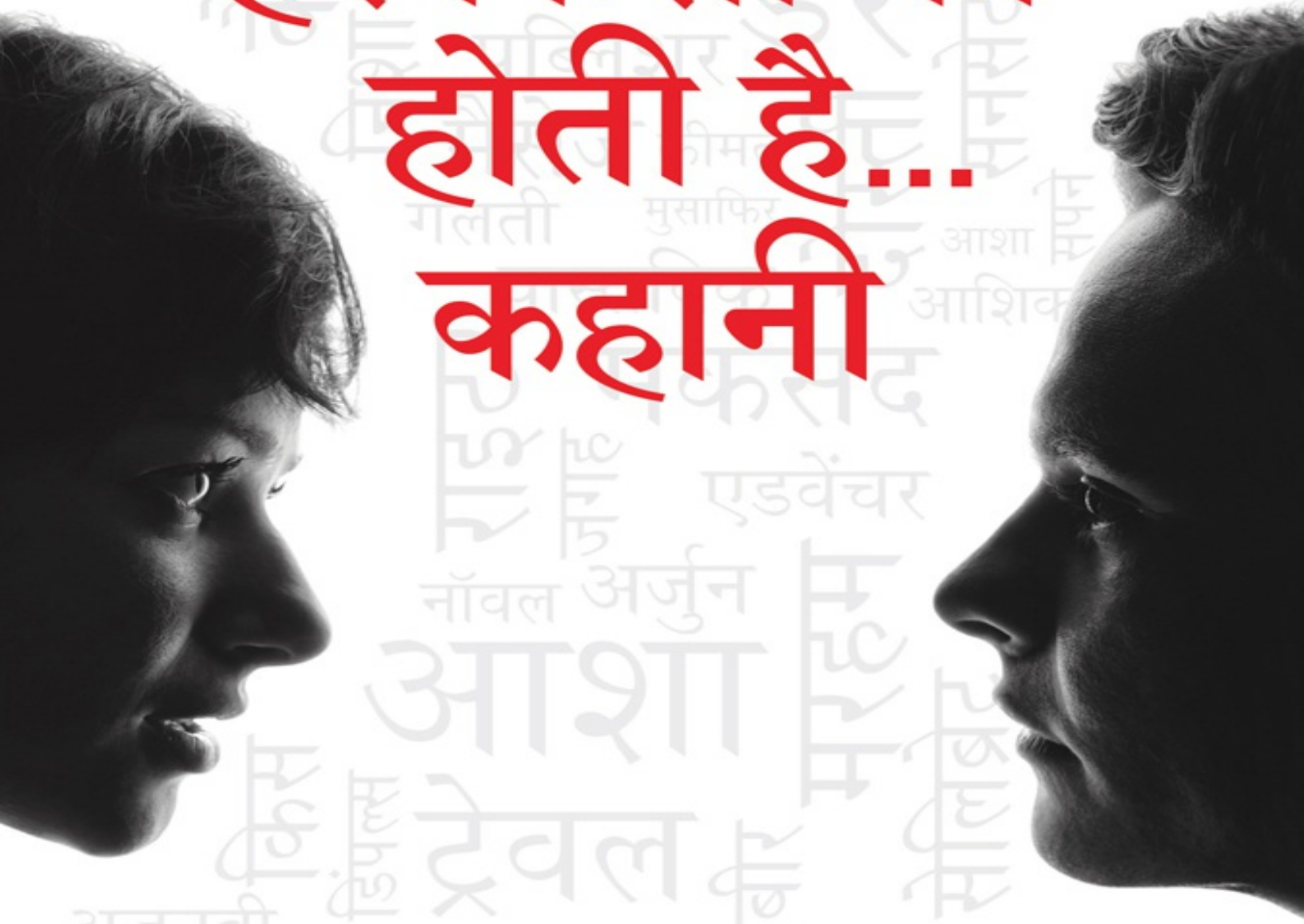

सवि शर्मा

अनुवादः उर्मिला गुप्ता

VISIT…

वैस्टलैंड

हर किसी की होती है... कहानी

सूरत की साधारण लड़की, सवि शर्मा मोटिवेशनल ब्लॉग 'लाइफ़ एंड पीपल' की को- फ़ाउडंर हैं। वह यू ट्यबू चैनल पर 'स्टोरीटेलर डायरीज़' की भी को- फ़ाउडंर हैं। 'एवरी वन हैज़ ए स्टोरी' उनका पहला उपन्यास है, जिसे उन्होंने आसपास की कहानियों से प्रेरित होकर लिखा है। उनके बारे में ज़्यादा जानकारी के लिए www.savisharma.com

उर्मिला गुप्ता बतौर संपादक और अनुवादक कई वर्षों से कार्यरत हैं। उन्होंने अमीश, रश्मि बंसल, अनुजा चौहान जैसे नामी लेखकों की किताबों का अनुवाद किया है।

हर किसी की होती है... कहानी

सवि शर्मा

अनुवाद
उर्मिला गुप्ता

यात्रा

westland ltd
61, II Floor, Silverline Building, Alapakkam Main Road, Maduravoyal,
Chennai 600095
93, I Floor, Shamlal Road, Daryaganj, New Delhi 110002
www.westlandbooks.in

First Published in English as *Everyone Has A Story* by westland ltd, 2016
First published in Hindi as *Har Kisi Ki Hoti Hai... Kahani* by westland ltd, in association with Yatra Books, 2016

First e-pub edition: 2016

Copyright © Savi Sharma 2015

All rights reserved

978-93-86036-87-2

Designed by SURYA, New Delhi.

Typesetting by Archana Printers, East Ramnagar, Shahdara Delhi 110032.

Savi Sharma asserts the moral right to be identified as the author of this work.

This novel is entirely a work of fiction. The names, characters and incidents portrayed in it are the product of the author's imagination. Any resemblance to actual persons, living or dead, or events or localities is entirely coincidental.

Due care and diligence has been taken while editing and printing the book. Neither the author, publisher nor the printer of the book hold any responsibility for any mistake that may have crept in inadvertently. Westland Ltd, the Publisher and the printers will be free from any liability for damages and losses of any nature arising from or related to the content. All disputes are subject to the jurisdiction of competent courts in Chennai.

This book is sold subject to the condition that it shall not by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, circulated, and no reproduction in any form, in whole or in part (except for brief quotations in critical articles or reviews) may be made without written permission of the publishers.

अनुक्रम

प्राक्कथन
मीरा
1. क्या है तुम्हारी कहानी?
2. मि. ट्रेवलर
विवान
3. दो डिम्पल
मीरा
4. मिस राइटर
विवान
5. देर रात की कॉल
मीरा
6. मिस्टर आशिक
7. कोल्ड कॉफी
8. कैफे कबीर
9. दो पैकेट
विवान
10. सैंडल्स
मीरा
11. डर
12. अलविदा भी न कहा
13. कोरे पन्ने
विवान
14. मेरी यादें
15. एम्मा
16. वो अजनबी
मीरा
17. कभी-कभी
विवान
18. खालीपन
मीरा
19. मरहम
विवान
20. पब्लिशर
21. वो शादी

मीरा
22. चढ़ाई
विवान
23. गुमनामी
24. हाथ में हाथ
मीरा
25. कसमसाहट
विवान
26. एक भूली हुई डायरी
27. तुम
उपसंहार
आभार

ये किताब सिर्फ
आपके लिए

'हर किसी के पास सुनाने के लिए एक कहानी है।
हर कोई कहानीकार है। कुछ किताबों में लिख जाते हैं,
और कुछ अपनी कहानी अपने दिलों में ही
दबा देते हैं।'

प्राक्कथन

'मैं कहानीकार नहीं था और न ही कभी बनने की ख्वाहिश थी। मैं तो कभी अच्छा पाठक भी नहीं रहा और नहीं जानता कि कभी बन भी पाऊंगा कि नहीं। लेकिन अब, मेरे पास उससे भी बहुत ज्यादा है।

हर सुबह, मैं उठकर जीने के बहाने खोजा करता। हर रात, सोने से पहले ना मरने की वजह तलाशता। हर पल, मैं आशा, ख्वाहिश और प्यार के कारण ढूंढता। लेकिन कोई कारण नहीं मिला। जब तक मैं तुमसे न मिला।

मैंने खुद को झमेलों, कन्फ्यूजन और डर में घिरा हुआ ही पाया। लेकिन तुमसे मिलकर मेरा मन शांत हो गया।

हमारी किस्मत और सफर का फैसला समय के हाथों में ही होता है। और जब समय बदलता है, तो सब बदल जाता है। सब कुछ। कभी बुरे के लिए, और कभी अच्छे के लिए। तुमसे मिलने से पहले तक मैं ऐसा कभी नहीं मानता था।

यह कोई कहानी नहीं है, और शायद प्यार भी नहीं। यह कहानियों से ज्यादा वास्तविक और प्यार से ज्यादा ताकतवर है। यह तुम हो। हां, तुम। सच और ताकतवर।

मैं कभी किसी के साथ खुश नहीं हुआ। मैं अलग-अलग लोगों के साथ, अलग-अलग जगहों पर होकर कुछ अलग महसूस करना चाहता था। लेकिन मुझे तुम मिलीं। और मैंने पाया कि तुम महज एक इंसान नहीं हो, तुम अनंत हो। प्यार, परवाह, भरोसे, सम्मान और समझ की अनंत। शायद तुम ही वो ब्रह्माण्ड हो, जिसे मैं ढूंढ रहा था। या वह ब्रह्माण्ड मेरे ही अंदर था।

तुम्हारी न तो कोई शुरुआत है, न ही अंत। तुम निरंतर हो, लेकिन तुम्हारा रूप बदलता रहता है। तुम हर जगह हो और सिर्फ मेरे साथ भी। तुम मेरी निर्माता हो, या मेरी रचना, मैं खुद से ही यह सवाल करता हूं।'

मीरा

1

क्या है तुम्हारी कहानी?

मैं हमेशा से कहानीकारों से प्रभावित रही। एचआर मैनेजर की अपनी नौकरी से मुझे प्यार है। इससे मुझे अलग जगहों के, अलग लोगों से मिलने का मौका मिला। हरेक की अलग कहानियां होती हैं, अपने गाने होते हैं, जिन पर वे झूम उठते हैं।

जिंदगी के बदहवास संघर्ष में, अपनी जड़ें तलाशने की कोशिश करते हुए मैं खुद को ढूंढ़ रही थी। जिस भी इंसान से मैंने बात की, उसकी अपनी कोई मजेदार कहानी थी, जिससे मैं सोचने लगीः मेरी कहानी क्या है? मैं बस 'नॉर्मल' नहीं होना चाहती थी, जैसे कि बहुत से लोग हुआ करते हैं। छब्बीस साल की उम्र में, मैं नहीं समझ पा रही थी कि मेरे जीने का मकसद क्या था, और मैं उसे कहां ढूंढ़ सकती थी।

हर वीकेंड पर मैं कैफे 'कॉफी एंड अस' आ बैठती और वहां आए शानदार लेखकों की बातें सुना करती। मैं हैरान थी कि लेखक कैसे दूसरे लोगों की कहानियां बनाकर श्रोताओं को अपनी ओर खींच लेते थे। कैसे वह प्रत्येक इंसान से सच को निकालकर, खूबसूरत कहानी बुन डालते थे? मुझे लगता कि मेरे अंदर इतनी कहानियां अटकी पड़ी हैं, इसीलिए मुझे दूसरे लोगों की कहानी सुनने की जरूरत थी। लेकिन मैं सिर्फ कहानियां ही नहीं सुनना चाहती; मेरा दिल ऐसी कहानी सुनाने के लिए तड़प रहा था जिससे लोगों की जिंदगी बदल जाती, या कम से कम मेरी।

तो मैं कॉफी एंड अस में बैठी थी, मेरे हाथों में गर्म कॉफी का चिकना कप था। मैं अपने आसपास की आवाजें सुन सकती थी, जिंदगी का संगीत सुन सकती थी, या कानों में ईयरप्लग लगाकर बाहर की सारी आवाजों को बंद कर सकती थी। मैंने बहुत से लेखकों को इस दरवाजे से आते देखा था, और अक्सर सोचा कि जरूर इस कैफे की दीवारों में ही कोई जादू होगा।

वहां का मैनेजर कबीर अपने काम को कुछ देर के लिए रोककर मेरे पास आ गया। 'मीरा, तुम लेखक बनने के सपने देखना छोड़कर, फाइनली अपनी किताब कब लिखोगी?'

उसकी आवाज जरूर किसी बाहर वाले को सख्त लग सकती थी, लेकिन कबीर मेरा दोस्त बन गया था। पता नहीं कब, लेकिन जब मैं उसके कैफे में रोज आने लगी, तो हमारे बीच होने वाली औपचारिक बातें अच्छी दोस्ती में बदल गईं। वह मेरे विचारों की कद्र

करता और मैं उसकी बातों को ध्यान में रखती।

'पता नहीं,' मैंने कहा।

उंगलियों से अपने लंबे बालों को सहलाते हुए, मैंने छोटे से कैफे में जमा लोगों को देखकर निराशा से आह भरी। 'मुझे लगता है जब लिखने के लिए सही कहानी मिलेगी, तो मुझे पता चल जाएगा। अभी तक वैसा कुछ क्लिक नहीं हुआ। मैं अभी भी उस खास कहानी की तलाश में हूं, वो जो मुझे अगला कदम उठाने के लिए प्रेरित करे।'

वह काउंटर तक गया, जहां मेरी फेवरिट कॉफी—झागदार कैपेचिनो--का दूसरा कप रखा था। कबीर ने नरमाई से मुस्कुराते हुए, मेरे सामने कप रखा। 'मुझे पूरा यकीन है, एक दिन तुम वहां सामने अपनी किताब में से अंश पढ़ रही होंगी और मैं यहां तुम्हें सुनने आए लोगों को कॉफी और स्नैक्स परोस रहा होऊंगा। पूरी जगह हाउसफुल होगी।' वह सोचकर मुस्कराया, और एक पल के लिए तो मैं हैरान रह गई कि यह उसका सपना था या मेरा। यकीनन, दोस्तों के सपनों में भी तालमेल होता है, है कि नहीं?

फिर भी, वह मेरे भविष्य को जितना सफल देख रहा था, उतना विश्वास मुझे नहीं हो पा रहा था। जितना मैं आगे बढ़कर अपने शब्दों को जीवन देने की कोशिश कर रही थी, उतना ही कुछ चीज मुझे पीछे की ओर खींच रही थी। मैंने उस छोटे से एरिया पर नजर डाली, जहां कई सारे राइटर खड़े, ठंडे पानी के छोटे घूंट लेते हुए बोलने के लिए अपना गला साफ कर रहे थे। उनके शब्द ही तो मुझे बोलने और लिखने का लालच दे रहे थे।

'मुझे नहीं लगता कि मुझमें वहां खड़े होकर लोगों का सामना करने और बोलने की हिम्मत है। ऐसा करने के लिए शायद बहुत हिम्मत की जरूरत है,' मैंने कॉफी का बड़ा घूंट भरने से पहले फूंक मारते हुए कहा। कॉफी के झाग लगे होंठों से मैं मुस्कराई और बड़ी नजाकत से जीभ से उसे चाट लिया। 'अगर कोई मेरे लिखे पर हंसेगा तो कैसा लगेगा?'

कबीर खिलखिलाया। 'वो तभी हसेंगे, जब तुम कुछ फनी पढ़ रही होंगी,' उसने पूरे विश्वास से कहा। 'अब, मुझे बताओ क्या तुम अगले वीकेंड, ऑथर'स मीट के लिए आ रही हो?' उसने पूछा।

'बिलकुल,' मैंने कहा।

जाने वीकेंड के खाते में मेरे लिए क्या हो? क्या मैं तब भी अपनी कहानी की तलाश कर रही होंगी?

• • •

'हर पल को जियो, महज दिनों या सालों या अपने शेड्यूल को ही नहीं। यही हमारी गलत सोच है--ज्यादातर--कि हम अपनी जिंदगी वैसे जी रहे हैं, जैसे हम जीना चाहते हैं। हम हर कदम दूसरों से प्रभवित होकर उठाते हैं। सिर्फ वही भाग हमारा है, जिसे हम दूसरों से छिपाकर, अपने दिल में दबाकर रखते हैं। मैं आप सबसे कहता हूं कि अपने उस छिपे भाग को पहचानो। आगे बढ़ों, और उस हिस्से को जियो। अपनी जिंदगी जियो। अपने सपनों को अपने अंदर ही मर मत जाने दो। मेरा भरोसा करो, तुम्हारा संघर्ष, तुम्हारी लड़ाई उस जोखिम को उठाने लायक हैं। उठो। जुनून को अपने अंदर भर लो। अपना सफर शुरू करो। अपने सपनों को पकड़ लो। अपनी गलतियों का मजा लो। अपने दिल की धड़कन पर थिरको। मुस्कुराओ। हंसो। प्यार करो। जियो।'

लेखक अर्जुन मेहरा पूरे विश्वास से ये आखरी शब्द कह रहे थे। उनके हाथ आपस में गुंथे हुए थे, और वह बड़ी उम्मीद से कैफे में मौजूद लोगों को देख रहे थे। उनकी नजरें मुझसे मिलीं, और मुझे अपने दिल की धड़कन बढ़ती हुई महसूस हुई। ऐसे लग रहा था जैसे वह सीधे मुझसे बात कर रहे हैं। लेकिन, वास्तव में उन्होंने कैफे में मौजूद हर शख्स को अपने शब्दों से सम्मोहित कर दिया था। एक लेखक कैसे जादुई शक्ति से लोगों को सम्मोहित कर लेता है? मैं आंखें बंद करके कल्पना करने लगी कि मैं पूरे आत्मविश्वास से अपने श्रोताओं के सामने खड़ी हूं। मैं नरमाई से खुद के लिए मुस्कुरा रही थी। शायद एक दिन मैं भी इसी तरह की भीड़ जुटा पाऊंगी।

'आपकी क्या कहानी है, मिस?' मैं झटके से अपने ख्यालों से बाहर निकली, जब मुझे एहसास हुआ कि मि. मेहरा वाकई में सीधे मुझसे पूछ रहे थे। उनकी सौम्य भूरी आंखें मुझ पर ही टिकीं थीं, नरमी लेकिन एक चुनौती के अंदाज में। 'जिंदगी में आपका मकसद क्या है?' उन्होंने मुस्कुराते हुए अपना सवाल स्पष्ट किया, अचानक मुझे लगा कि मेरा दोस्त ही मुझसे सवाल कर रहा है।

मैंने गहरी सांस ली। 'मैं... मैं आपकी तरह लिखना चाहती हूं,' मैंने अपने हाथ में नैपकिन मरोड़ते हुए, घबराकर कहना शुरू किया। मैंने तय किया था कि इसका जवाब मैं पूरी ईमानदारी से दूंगी। 'लेकिन नहीं जानती कि लिखना क्या है। मैं अपने आसपास की दुनिया से प्रेरित हूं, लेकिन फिर भी एक ऐसी कहानी की तलाश में हूं, जो लोगों का जीवन बदल दे।' मेरे शब्द मेरे कानों को ही अजीब लग रहे थे, और मैं चाह रही थी कि काश मैंने यह कहा ही नहीं होता।

मि. मेहरा ने दृढ़ता से सिर हिलाया। 'लोगों को कहानियों की जरूरत होती है। प्यार, आशा, अस्तित्व, बुद्धि और कभी-कभी दर्द की भी कहानी। भले ही आप उन्हें पूरा सच न बताओ; भले ही आप उनसे झूठ बोलो। लेकिन ये दुनिया क्या है? अपने आप में एक झूठ।' मेरी नजरें अभी भी सम्मोहन में उन्हीं पर टिकी थीं, लेकिन मैं उनके शब्द और आसपास की खिलखिलाहट सुन पा रही थी। 'लेकिन आपके झूठ अच्छे होते हैं। वे लोगों को अच्छाई के लिए बदलते हैं। मेरी तरफ से आपको खूब शुभकामनाएं,' उन्होंने प्यार से कहा।

'थैंक यू,' मैं इतना ही कह पाई, मैं उनके शब्दों से कांप रही थी, जबकि कैफे में खासी गर्मी थी।

'यू आर मोस्ट वेलकम।' इतना कहकर वह अपना सवाल पूछने के लिए किसी और को ढूंढने लगे। उन्होंने अपनी नजरें मेरे पीछे बैठे युवक पर टिका दीं। 'सर, आप क्या करते हैं? आपकी कहानी क्या है?'

मैं उनके शब्दों में इतनी डूबी हुई थी कि पहले उस युवक पर मेरा ध्यान ही नहीं गया था। मैं देखने के लिए मुड़ी, तो लगभग मेरी ही उम्र के एक स्मार्ट, हेंडसम लड़के को बैठा पाया। उसका काला अनौपचारिक कोट उसकी भूरी आंखों पर बहुत जंच रहा था। उसके कुर्सी पर सीधे बैठने के अंदाज से आत्मविश्वास झलक रहा था। मैं हैरान थी कि उस पर पहले मेरा ध्यान क्यों नहीं गया था।

'मैं सिटी बैंक में असिस्टेंट ब्रांच मैनेजर हूं,' युवक ने जवाब दिया। उसकी आवाज गहरी और खूबसूरत थी।

मि. मेहरा ने अपना सवाल पूछा। 'आपको लाइफ से क्या चाहिए? क्या सफलता, पैसा या शोहरत आपको सच्ची खुशी दे सकती हैं?' मैंने खुद को अपने पीछे बैठे आदमी की तरफ झुकता हुआ पाया, मैं उसका जवाब सुनने को बेताब थी।

उसने अपना गला साफ किया। 'मेरे पास पैसा, रुतबा और सफलता है, लेकिन मैं अभी भी निश्चित नहीं हूं कि मेरे जीवन का मकसद क्या है। मैं जानता हूं कि कुछ दिन ऐसे भी होते हैं, जब मैं जिंदगी से भागने के लिए अपना बैग उठाकर ट्रेवल पर निकल जाता हूं।' वह कहीं खो सा गया, ऐसा लगा कि उसका दिमाग ऐसे ही किसी सफर पर निकल चुका था।

लेखक ने उसे टटोला। 'आपको क्या लगता है, सफर में आप ऐसा क्या पा लेते हैं?'

'वहां कोई नहीं होता जो मेरा पीछा करे, मुझसे उम्मीदें करे,' उसने जवाब दिया। 'कोई डेडलाइन के लिए दबाव नहीं बनाता। पैसा एक कीमत चुकाने पर ही मिलता है, और मेरे लिए वो कीमत आजादी और वास्तविक जीवन दोनों ही हैं। उम्मीद है कि किसी दिन मैं खुद को अपने सपनों का पीछा करने के लिए तैयार कर लूंगा।' जवाब देकर उस युवक ने अपनी ब्लैक कॉफी का घूंट भरा। कॉफी अंदर जाने के साथ मैंने उसके कंधों को रिलेक्स होता महसूस किया।

मि. मेहरा ने उसकी बात समझते हुए सिर हिलाया, और एक बार फिर से अपनी आंखें ऑडियंस पर घुमाईं। अपने हाथों को पकड़ते हुए, उन्होंने तेज आवाज में कहा, 'शायद आप सबके साथ भी कुछ ऐसा ही है। आगे बढ़ो और अपने सपनों को सच कर लो।' इवेंट को खत्म करते हुए उनके आखरी शब्दों के साथ ही कैफे तालियों की गड़गड़ाहट से भर गया। मैंने भी इतने जोर से ताली बजाई कि मेरी हथेली लाल हो गई।

मैं यहां लेखक को सुनने आई थी, लेकिन मैं उस युवक के जवाब से ज्यादा इम्प्रेस हो गई थी। मैं उसके बारे में और जानना चाहती थी।

यह मेरे लिए बड़ी बात थी, इसलिए मैंने पीछे मुड़कर उससे बात करने से पहले गहरी सांस ली। लेकिन उसकी कुर्सी खाली थी, कॉफी का आधा भरा कप उसकी मेज पर रखा था। मैं खड़ी हो गई, मेरी आंखें कमरे में उसके गहरे सूट को तलाशने लगीं, और वह मुझे कैफे से बाहर जाता नजर आया।

'मैं तुमसे अगली बार मिलूंगी,' मैं मन ही मन बुदबुदाई। वह भले ही इस पल बचकर निकल गया था, लेकिन मेरे दिल की धड़कन बता रही थी कि मुझे मेरी कहानी मिल गई थी।

• • •

2

मि. ट्रेवलर

मैं तेजी से अपनी नोटबुक में लिख रही थी, और देख ही नहीं पाई कि कब कबीर ने मेरे पास आकर, मेरी तरफ कॉफी बढ़ा दी थी। 'तो फाइनली तुम्हें लिखने के लिए कहानी मिल ही गई!' उसने खुशी से दांत दिखाते हुए कहा।

मैंने प्यार से मुस्कुरा कर उसकी तरफ देखा और उत्साहित आवाज में कहा। 'हां, मिल तो गई... कम से कम शुरुआत तो हुई।'

वह मेरे सामने रखी आरामदायक लाल कुर्सी पर बैठ गया। 'ये तो बढ़िया है। मुझे बताओ क्या लिख रही हो।'

मैंने कंधे उचकाए, अचानक मुझे शर्म आने लगी थी। मैं अभी से कैसे उसे बता सकती थी, जबकि मैं खुद भी नहीं जानती थी कि मेरा मन मुझे कहां ले जाने वाला था? मैंने आह भरी। 'यह एक मुसाफिर की कहानी है।'

'दिलचस्प,' कबीर ने जवाब दिया। 'क्या मैं पढ़ सकता हूं कि तुमने अब तक क्या लिखा?'

गहरी सोच में अपना सिर एक ओर झुकाते हुए, मैंने ईमानदारी से जवाब दिया, 'मुझे नहीं पता कि यह पढ़ने लायक होगा भी या नहीं।'

कबीर ने आंखें सिकोड़ते हुए मुझे देखा, और हाथ अपने सिर पर फिराने लगा। 'ये तो तुम्हें कभी पता नहीं चलेगा! चलो, अब मुझे दिखाओ।'

'ओके।' मैंने अपनी नोटबुक उसकी तरफ बढ़ा दी, और उसे अपने शब्दों को पढ़ने दिया।

फिर मेरी सांस ही अटक गई, मैंने उम्मीद नहीं की थी कि वह जोर से उसे पढ़ने वाला थाः

'मैं घूमना चाहता हूं, पूरी दुनिया में। मैं रोड ट्रिप पर निकल जाना चाहता हूं। अनजानी जगहों पर रुकते हुए, उनकी खूबसूरती को तलाशते हुए। तितली को पकड़ने ले लिए उनके पीछे जंगल में भागना। अलग कल्चर के, अलग लाइफ स्टाइल वाले लोगों से बात करना। उनकी कहानियां सुनना; धूप में पार्क की बेंच पर बैठना। सूरज को निकलते हुए और छिपते हुए देखना, कभी किसी पहाड़ी की चोटी से, और कभी किसी पेड़ के पीछे से। मैं भागती हुई

नदी के पास घंटों बिताना चाहता हूं, बालों से खेलती हवा को महसूस करते हुए और लहरों में छिपे राज को सुनते हुए। बादलों से ढके ठंडे पहाड़ों और सागर पर एक कविता लिखना चाहता हूं। मैं अपनी सीमाओं को तोड़ देना चाहता हूं। प्रकृति को सराहते हुए, उसके जादू में खो जाना चाहता हूं। यादें संजोना चाहता हूं। मैं खुद को जिंदा महसूस करना चाहता हूं। उस सर्जक को महसूस करना चाहता हूं। मैं खुद को महसूस करना चाहता हूं।'

उसके हाथ हिले और मैंने उसे पन्ना पलटते हुए देखा। उसने कुछ पल खामोशी से पढ़ा और मैं बेसब्री से उसके आगे पढ़ने का इंतजार करने लगी। मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था, लगभग दुखते हुए।

'जिंदगी अपने होमटाउन में कैद हो जाना ही नहीं है, बल्कि इसे नई जगहों को देखते हुए बिताना चाहिए। मैं इस दुनिया का हर कोना देख लेना चाहता हूं। यह मेरा पुराना सपना है, और जब मैं इसे पूरा करने निकलूंगा, तो मुझे पक्षी के उस बच्चे जैसा महसूस होगा, जो अपने घोंसले के किनारे उड़ने के इंतजार में खड़ा है, बेसब्री से उड़कर पूरी दुनिया को देखने जाने के लिए। कभी-कभी मुझे इंसानों पर तरस आता है कि वे दूसरे जीवों की तरह एक जगह से दूसरी जगह नहीं जा सकते। जीवों के लिए कोई बॉर्डर नहीं है, सिवाय उन जगहों के जहां वो खुद जा सकें। इंसान ही है, जो कहता है कि वो आजाद होकर जीता है, लेकिन वह अपनी जगह की बाधाओं में घिरा है। हम सिर्फ अपने काम से ही नहीं बंधे हैं, बल्कि अपने घरों से भी। हम घूमते नहीं हैं। हम छोटी सी, निर्जन जगह पर रहते हैं--ऐसी जगह जिसे शायद पिंजरा ही कहा जा सकता है। हमारी काम की निश्चित जगह है, हम रोज एक ही तरह का खाना खाते हैं, और एक ही तरह के लोगों से मिलते हैं। मेरे लिए वो पिंजरा पुणे है। मैं पुणे के बारे में सब कुछ जानता हूं, लेकिन चिड़ियाघर के शेर की तरह, मैं बस एक चट्टान पर खड़ा हो, नीचे अपनी सल्तनत को देखते हुए आजादी महसूस करना चाहता हूं। मैं पक्षियों को उड़ते हुए, हाथियों को खुशी से नहाते हुए और अपने बच्चों पर पानी डालते हुए देखना चाहता हूं। ये वो आजादी है, जो इंसानों को नहीं मिली है और मैं अपने सपनों का पीछा करते हुए इसी आजादी को पाना चाहती हूं।'

कबीर की आवाज डूबते-डूबते खामोशी में खो गई। सब्र करने की कोशिश में मेरी उंगलियां कप के किनारे पर घूमने लगीं। ऊपर से नीचे, किसी बूंद को पकड़ने की कोशिश में। बेध्यानी में ही मैंने अपनी उंगली मुंह तक लाकर चाट ली।

वह फिर भी खामोश रहा। फाइनली, मैंने लगभग चिल्लाते हुए पूछ ही लिया। 'कैसी लगी तुम्हें?' मेरी आवाज में डर और उत्साह था। 'बोलो न कैसी है?'

वह खुलकर मुस्कुराया। 'बहुत अच्छी है, मीरा! मुझे लगता है यह लोगों के दिल को छू लेगी,' कबीर ने जोश से कहा।

'सच में?'

वह सिर हिलाकर जोर से हंसा।

'थैंक यू!'

कबीर मेरी डायरी बंद करके थपथपाने लगा। 'जब तुम और लिख लोगी, तो मैं आगे पढ़ना चाहूंगा! मुझे यकीन है कि आगे बढ़ने के साथ यह और दिलचस्प होती जाएगी। खुद से एक वादा करो, मीराः तुम कभी लिखना बंद नहीं करोगी!' मेरा दोस्त खड़ा होकर, अपने काम की तरफ लौट गया।

मैं पन्ने पर लिखे शब्दों को घूरने लगी, शांति और विजयी भाव से पेन को अपने हाथ में पकड़े हुए। मैं यह जानकर खुश थी कि उसे यह पसंद आई थी।

इससे पहले कि मैं दोबारा से लिखना शुरू कर पाती, कैफे का ब्राउन एप्रन पहने एक लड़की मेरी तरफ आई और मुझे एक फोल्ड किया हुआ नैपकिन पकड़ाया। मैंने सवालियां नजरों से उसे देखा और उसने खामोशी से मुझे नैपकिन खोलने का इशारा किया।

उत्सुकता और दुविधा से मैंने पेन नीचे रख नैपकिन खोला। उस पर बड़े अक्षर में एक ही शब्द लिखा हुआ थाः खूबसूरत।

मैंने लड़की को देखा। 'यह किसने लिखा?' मैंने पूछा। उसने मुड़कर कुछ दूर की एक कुर्सी की तरफ इशारा किया। लेकिन वहां कोई नहीं था।

'मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा,' मैंने कहा।

वह कुछ पल चौंकी, लेकिन फिर उसके चेहरे पर सहज मुस्कान आ गई। कैफे के गेट की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, 'उस युवक ने मुझे यह आपको देने को कहा था।'

वह वही मुसाफिर था। वह एक बार फिर बच निकला था।

• • •

मैंने धूल भरी खिड़की से उसे जाते हुए देखा। मेरा ध्यान नहीं गया कि कबीर भी उसे ही देख रहा था। मैं खड़ी हुई और काउंटर की तरफ भागी। 'वो कौन था?' मैंने कबीर से पूछा।

'वह तिलक रोड पर, सिटी बैंक का असिस्टेंट ब्रांच मैनेजर है,' कबीर ने मदद करते हुए बताया। 'पिछले महीने से वो कई बार यहां आ चुका है।'

मैंने सोचते हुए अपने होंठ चबाये। 'वह पिछले वीकेंड की ऑथर मीटिंग में भी था ना। क्या उसने तुम्हें अपना नाम बताया?'

कबीर ने अपना सिर न में हिलाया और इसी बीच काउंटर भी साफ करता रहा। 'वह ज्यादा बात नहीं करता। हालांकि मैं उसका नाम जानता हूं, वह हमेशा क्रेडिट कार्ड से पेमेंट करता है। उसका नाम विवान है।'

'विवान,' मैंने दोहराया, उसका नाम मेरे मुंह में घुल सा रहा था। 'वह कैफे में किस समय आता है?'

कबीर ने कंधे उचकाए। 'ओह, वैसे तो वह यहां अक्सर आता है, लेकिन उसका कोई फिक्स टाइम नहीं है। जब भी उसका मन करता है, चला आता है।'

मैंने एक पल सोचा। 'क्या अगली बार उसके आने पर तुम मुझे एक मैसेज कर दोगे?' मैंने पूछा।

'जरूर,' कबीर ने कहा। 'लेकिन तुम विवान के बारे में इतना क्यों पूछ रही हो?'

'वह वही मुसाफिर है, जिसके बारे में मैं अपनी कहानी लिख रही हूं,' मैंने जवाब दिया।

कैफे से बाहर निकालते हुए मेरी मुस्कराहट रुक ही नहीं रही थी, जबकि कबीर हैरानी से अपना मुंह खोले खड़ा था।

विवान

3

दो डिम्पल

ऑफिस जाते हुए मैं सड़क पर पड़े छोटे से पत्थर से टकरा गया। यकीनन मेरा मन काम पर था ही नहीं जहां मैं जा रहा था। दरअसल काम पर जाने के ख्याल से ही मैं कुछ चिढ़ा हुआ था।

मैं ऐसा तो नहीं था। हां, मैं आजाद होकर घूमना चाहता था, लेकिन मैं हमेशा वर्तमान को अपना सौ प्रतिशत देने की कोशिश किया करता था। जिंदगी ने मुझे कुछ बड़े झटके दिए थे, लेकिन फिर भी जिंदगी की तरफ से दी गई नेमतों का मैं आभार मानता था, मेरी नौकरी भी उन्हीं नेमतों में से एक थी।

ऑफिस के पॉलिश हुए फर्श पर आवाज करते मेरे जूते, मेरे पहुंचने से पहले ही मेरी खबर कर देते थे। मैं खाली पड़े एंट्रेंस से जल्द से जल्द होते हुए, अपने एरिया में पहुंच जाना चाहता था, जहां मेरे जूते आवाज नहीं करते थे।

'मि. विवान,' रिसेप्शनिस्ट ने पीछे से आवाज दी। मैंने आह भरी; भागने की बेकार कोशिश। मैंने मुड़कर, मुस्कुराने की कोशिश करते हुए उसे देखा। इस पल उसकी कोई गलती नहीं थी, बस मैं ही काम से खुद को जोड़ नहीं पा रहा था। 'आपके लिए बहुत सारे मैसेज हैं। आपका वॉईस मेल बॉक्स फिर से भर गया है।'

अब मैं वाकई में मुस्कुरा रहा था। 'आई एम सॉरी,' मैंने खेद जताते हुए कहा। 'और थैंक यू कि तुमने मेरे मैसेज दर्ज किए।'

'कोई बात नहीं सर,' उसने खुशी से कहा। मैं आगे बढ़ा, और जब मैंने उसके हाथों से पेपर लिए तो उसकी उंगलियां मेरी उंगलियों को छू गईं। मुझे एहसास हुआ कि वह रिसेप्शनिस्ट कितनी आकर्षक थी, लेकिन मेरा ध्यान उस पर नहीं था।

जो औरत इस समय मेरे दिमाग पर छाई हुई थी, वो वही थी, जिसे मैंने कुछ दिन पहले अर्जुन मेहरा से हुई बातचीत के दौरान देखा था, वही जो उस दिन कैफे मैनेजर से खूब बातें कर रही थी।

मैं दोबारा कैफे में उसे ढूंढ़ने नहीं गया था; कम से कम खुद से तो मैंने यही कहा था। मैं तो बस इलाके की बेहतरीन कॉफी की तलाश में वहां गया था।

लेकिन जब मैं वहां पहुंचा, वह वहीं थी।

जब उसने मुझ पर ध्यान नहीं दिया, तो मुझे कुछ निराशा भी हुई, लेकिन वहां बैठकर मुझे उसकी और कबीर की कुछ बातें सुनाई पड़ीं।

मैं भागती हुई नदी के पास घंटों बिताना चाहता हूं, बालों से खेलती हवा को महसूस करते हुए और लहरों में छिपे राज को सुनते हुए।

यह मेरा पुराना सपना है, और जब मैं इसे पूरा करने निकलूंगा, तो मुझे पक्षी के उस बच्चे जैसा महसूस होगा, जो अपने घोंसले के किनारे उड़ने के इंतजार में खड़ा है, बेसब्री से उड़कर पूरी दुनिया को देखने जाने के लिए।

बोल तो कबीर रहा था, लेकिन मन ही मन मैं उस लड़की की आवाज सुन रहा था, उसके हर वाक्य के साथ मानो कोई संगीत बज रहा था।

वो शब्द शायद मेरे लिए ही लिखे गए थे, नरम लेदर चेयर पर बैठकर सोचते हुए मैं मन ही मन खुश भी हो रहा था। लेकिन ये तो पागलपन था। उसे तो मेरी ख्वाहिश मालूम भी नहीं थी।

जब वो और कबीर बात कर रहे थे, तो मैं उसकी आवाज की झिझक को महसूस कर सकता था। उसमें अपने टैलंट को सामने लाने की हिम्मत नहीं थी। मुझे उम्मीद है कि वो हार नहीं मानेगी; मैं समझ सकता हूं कि लिखना उसके लिए उतना ही बड़ा सपना था, जितना बड़ा मेरे लिए घूमना।

मैं उस खास नोट के बारे में सोचकर शरमा गया, जो मैं उसके लिए छोड़ आया था। "खूबसूरत"। वो नोट एक ही साथ दो बातें कह रहा थाः यकीनन उसने बहुत खूबसूरत लिखा था, लेकिन उसके शब्दों से ज्यादा उसकी सुंदरता ने मुझे आकर्षित कर लिया था।

अभी याद करते हुए हंसी आ रही थी कि वह पतली-दुबली कद काठी की खूबसूरत लड़की थी। जिस शाम वह मेरे सामने बैठी थी, मैं उसकी पीठ को देर तक घूरते हुए मन ही मन उसके मुड़कर देखने की दुआ मांग रहा था। उसकी पतली टांगें बड़ी नजाकत से कुर्सी के पैरों से खेल रही थीं, और उसकी लहराती नीली स्कर्ट के नीचे दिखती उसकी मुलायम स्किन अभी भी मुझे आकर्षित कर रही थी।

लेकिन, सच पूछो तो मैं उसके गहरे डिम्पल और दिलकश आंखों में डूब जाना चाहता था। जब वह ध्यान से किसी बात को सुन रही होती, तो डिम्पल पर ध्यान नहीं जा पाता, लेकिन उसकी मोहक मुसकान मानो उसके चेहरे से एक-एक परत उतार देती। ऐसा लगता मानो दो एंजल उसे एक ही समय में चूम रही हों।

उसकी इमेज दिमाग से निकालने के लिए मैंने सिर हिलाया। मैंने अगले दिन कैफे जाने की कसम खाई, यह देखने के लिए कि मेरे नोट पर उसका रिएक्शन क्या रहा होगा।

मैं पहले जल्दबाजी में वहां से निकल आया था; लेकिन तीसरी बार मैं ऐसा नहीं करूंगा। मैं कैफे की उस उभरती हुई लेखिका के बारे में और जानना चाहता था।

मीरा

4

मिस राइटर

जिंदगी आपके सामने वो ले आती है, जिसकी कभी आपने उम्मीद भी नहीं की होती। अभी कुछ सप्ताह पहले तक मैं एक कहानी की तलाश कर रही थी। और फिर जब मुझे वो कहानी मिली, तो मुझे उसके बारे में बस थोड़ा ही जानने को मिल पाया। लेकिन मैं जानती थी कि मुझे वो कहानी मिल गई है जो मेरी अब तक पढ़ी गई कहानियों में सबसे ज्यादा छू लेने वाली थी।

शाम के साढ़े छह बज चुके थे, और मैं बस ऑफिस से निकलने ही वाली थी। आज पूरा दिन मैं बहुत बिजी रही थी और अब तक मेरा सिर भी दुखने लगा था। प्रॉब्लम का एक के ऊपर एक ढेर लगता जा रहा था, और मुझे कोई हल नजर नहीं आ रहा था।

मेरा फोन बजा, लेकिन मुझमें उसे उठाने की हिम्मत नहीं थी, फोन बस बंद होने ही वाला था। मैंने अपना हाथ पॉकेट में डालकर फोन अंदर डाल दिया। कुछ कदम आगे चलकर मेरे राइटर मन ने मुझे फोन उठाने को उकसाया। दूसरी बार हाथ पॉकेट में डालकर मैंने बेमन से फोन निकालकर कुछ बटन दबाए। कबीर का मैसेज था, 'तुम्हारा मुसाफिर आ गया है।'

सिर दर्द भुलाकर मैंने तेजी से बाहर की ओर कदम बढ़ाए, इस बीच मेरी उंगलियां तेजी से फोन पर कुछ बटन दबा रही थीं।

'उसे वहीं उलझाए रखना। मैं आ रही हूं।'

कुछ ही पल बाद, मैं कैफे के रास्ते पर थी।

• • •

खिड़की से उसे देख, मैंने अपनी चाल धीमी की और सामान्य गति से चलते हुए कैफे में घुसी। अंदर जाते ही मेरी नजरें कबीर की नजरों से मिलीं और मैंने सिर हिलाकर उसे थैंक्स कहा।

मन ही मन अपने कपड़ों, बाल और मैकअप पर नजर डालते हुए मैं सीधा उसकी टेबल की तरफ बढ़ गई। क्योंकि मैं लंच में भी काम ही कर रही थी, तो निश्चिंत थी कि मेरे दांतों या कपड़ों पर खाने का कोई धब्बा तो नहीं ही होगा।

गहरी सांस लेकर, मैं उसके सामने रखी चेयर पर बैठ गई। 'तो, मिस्टर विवान, कैसे हैं आप?' मैं उसकी तरफ खुले दिल से मुस्कुराई, जैसे हम कब से इस मीटिंग की प्लानिंग कर रहे थे।

उसने नजर उठाई, और कुछ पल तो उसे यकीन ही नहीं हुआ। 'एक्सक्यूज मी?' मैं उसकी आवाज से बता सकती थी कि वह यूं मेरे सामने से आकर बात करने पर हैरान रह गया था। या शायद इसलिए कि मैं उसका नाम जानती थी।

अपनी टांग पर टांग रखते हुए मैं चेयर पर पीठ टिकाकर बैठ गई। पूरे विश्वास से उठाए हुए मेरे ये कदम मेरे दिल की तेज धड़कन की पोल उसके सामने नहीं खोलने वाले थे। 'आई एम सॉरी,' मैंने आगे कहना शुरू किया, 'लेकिन इससे पहले कि आप तीसरी बार मुझे छोड़कर चले जाएं, हमें कुछ बात कर लेनी चाहिए।' मैंने कबीर को मेरी कैपेचिनो लाने का इशारा किया।

'वैल, मैं आपको छोड़कर कभी नहीं गया,' विवान ने पहली बार मेरी आंखों में देखते हुए कहा। एक पल के लिए, शांत रहने का मेरा दिखावा टूटने ही वाला था। मैं अपने हाथों की कंपन महसूस कर सकती थी, उसने अपनी नजरें मेरी नजरों पर टिका दीं, और हटाने की कोशिश भी नहीं की।

उंगली के पोरों को दबाते हुए मैंने अपने हाथों को शांत रहने का निर्देश दिया। मैंने अपना सिर हिलाया, ठीक उसी तरह जब मुझे चॉकलेट कुकी की तरफ बढ़ता देख मेरी मां सिर हिलाती थीं। 'लेकिन आप कभी रुके भी नहीं। आप हमेशा बच निकलते थे,' मैंने आंखें उस पर टिकाए हुए ही जवाब दिया। यह मेरे लिए एक नया ही अनुभव था।

उसके माथे पर एक लकीर उभरी। 'मुझे घूमना पसंद है। क्या आप यह नहीं जानतीं?'

'जानती हूं।' मेरी आवाज कुछ धीमी थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहना था। उसकी आंखें मुझ पर कुछ जादू कर रही थीं, और मैं पूरी तरह से सम्मोहित हो चुकी थी।

वह बहुत नरम आवाज में बोल रहा था, मैं बमुश्किल ही उसे सुन पा रही थी। उसके भरे हुए होंठों के हिलने से ही मैं उसकी बात का कुछ अंदाजा लगा पा रही थी। 'और आप मुझे रोकना क्यों चाहती हो?'

मैं उसी दुनिया में ठहर जाना चाहती थी, बहुत देर तक। लेकिन तभी अहसास हुआ कि उसे रोकने के लिए अब मुझे कुछ कहना ही होगा। मैंने अपना गला साफ किया, और जोर देने के लहजे से कहा। 'मुझे लिखना पसंद है, शायद इसलिए मैं आपको रोकना चाहती हूं।' मैं उसकी तरफ देखकर मुस्कुराई। 'क्या आप ये नहीं जानते?'

वह पहली बार मुस्कुराया। वो ऐसी खास मुस्कान थी, जिसे आप शायद ही जीवन में कभी देख पाते हों। मानो चट्टान के नीचे गहराई में छिपे क्रिस्टल की चमक। उस मुस्कान में वो ताकत होती है, जो आपको अंदर तक बदल देती है।

'मेरे बारे में लिखने के लिए कुछ है ही नहीं,' विवान ने अपना सिर हिलाते हुए ऐलान किया।

मैंने अपनी उंगलियों को आपस में गूंथते हुए, हाथ टेबल पर रखे। 'हर किसी के पास एक कहानी होती है,' मैंने जोर दिया। 'हर कोई लेखक है। कुछ उन्हें किताबों में लिख देते हैं,

और कुछ दिल में छिपाकर रखते हैं।' अपने जवाब पर मैं खुद ही खुश थी।

और कुछ पल वहां खामोशी रही। हम दोनों बिना पलकें झपकाए एक-दूसरे को देख रहे थे, इससे मुझे बचपन का वो खेल याद आ गया, जिसे मैं अपनी बहन के साथ खेलती थी।

बिना देखे ही मुझे अपने पीछे हो रही हलचल पता चल रही थी, और मेरे सामने कॉफी मग आ पहूंचा था। 'आपकी कॉफी।'

मुझे पता नहीं था कि कप लेकर कौन आया था, लेकिन मैं शुक्रगुजार थी कि कॉफी की वजह से मुझे उस पर से नजर हटानी नहीं पड़ी थी, और मैंने कॉफी से एक घूंट भरा। फिर फाइनली मैंने अपनी पलकें झुकाईं।

मैं आगे नहीं बोलने वाली थी। बोलने की बारी अब उसकी थी।

मेरी तीन गहरी सांसें लेने से पहले ही वह बोला, 'आपके शब्द बहुत अच्छे हैं,' खामोशी को तोड़ते हुए विवान ने कहा।

'थैंक्स,' मैंने कहा। 'और आपकी खासियत?' मैं उसके बारे में ज्यादा से ज्यादा जानना चाहती थी। वह बहुत रहस्य भरा लग रहा था, लेकिन फिर भी कमाल का था।

इससे पहले कि मेरा जवाब मिल पाता, विवान का फोन बज उठा। उसने जल्दी से फोन उठाकर नंबर देखा। मुझे देखते हुए उसकी आंखों में अफसोस था, उसके चेहरे की निराशा साफ झलक रही थी।

फिर वह हंसा। 'शायद मेरी खासियत बच निकलना ही है,' वह बोला।

निराशा की आह। 'फिर से?' मैंने बुझी आवाज में पूछा।

'हमेशा,' वह टेबल पर मेरी तरफ झुकते हुए फुसफुसाया।

'क्यों?' मैंने जानना चाहा। मैं उसे यूं जाने देना नहीं चाहती थी। मैंने जब तक हो सके, उसे बातों में उलझाए रखने की योजना बनाई।

उसने कंधे उचकाए, उसके कोट के कंधे उसके कानों तक पहुंच रहे थे। 'प्यार।'

मुझे रोना आ रहा था, लेकिन उसकी आंखों में एक शरारत थी। 'क्या?'

'मुझे घूमने से प्यार है,' उसने समझाया। 'मैं एक जगह पर नहीं रुक सकता।'

अभी नहीं, मेरा दिमाग कह रहा था। 'क्या तुम मुझसे दोबारा मिलोगे?' मैंने पूछा।

'क्यों?' उसने चुनौती के अंदाज में कहा।

मैंने उसी के अंदाज को पकड़ते हुए कहा। 'शायद तुम ही मेरी कहानी हो।'

'मिस राइटर,' उसने खड़े होते हुए कहा। 'मैं सच हूं, कल्पना नहीं।' हंसते हुए वह जाने लगा।

मैं भी तुरंत खड़ी हुई और हल्के से उसके हाथ का पकड़ लिया। 'मैं मीरा,' मैंने उदास होते हुए कहा। 'मिस राइटर नहीं।'

और इससे पहले कि वो जाए, मैं कैफे से बाहर निकल गई।

विवान

5

देर रात की कॉल

मैं बिस्तर के किनारे, अपने हाथ अपने घुटनों पर बांधे बैठा था। मेरे दिमाग में एक के बाद एक विचार भाग रहे थे।

मैं बार-बार हाथों में सेलफोन घुमा रहा था, और फिर कॉन्टेक्ट लिस्ट देखने लगा। ऊपर से नीचे, जब तक कि मुझे वो खास नंबर नहीं मिल गया, जो उस वक्त मुझे चाहिए था।

उधर से जवाब आया, गुनगुनाती आवाज ने मेरा नाम लिया। 'विवान! कैसे हो, स्वीटी? कितने दिन हो गए तुमसे बात किए हुए!'

'जानता हूं,' मैंने जवाब दिया, मुझे बड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई। 'बस कुछ बिजी...'

उधर से गुर्राती हुई आवाज आई। 'हां, काम। तुम्हें बस हर समय काम ही सूझता है न,' आवाज में ताना महसूस किया जा सकता था।

'यह सच नहीं है,' मैंने बहस की। लेकिन फिर भी कुछ सच तो था। मैंने जानबूझकर अपनी लाइफ को इतना बिजी कर लिया था कि दोस्तों, परिवार या कुछ और सोचने के लिए समय ही न मिले।

हर कोई किसी न किसी चीज से भागता रहता है। और कभी-कभी मैं खुद से ही दूर भाग जाना चाहता हूं।

'तो,' इस बार आवाज में कुछ खुशी थी। 'बताओ और क्या चल रहा है। मैं सब जानना चाहती हूं कि मेरा डार्लिंग भतीजा आखिर कर क्या रहा है।'

मैं तो भूल ही गया था। प्रिया आंटी अगर मुझे इतना नहीं चाहतीं, तो कभी मुझे डार्लिंग न कहतीं। अजीब था उन कुछ शब्दों ने मेरी सारी झिझक दूर कर दी। मैं उन शब्दों की अहमियत समझते हुए मानो उड़ने लगा था, और अहसास हुआ कि कैसे लिखे या बोले गए शब्द जहां सहारा दे सकते हैं, वहीं तोड़ भी देते हैं।

'वैसे,' मैंने वापस अपना ध्यान आंटी पर लाते हुए कहा, 'आप सही कह रही थीं; मैं काम में ही बिजी था।'

'काम तो बोरिंग होता है,' उन्होंने बीच में ही टोक दिया इससे पहले कि मैं उन्हें लोन और ब्याज दर का ब्यौरा देने लगता। 'काम जरूरी है, लेकिन आज हम उसकी बात नहीं

करेंगे। ये बताओ कि तुम और क्या मस्ती कर रहे हो?'

मैं हंसा। 'मस्ती के लिए समय ही कहां है आंटी।'

वह आसानी से हार मानने वालों में से नहीं थीं। 'फिल्में देखीं तुमने?'

'हाल में तो नहीं।'

'कोई बढ़िया रेस्टोरेंट?'

'नहीं।' उन्होंने निराशा से आह भरी। मैं कल्पना कर सकता था कि वह किचन टेबल पर बैठी हुईं, बेसब्री से अपनी उंगलियां बजा रही होंगी। मैं हंसा। 'वैसे मैं एक नए कैफे में गया था,' मैंने कहा।

'सच में?' उनकी दिलचस्पी बढ़ी। 'दोस्तों के साथ?'

उनका मतलब समझते हुए मैं हंसाः दोस्त मतलब गर्लफ्रेंड । 'नहीं,' मैंने कहा। 'वहां की फ्रेंच रोस्ट कॉफी बहुत बढ़िया है, और मुझे वहां का माहौल बहुत अच्छा लगा। उनके वहां बोलने के लिए राइटर आते हैं...' उसका ख्याल आते ही मैं रुक गया। मीरा। उसका नाम मेरे लिए शाम की सुहानी हवा की तरह था।

'सुनने में तो मजेदार लग रहा है,' उन्होंने कहा। 'लेकिन तुम अभी भी अकेले हो।'

'ये तो मैं चाहता था न आंटी,' मैंने कहा। 'आपको पता है न मुझे दुनिया घूमना है। पूरी दुनिया को देखना है, ग्रैंड केन्योन, ग्रेट वॉल ऑफ चाइना...'

'और पिरामिड,' उन्होंने मेरी बात आगे बढ़ाते हुए कहा। 'जानती हूं, विवान। और ये भी जानती हूं कि तुम्हें मौका नहीं मिल पाएगा, अगर--'

मैंने बेचैनी में उनकी बात काट दी। 'लेकिन मैं कर सकता हूं, और करूंगा।'

'कब?'

'पता नहीं,' मैंने कहा। 'शायद जल्दी ही।'

'तुम्हें अकेलापन नहीं महसूस होता?'

'शायद,' मैंने माना। 'शायद मैं अकेला हूं भी। लेकिन एक इंसान को अकेले रहना भी आना चाहिए।'

'आशा है तुम्हें जो चाहिए वो मिल जाएगा, सब अच्छा होगा, पूरी दुनिया पड़ी है देखने के लिए,' उन्होंने जवाब दिया।

'और वो कैसी होगी?' मैंने उन्हें छेड़ते हुए पूछा।

'सिर्फ तुम जानते हो, विवान।'

• • •

मीरा

6

मिस्टर आशिक

अगले कुछ दिन मैंने कैफे न जाने का फैसला किया। मेरा एक मन वहां जाने के लिए मरा जा रहा था, लेकिन दूसरा मन अभी भी विवान के यूं अचानक चले जाने से दुखी था और इसलिए मुझे खुद को हील करने के लिए वहां से दूर रहने की जरूरत थी।

एक दिन भी विवान के बारे में सोचे बिना नहीं गुजरा था। उसके रहस्यमयी व्यक्तित्व में कुछ तो ऐसा था, जो मुझे उसकी तरफ खींच रहा था। मैं उसके बारे में ज्यादा जानना चाहती थी। मुझे उसके बारे में ज्यादा जानना ही था। लेकिन इस समय मुझे खुद को किसी दूसरे की कहानी में तलाशने की जरूरत थी।

• • •

कुछ दिन बाद, मैं शनिवारवाडा के बगीचे में घूम रही थी। पुणे में परवरिश होने के दौरान यह मेरी पसंदीदा जगहों में से एक थी। मुझे इसके किले और मैदान में घूमना बहुत सुहाता था, मेरे हाथ अचानक ही इसके स्टील गेट को छूने के लिए बढ़ जाते थे।

बचपन में, मैं भालेदार गेट को देखा करती--प्रवेशद्वार पर रोक के लिए लगाया गया था--और मन ही मन प्रार्थना करती कि मैं कब बड़ी होकर इन्हें छू पाऊंगी।

हम बड़े होने के लिए इतने उतावले क्यों रहते हैं? बड़ा होने के बाद बस हमें तकलीफ मिलने की संभावनाएं और बढ़ ही जाती ।

पथरीले मार्ग पर चलते हुए अचानक मेरा फोन वाइब्रेट हुआ। मैंने पॉकेट से फोन निकालकर मैसेज देखा। मैं भेजने वाले का नंबर नहीं पहचानती थी। उत्सुकता से मैंने मैसेज पढ़ा, 'सॉरी।'

'आप कौन?' मैंने वापस टैक्स्ट किया।

'चलो मिलते हैं।' भेजने वाले ने अपना नाम नहीं बताया था।

मेरा दिल उछलने लगा था। शायद वह भेजने वाले को जानता था, लेकिन मैं पूरी तसल्ली कर लेना चाहती थी। मेरा एक मन छलांगे लगा रहा था, जबकि दूसरा कुछ चिढ़ा हुआ था।

कुछ पल मैंने मैसेज को इग्नोर किया। उसे कुछ इंजतार करने दो। आखिरकार, मैंने जवाब

दिया। 'कौन बोल रहा है,' मैंने पूछा।

'तुम मुझे नहीं जानतीं क्या, मिस राइटर?'

मैं हैरान थी कि यह सच में विवान ही था। मैं सोच रही थी कि शायद मेरे जाने के बाद उसने कबीर से मेरा नंबर लिया होगा।

'मैं अभी भी तुम्हें नहीं जानती हूं। तुम हमेशा भाग निकलते हो,' मैंने जवाब दिया।

'तो आओ, और मेरे बारे में जान लो। कल शाम, 7 बजे, कॉफी एंड अस ।'

मैं इतनी आसानी से मानने वाली नहीं थी। मैंने मैसेज कियाः मैं टेबल पर तुम्हें हथकड़ी से बांध दूंगी, जिससे तुम भाग नहीं पाओ।'

• • •

अगला दिन बेताबी और इंतजार में गुजरा, मैं विवान के रहस्यमयी व्यक्तित्व का जवाब जानने को बेचैन थी। उसकी कहानी मुझे बुला रही थी, उकसा रही थी कि मैं परत दर परत उस पर लिख दूं।

मैं बहुत जल्दी कैफे पहुंच जाना चाहती थी, लेकिन जब तक मेरा तैयार होना खत्म हुआ, तो समय भी निल चुका था। और वास्तव में, मैं तीस मिनट लेट हो गई। कैफे पूरी तरह भर चुका था और मैं इस उम्मीद में हर तरफ देख रही थी कि विवान मेरा इंतजार कर चला न गया हो। मैंने एक कोने में, भीड़ से कुछ अलग उसे बैठे हुए देखा। वह कॉफी पीते हुए मुझे देख मुस्कुराया। विवान कैजुअल कपड़ों में भी उतना ही अच्छा लग रहा था, जितना सूट में। मैंने उसकी जींस और ब्लैक पोलो शर्ट पर एक नजर डाली और उसकी टेबल की तरफ बढ़ गई। गहरे रंग उस पर फबते थे।

'मैं तो सोच रहा था कि अब तुम यहां कभी नहीं आओगी,' मेरे बैठते ही विवान ने मजाक करते हुए कहा।

'सॉरी, मुझे आने में देर हो गई,' मैंने कहा, लेकिन कोई वजह नहीं बताई। 'मैं तुम्हारे बारे में जानने के लिए बेकरार हूं।'

'बताऊंगा,' उसने वादा किया, 'लेकिन पहले बताओ कि और सब कैसा चल रहा है?'

मैंने सब्र न खोते हुए कहा। 'मेरा काम बढ़िया चल रहा है,' जल्दी से बात खत्म करने के लिए।

'और कुछ मजेदार काम किया?'

मैं मुस्कुराई। 'हां, मैं शनिवारवाडा गई थी। उन बगीचों में मुझे बहुत शांति मिलती है।'

'मुझे भी वहां जाना पसंद है,' उसने कहा। 'इतना बड़ा इतिहास हमारे कितना करीब है।'

तो फिर तुम ट्रेवल पर क्यों जाना चाहते हो? मैं पूछने के लिए बेचैन हो रही थी, लेकिन मैं उसका ध्यान हमारी टेबल से हटाना नहीं चाहती थी। मैं उसका मन इस कॉफी शॉप में, सिर्फ मुझ पर ही टिकाए रखना चाहती थी। न कि दुनिया घूमने के ख्यालों में खो जाने के लिए। 'तो अपने बारे में बताओ रहस्यमयी विवान,' मैंने सीधे पूछ लिया।

'मेरा जन्म और पालन-पोषण मुंबई में ही हुआ,' विवान ने बताना शुरू किया। 'बचपन में ही मेरी मां चल बसीं और मेरे पिता ने मुझे खूब प्यार और संभाल से पाला।' मैंने देखा कि मां की बात करते हुए उसकी आंखों में दर्द झलक आया था, फिर तुरंत ही पिता के बारे में बात करते हुए उनमें खुशी उमड़ रही थी। अगर भावनाओं के रंग होते, तो मैं जानती थी

कि उसकी आंखों में मैंने कुछ ही पल में मैंने दुनिया का सबसे बेहतरीन आर्टपीस देख लिया होता।

'तुम्हारी मां के बारे में सुनकर बहुत दुख हुआ,' मैंने कहा। मेरी आंखों में पानी भर आया था।

'इट'स ओके,' विवान ने कहा और वह खिड़की के बाहर किसी और चीज पर फोकस करने की कोशिश करने लगा।

मुझे अच्छा लगा कि वह अपनी मां को याद करता था। अगर ऐसा मेरे साथ उस उम्र में हुआ होता, तो मैं जानती थी कि खालीपन के उस हिस्से को किसी भी तरह भरा नहीं जा सकता था। हालांकि वह अभी भी मेरे लिए अजनबी ही था, लेकिन मेरा मन उसे सीने से लगाकर सहारा देना चाहता था।

उसका ध्यान वापस टेबल पर लाने के लिए मैंने गला साफ किया। 'अब अपने बारे में कुछ और बताओ।'

वह मुस्कुराया। 'मैंने फाइनेंस में मास्टर पूरी की और बैंकिंग सेक्टर में काम करने लगा। कुछ सालों की मेहनत और बहुत सारे संघर्ष के बाद मैं हमारी कंपनी का सबसे युवा असिस्टेंट ब्रांच मैंनेजर हूं,' उसने गर्व से कहा। 'और शायद अगले कुछ सालों में बैंक का सबसे युवा चीफ ब्रांच मैनेजर भी बन जाऊंगा।'

'शानदार,' मैंने मन से कहा। मेरे सामने बैठा आदमी सच में मेहनती था।

'मेरे बारे में बस यही है।'

मैं जानती थी कि कुछ और भी है, कुछ ज्यादा गहरा, जो उसके दिल के ज्यादा करीब था। मैं उसके सारे सीक्रेट जान लेना चाहती थी।

मैंने चुनौती देने के अंदाज में अपने हाथ बांधे। 'यही पूरी कहानी है, जो तुम मुझे बताना चाहते थे?' मैंने अपनी भौंह उठाते हुए अविश्वास से पूछा।

'हां, यही मेरी कहानी है।'

'क्या तुम मुझसे मजाक कर रहे हो?' मैंने पूछा।

'नहीं, मैंने तुम्हें अपनी कहानी बता दी, क्या वो दिलचस्प नहीं थी,' विवान ने जवाब दिया।

'मैं एक पल के लिए भी ये मानने को तैयार नहीं हूं! तुम्हारी और भी कहानी है, और तुम उसे छिपा रहे हो! मुझे अपनी गर्लफ्रेंड के बारे में बताओ,' मैंने जोर देते हुए पूछा।

'गर्लफ्रेंड? मेरी कोई गर्लफ्रेंड नहीं है,' विवान ने सिर हिलाते हुए कहा।

रुको। मैंने एक बार फिर से सोचा कि मैं उसके बारे में गलत तो नहीं थी। 'तो तुम्हारा कोई बॉयफ्रेंड है?' मैंने कुछ परेशानी से पूछा।

'नहीं! शटअप!' वह दिल से हंसा। 'मेरा कोई बॉयफ्रेंड भी नहीं है!'

'विवान,' मैंने निराशा को अपनी आवाज में आने दिया। 'तुमने मुझे यहां बुलाया और अब तुम ही मुझे कुछ बताने से मना कर रहे हो!' मैंने साफ कहा।

उसने आह भरी। 'मीरा, मेरी कोई गर्लफ्रेंड नहीं है। और बॉयफ्रेंड तो पक्का ही नहीं है। मैं सिंगल हूं!'

मैंने मुस्कुराकर उस वेट्रेस को देखा, जो मेरे लिए कैपेचिनो लाई थी, और फिर विवान

की तरफ मुड़ी। 'ओके, तो अपने अतीत के बारे में बताओ? क्या कोई ऐसा है, जिसे तुम अपना कह सको?'

उसने लंबी सांस ली। 'मेरे भी कुछेक आकर्षण रहे हैं, लेकिन कुछ भी सीरियस नहीं है। मैं तुमसे सच कह रहा हूं, मीरा!'

मैंने कंफ्यूजन से उसे देखा। वह जरूर कुछ छिपा रहा था।

'मैं निराश हूं।' मैंने वैसे ही कहा जैसे मेरे टीचर क्लास में किसी का पेपर अच्छा नहीं जाने पर कहते थे।

'क्यों?' उसने भौंह चढ़ाई और अपने कॉफी मग पर उंगलियां थपकने लगा।

मैंने सब्र से समझाया, 'मुझे लगा कि तुम्हारे पास बताने के लिए कोई बढ़िया सी लव स्टोरी होगी, कुछ मजेदार सी, जिस पर लिखा जा सके।'

'मीरा, अगर तुम देखो, तो हर तरफ स्टोरी हैं।' मैं उसकी आवाज में अफसोस सुन सकती थी, उसने आगे बढ़कर कप के पास मेरी उंगलियों को छुआ। अपना हाथ मेरे हाथ पर रख, नरमी से दबाया, उसके इस दोस्ताना व्यवहार पर भी मेरी नब्ज मानो डूबने ही वाली थी।

'मुझे हर जगह कहानी नहीं मिलती न। बस मैं एक ही कहानी ढूंढ़ पाई थी, वो भी तुम्हारी आंखों में,' मैंने फुसफुसाया।

विवान खामोश हो गया। उसने कबीर को दूसरी कॉफी लाने का इशारा किया।

जब कबीर कॉफी के दूसरे प्याले लेकर आया, तो विवान ने कहा, 'शायद तुम्हें कहीं और देखने की कोशिश करनी चाहिए।'

'कहां?'

'कबीर की आंखों में।'

कबीर और मैंने एक-दूसरे को देखा और हम दोनों ही विवान की बात से सकते में थे। उसकी बात से कैपेचिनो का मेरा दूसरा कप भी मानो टेबल पर लड़खड़ा गया।

'क्या?' कबीर और मैंने एक साथ ही पूछा।

विवान हमारे कंफ्यूजन पर हंसा। 'क्या तुमने कभी ध्यान नहीं दिया कि कबीर लोगों को यहां आते देख उन्हें कितनी प्यारी मुस्कान देता है? उसे फर्क नहीं पड़ता कि वो युवा हैं, या वृद्ध; वह सबका स्वागत मुस्कुराकर करता है।' मैंने कबीर को देखा, अचानक मेरे दोस्त का दूसरा ही रूप नजर अया। 'किस तरह वह लोगों को यहां घर का, अपनेपन का अहसास कराता है।'

'हां, ये करने की तो मैं जरूर कोशिश करता हूं,' कबीर ने खुशी से कहा।

'वह अपने कस्टमर के लिए बेस्ट कॉफी भी बनाता है। मुझे पूरा यकीन है कि उसे जरूर किसी से प्यार हुआ होगा, और उसके पास कोई लव स्टोरी भी होगी,' विवान ने उत्साह से अपनी बात खत्म की।

मैं हैरान थी कि कैसे वह सामने वाले की इतनी छोटी-छोटी बातें देख पाता था।

मैंने धीरे-धीरे बोलना शुरू किया। 'मुझे मानना पड़ेगा कि मैं कबीर को तुमसे बहुत पहले से जानती हूं। मैं जानती हूं वह अच्छा और मिलनसार इंसान है, और वह अपने कस्टमर की बहुत अच्छी तरह केयर करता है। लेकिन कबीर की लव स्टोरी का ख्याल तो कभी मेरे दिमाग में आया ही नहीं। बताओ कबीर, क्या विवान सही कह रहा है?'

'हम्म...' कबीर ने शांति से कहा। कहते हुए उसके चेहरे के रंग बदल रहे थे।

विवान ने आगे झुककर एक चेयर खींच ली। 'क्या तुम एक मिनट बैठ सकते हो? मुझे पता है कि तुम अभी बिजी हो,' उसने कहा।

कबीर ने एक नजर कैफे पर डाली, और फिर सिर हिलाकर कुर्सी पर बैठ गया।

'मिस्टर आशिक, अपने बारे में कुछ बताओ।'

• • •

7

कोल्ड कॉफी

'हां, मुझे भी प्यार हुआ था।' कबीर ने बताना शुरू किया, उसकी आवाज में इतना दर्द था कि अगर मैं उसका चेहरा नहीं देख रही होती, तो उसकी आवाज पहचान नहीं पाती।

जहां मैं उसकी आवाज के लहजे से हैरान थी, वहीं इस कुबुलनामे ने तो मेरे होश ही उड़ा दिए थे। 'वो कौन है? उसका नाम क्या है? वह अभी है कहां?' मैं खुद को रोक ही नहीं पा रही थी।

'उसका नाम निशा है। वह पहले इस कैफे में आया करती थी... ये तुम दोनों के इस कैफे में आने से बहुत पहले की बात है।'

'फिर क्या हुआ? वह अब यहां क्यों नहीं आती?' मैंने पूछा।

विवान खामोश था, वह ध्यान से कबीर की बात सुन रहा था। उसके मुंह से निकली हुई बात भी और उसके हाव-भाव से व्यक्त होने वाली बात भी। मुझमें उतना सब्र नहीं था; मैं बस पूछे जा रही थी, इसके बारे में ज्यादा से ज्यादा जान लेना चाहती थी। मैं कहानी जानना चाहती थी, और--जैसे कि मैं इसके लिए रोमांचित थी--हर बारीकी के साथ। कबीर की कहानी लव स्टोरी नहीं थी, जैसा मैं उसे देख पा रही थी, कम से कम उसकी आवाज में बयां हो रहे दर्द से तो यही लग रहा था।

'मीरा, शांत हो जाओ! कबीर को अपनी बात कहने दो,' विवान ने नरमी से मेरी तरफ मुस्कुराते हुए कहा।

मैंने हां में सिर हिलाया। 'सॉरी कबीर,' मैंने कुछ शांत आवाज में कहा। 'मैं तुम्हारे और निशा के बारे में सब कुछ जानना चाहती हूं। प्लीज आगे बताओ न।'

कबीर ने गहरी सांस ली और नीचे नजर करके टेबल पर रखे अपने हाथों को देखने लगा।

'मेरा पालन-पोषण निम्न मध्यवर्गीय परिवार में मेरी छोटी बहन के साथ हुआ। मेरे पिता सरकारी स्कूल में टीचर थे, लेकिन हार्ट अटैक पड़ने की वजह से उन्हें जल्दी ही रिटायरमेंट लेना पड़ा।'

'ओह,' मैंने धीमे से कहा, लेकिन उसकी बातों में दखल नहीं दिया।

'हमारी सारी बचत उनके ईलाज में निकल गई। वह मेरे परिवार के लिए बहुत मुश्किल

समय था। मेरी मां और छोटी बहन ने घर चलाने और उनके ईलाज का खर्च निकालने के लिए घरों के काम करने शुरू कर दिए। तब मैंने कॉलेज की पढ़ाई बीच में छोड़ नौकरी ढूंढने का फैसला किया। पहले तो मेरी मां ने ऐसा करने से मना किया, लेकिन मैंने उन्हें समझाया कि हमारे पास और कोई रास्ता नहीं था।'

वह टूट गया, विवान धीमे से बुदबुदाया, 'नहीं, मैं तो सोच भी नहीं सकता, जो तुमने कर दिखाया।'

कबीर ने सिर हिलाया और अपनी बात आगे बढ़ाई। 'मैंने तुरंत काम ढूंढना शुरू कर दिया, और किस्मत मुझे यहां ले आई। इन्हें अपने स्टाफ में एक नए आदमी की जरूरत थी, जो बढ़िया इंग्लिश बोलता हो, और किस्मत से मुझे इंटरव्यु देने का मौका मिल गया। और मेरे लिए इस जॉब का मिलना बहुत बड़ी नेमत थी।' वह खुशी से मुस्कुराया। 'तीन सालों में ही मैं मैनेजर बन गया। तब से मेरी फैमिली भी ठीक से चल रही है और इसके लिए मैं हर दिन भगवान को थैंक्स कहना नहीं भूलता।'

मैं कभी नहीं जानती थी कि कबीर इतने मुश्किल समय से गुजरा था। वह बाहर से बहुत मिलनसार दिखाई देता है और मैंने कभी अंदाजा भी नहीं लगाया कि उसके दिल में इतना दुख छिपाथा। मैं चिल्लाना चाहती थी 'कबीर, बंद करो!' क्योंकि मेरी आंखें पहले ही आंसुओं से भर चुकी थीं। खुद को बोलने से रोकने के लिए मैं अपने होंठ काटने लगी।

'इसमें तुम्हारी मेहनत और समर्पण की भी भूमिका है,' विवान ने कहा।

'मैं कभी नहीं जानती थी कि तुम ऐसे मुश्किल समय से गुजरे थे। तुमने कभी मुझे यह सब नहीं बताया। तुम हमेशा खुश और मुस्कुराते रहते थे,' मैंने कह ही दिया।

कबीर ने आह भरके कंधे उचकाए। 'तुमने कभी पूछा ही नहीं, मीरा,' उसने कहा।

'इस सबमें निशा की कहानी क्या है?' विवान ने हमारी बातचीत को वापस कबीर की लव स्टोरी की तरफ मोड़ते हुए कहा।

कबीर के चेहरे पर अनजाने से भाव थे, जब उसने आगे की कहानी के बारे में सोचना शुरू किया।

• • •

'यहां काम करने के कुछ महीने बाद, मैंने एक लड़की को कैफे के एक कोने में रोते हुए देखा। इससे मुझे बहुत दुख हुआ कि इतनी प्यारी लड़की मुस्कुराने की बजाय रो क्यों रही है। मैंने उसके लिए बढ़िया सी कोल्ड कॉफी बनाई और उसमें आइसक्रीम डालकर उसकी टेबल पर रख आया। उसने हैरानी से ऊपर देखा, और तुरंत अपने आंसू पोंछ लिए। उसने कहा, 'मैंने तो कुछ भी ऑर्डर नहीं किया।'

मैंने मुस्कुराकर सिर हिलाया। 'जानता हूं, लेकिन मैंने सोचा कि इससे तुम्हें कुछ बेहतर महसूस होगा।'

मैं बता सकता हूं कि मुझे थैंक्स कहने के लिए वो बहुत कोशिशों के बाद मुस्कुरा पाई थी। उसके बाद वह और भी कई बार आई। वह हमेशा अकेली आती, परेशान और उदास। हर दिन, मैं उसे बेहतर महसूस करवाने के लिए अपनी तरफ से अलग-अलग कॉफी ट्राई करता, हालांकि उसने कभी भी कुछ ऑर्डर नहीं किया था। मैंने कभी उसे बिल नहीं दिया। हर दिन उसका बिल, मेरी सैलेरी से कट जाता। तब मुझे अहसास हुआ कि प्यार में आप

दीवानों वाली हरकतें करने लग जाते हैं।

एक दिन, मैंने आखिरकार हिम्मत करके उसके उदासी का कारण पूछ ही लिया। 'क्या मैं पूछ सकता हूं कि तुम्हारे साथ ऐसा क्या हुआ?'

वह मेरी दखल से कुछ हैरान दिखी। 'यह तुम्हारा काम नहीं है,' उसने गुस्से से कहा। वह तुरंत खड़ी हो गई, अपनी कुर्सी पीछे फेंकते हुए। फिर, वह चली गई। उसके बाद उसने कैफे में आना बंद कर दिया।

• • •

'वह इतना खराब बर्ताव कैसे कर सकती थी? वह ऐसे ही कैसे चली गई?' विवान नाराज था।

'देखो तो यह बात कौन कह रहा है,' मैंने उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा। वह तुरंत समझ गया कि मेरे कहने का क्या मतलब था।

'क्या वह दोबारा वापस आई?' मैंने पूछा।

'हां, वह आई। मेरी कोल्ड कॉफी उसे यहां खींच लाई,' कबीर मुस्कुरा रहा था।

8

कैफे कबीर

जिंदगी का खट्टा-मीठा समय याद करते हुए कबीर की आंखें चमक रही थीं। मैंने पानी का गिलास उसकी तरफ बढ़ाया, जो वेट्रेस टेबल पर रख गई थी। उसने एक घूंट लिया और आगे की कहानी बताने से पहले कुछ याद करने लगा।

'क्या मुझे कोल्ड कॉफी विद आइसक्रीम मिल सकती है?' एक मीठी आवाज ने मुझसे पूछा, जब मैं कैफे रजिस्टर में एंट्री करने में बिजी था।

जब मैंने नजर उठाकर देखा, तो सामने वही लड़की खड़ी थी, जिसका मैं पिछले एक महीने से इंतजार कर रहा था। उस दिन उसकी आंखों में आंसू नहीं थे। उसने बहुत सुंदर कॉरल ड्रैस पहन रखी थी। वह बेहद आकर्षक दिखाई दे रही थी।

'जी। जरूर मैडम,' मैंने घबराहट से कहा।

'निशा,' वह मुस्कुराई।

'कबीर,' मैं भी मुस्कुराया।

मैंने उसके लिए कॉफी बनाई, जबकि वह एक खाली टेबल पर जाकर बैठ गई। वह चेयर पर बैठकर मुझे देखने लगी। ऐसा लग रहा था, जैसे उसने मुझ पर कुछ जादू कर दिया था-- मैं समझ नहीं पा रहा था कि इस तरह एक महीने बाद आकर वह मुझे नर्वस क्यों कर रही थी।

'थैंक यू,' उसने कहा, जब मैंने उसकी टेबल पर कॉफी रखी।

'यू आर मोस्ट वेल्कम,' मैंने कहा।

उसने लंबा घूंट भरा और मुस्कुराई। उसे खुश देखकर मुझे अच्छा लगा, और मैं अपने काम की तरफ बढ़ने लगा, तभी मुझे उसकी आवाज सुनाई दी। 'आई एम सॉरी,' उसने मासूमियत से कहा। मैं उसकी तरफ मुड़ा। 'क्यों?' मैंने पूछा।

'उस दिन के लिए,' उसने कहते हुए, मुझे अपने पास बैठने का इशारा किया। कैफे में थोड़े ही लोग थे, तो मेरे पास कुछ समय था।

मैंने बैठकर उसकी माफी के लिए सिर हिलाया। 'मुझे उन दिनों के लिए आपका

शुक्रगुजार होना चाहिए,' मैंने कहा।

उसने टेबल पर अपने हाथ रखे और मेरी तरफ झुक आई। 'मैं आपको बताती हूं,' उसने जोर दिया। 'मेरे बॉयफ्रेंड ने मुझे छोड़ दिया था और मैं उन दिनों बहुत डिप्रेस थी। मैं उन कॉफी के लिए आपसे थैंक्स कहना चाहती हूं। उनसे मुझे सच में बहुत अच्छा महसूस हुआ।'

'तुम्हारा शुक्रिया,' मैंने नरमाई से कहा, हालांकि मेरे अंदर कुछ टूटता हुआ महसूस हो रहा था। 'मुझे खुशी है अगर मैं आपकी कुछ मदद कर पाया।'

'आपने मदद की,' उसने जवाब दिया। 'बहुत ज्यादा।'

'उसने आपके साथ ब्रेकअप क्यों किया?' मैंने पूछा। इतना निजी सवाल पूछना शायद गलत था, लेकिन मैं हैरान था कि कोई इतनी प्यारी लड़की को कैसे छोड़ सकता था। वह इतनी खूबसूरत थी, जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। उसका चेहरा परी जैसा था, और बाल तो मानो रेशमी अंधेरे। उसकी बड़ी आंखें तो मुझे अपनी आत्मा तक उतरती लगती थीं। भरे-भरे होंठ, बिलकुल चीनी मिट्टी की मूरत जैसे।

निशा ने आगे बताना शुरू किया। 'हम एक ही कॉलेज में पढ़ते थे, और जल्द ही दोस्त बन गए। उसने छह महीनों में ही मुझे प्रपोज भी कर दिया। मैंने प्रपोजल स्वीकार कर लिया। मैं जानती थी कि वह मुझे बहुत प्यार करता था। वह मेरे लिए बहुत सारे उपहार लाता, और मेरी बहुत परवाह किया करता। कुछ ही समय बाद हम अपने रिलेशन को अगले लेवल पर ले गए। हम दोनों बहुत करीब आ गए, और अक्सर आपसी संबंध बनाने लगे। और फिर, वो बदकिस्मत दिन आया। मुझे पता चला कि मैं प्रेग्नंट थी। वह बहुत डर गया, और उसने मुझे अबॉर्शन करवाने को कहा। मैंने मना कर दिया और उससे तुरंत शादी करने को कहा। आखिरकार, वह मुझे प्यार करता था न?'

आंसू उसकी आंखों में चमक आए। 'उसने कहा कि उसे सोचने के लिए कुछ समय चाहिए, और वह मुझे बाद में फोन करेगा। उसने कभी पलटकर फोन नहीं किया और मेरे फोन और मैसेज का जवाब देना भी बंद कर दिया। मैं पूरी तरह टूट गई।' वह अब और अपने आंसू नहीं रोक सकी और फूट-फूटकर रोने लगी।

'प्लीज रोओ मत,' मैंने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा।

'आई एम सॉरी,' उसने खुद को संभालते हुए कहा।

मैंने डरते-डरते पूछा, 'क्या तुमने अबॉर्शन करवा दिया?'

'हां। मुझे करवाना ही पड़ा। उस दिन जब तुमने मुझसे मेरी परेशानी पूछी थी, उसी सुबह मैं अबॉर्शन करवा के आई थी और मैं बहुत डिप्रेस थी।' उसकी आवाज दृढ़ थी, मैं जानता था कि वह मजबूत दिखने की कोशिश कर रही थी।

'मुझे बहुत अफसोस हुआ,' मैंने आंसू भरी आंखों से कहा।

'इट्स ओके। मैं अब ठीक हूं। थैंक्स टू यू।'

यह सुनकर मैं हैरान था। 'मुझे थैंक्स क्यों?'

'तुम नहीं। दरअसल, तुम्हारी कॉफी,' वह हंस पड़ी। 'हर दिन मैं यहां अकेले बैठकर सोचने के लिए आती कि मुझे आगे क्या करना चाहिए। मैं बिलकुल सुसाइड की दहलीज पर खड़ी थी। मेरी सारी उम्मीदें खो चुकी थीं। मेरा प्यार, जीवन या अच्छाई से भरोसा उठ चुका था। लेकिन जब तुम मेरे बिना मांगे रोज मुझे इतनी बढ़िया कॉफी देने लगे, तो मुझे

एक नया जीवन सा मिला। तुमने मुझे दिखाया कि और भी रास्ते हैं। कोई है जो मेरी इतनी परवाह कर रहा था, वो भी मुझे जाने बिना। मैं जानती थी कि दुनिया में बुरे लोग थे, लेकिन अब मैं जान गई थी कि यहां तुम्हारे जैसे अच्छे लोग भी हैं। इस सबके लिए शुक्रिया। अगर मैं जिंदगी में आगे बढ़ने की सोच पाई हूं, तो उसका कारण सिर्फ तुम ही हो,' निशा ने मुस्कुराते हुए समझाया।

'मुझे खुशी है कि मैं तुम्हारे लिए कुछ कर पाया,' मैंने प्यार से कहा। 'मैं नहीं जानता था कि इतने छोटे कामों से भी लोगों के जीवन में इतना बड़ा फर्क लाया जा सकता है। लेकिन काश उस दिन तुमने मुझसे बात कर ली होती,' मैंने कहा।

'तुम उसमें क्या कर लेते?' उसने हैरानी से पूछा।

'मैं कर सकता था...' मैं हकलाया।

'क्या?'

'मैं तुम्हारे बच्चे को बचा सकता था।'

वह कुर्सी पर सीधी बैठ गई।

'तुम्हारा क्या मतलब है? कैसे?' निशा ने पूछा।

'मैं तुमसे शादी कर लेता,' मैंने उसका हाथ पकड़कर कहा।

उसने अपना हाथ मेरे हाथ से खींच लिया। 'तुम क्या कह रहे हो?' उसने गुस्से से पूछा। 'क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? तुम ऐसा क्यों करते? कोई भी ऐसा क्यों करेगा?' निशा बहुत नाराज थी।

'क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूं, निशा। और प्यार तुमसे सब कुछ करवा देता है। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?' मैंने कहकर अपनी आंखें बंद कर लीं।

• • •

'कबीर! तुमने उससे सच में पूछ लिया?' विवान ने अविश्वास से पूछा।

वह सिर हिलाकर मुस्कुराया। 'हां, मैंने पूछा,' कबीर ने शांति से कहा।

मैंने अपने आंसू पोंछे, उत्सुकता ने उदासी को दूर कर दिया था। 'क्या तुम सच में ऐसा करना चाहते थे? या यह जज्बाती ख्याल था?'

'क्या उसने हां कहा?' मैंने और विवान ने लगभग एक साथ पूछ लिया।

उसकी आंखों में चमक थी। 'हां, उसने हां कहा,' कबीर मुस्कुरा रहा था।

मैं बहुत रोमांचित थी, मैं अपनी चेयर पर ही मानो उछल रही थी। 'तो तुम लोग शादी कब कर रहे हो?'

'नहीं पता,' उसने कहा। उसकी आवाज में फिर से निराशा थी। 'एक प्रॉब्लम है।'

मैं गुर्राई। 'इस सबके बाद अब और क्या प्रॉब्लम हो सकती है?' मैं हैरान थी।

विवान और मैंने एक-दूसरे को देखा और उसने कंधे झटके।

'बताओ हमें,' विवान ने जानना चाहा। 'क्या प्रॉब्लम है?'

'वह अमीर परिवार से है और मैं नहीं,' कबीर ने जवाब दिया।

मैं गुस्से में थी। 'अब ये मत कहना कि उसके मां-बाप ने उसे तुमसे शादी करने से मना कर दिया।'

'नहीं, ऐसा नहीं है। वो तो शादी के लिए तैयार थे, और दरअसल वो तो इस बात से

बहुत खुश भी थे।'

'तो फिर क्या समस्या है?' मैंने पूछा।

कबीर ने आह भरी। 'मैं उसे बहुत खुश रखना चाहता हूं; उसे एक सुरक्षित भविष्य देना चाहता हूं। मैं जानता हूं कि पैसे से खुशियां नहीं खरीदी जा सकतीं, लेकिन सच यह है कि पैसा जरूरत तो होता ही है। मैं नहीं चाहता कि मेरे बच्चे भी वैसे ही बड़े हों, जैसे मैं बड़ा हुआ था। मैं उससे शादी से पहले अच्छे पैसे कमाना चाहता हूं।'

विवान ने उसकी बात समझकर सिर हिलाया। 'लेकिन यह अच्छी जॉब है,' उसने कहा।

'यह एक सिंगल इंसान के लिए अच्छी जॉब है,' कबीर ने समझाया। 'लेकिन एक परिवार का खर्च मेरी कमाई से नहीं चलाया जा सकता। निशा को आरामदायक जिंदगी की आदत है। और, उससे भी बढ़कर मैं अपने बच्चों को बेस्ट एजुकेशन और बेहतर लाइफ स्टाइल देना चाहता हूं, जो इसमें संभव नहीं है।'

'ये तो सच है,' मैंने हामी भरी।

'प्यार में बहुत ताकत होती है,' कबीर ने आगे कहा। 'यह आपसे वो काम करवा देता है, जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होती है।'

विवान कुछ सोच रहा था। 'और पैसे कमाने की तुम्हारी क्या योजना है?' उसने खुलकर पूछा।

'मैं अपना कैफे शुरू करना चाहता हूं,' कबीर ने जवाब दिया। 'यह हमेशा से मेरा सपना रहा है, और अब तो यह और भी ज्यादा जरूरी हो गया है।'

'तुम उसमें बहुत कामयाब भी रहोगे,' मैंने चहकते हुए कहा। 'तुम यहां भी तो कितना कमाल का काम करते हो, जैसे यह तुम्हारी खुद की जगह हो, मैं शर्त लगाती हूं कि तुम यकीनन इससे बेहतर पर्फोमेंस दे पाओगे।'

'थैंक यू,' उसने विनम्रता से कहा। 'लेकिन यह इतना आसान नहीं है कि उठो और दरवाजा खोल लो। मुझे इसके लिए बहुत सारे पैसों और काम के लिए लोगों की जरूरत पड़ेगी। जितना ज्यादा मैं हिसाब लगाता हूं, उतना ही डर जाता हूं कि ऐसा तो कभी नहीं हो पाएगा। और फिर मेरी निशा से शादी कैसे होगी। अभी मैं जितना हो सके, उतना बचाने की कोशिश करता हूं,' कबीर ने समझाया।

'इसमें कितना पैसा लगेगा?' विवान ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा।

मैं एक बार फिर से रोना चाहती थी। कबीर से ऐसे सवाल पूछना कठोरता थी, वो भी तब जब हमें उसकी आर्थिक हालत पता चल गई थी।

कबीर ने अपने हाथ उठाते हुए कहा। 'लगभग पंद्रह से बीस लाख।'

विवान ने अपना लैपटॉप बैग उठाया और चैकबुक निकाली। कबीर और मैंने एक-दूसरे को सवालिया नजरों से देखा। वह क्या करने वाला था? 'ये पांच लाख का चैक है।' विवान की आवाज में दृढ़ता थी। 'इससे शुरू करो। बाकी का जल्द ही तुम्हारे अकाउंट में जमा हो जाएगा,' वह मुस्कुराया।

मैं सकते में थी, मेरे पास बोलने के लिए शब्द नहीं थे।

कबीर ने अविश्वास से चैक देखा और धीरे से सिर हिलाया। 'लेकिन विवान, मैं इसे नहीं ले सकता। तुम तो मुझे जानते भी नहीं हो!' वह चैक को वापस विवान को देने की कोशिश

करते हुए चिल्लाया। मैंने देखा कि कई सिर हमारी तरफ घूम गए थे।

'क्या मैं सच में अब भी तुम्हें नहीं जानता हूं, मिस्टर आशिक?' विवान ने धीमी आवाज में कहा, जिससे कैफे में कोई और हमारी बात नहीं सुन पाए। वह मुस्कुराया और आगे बोला। 'और हां, यह कोई अहसान नहीं है; यह बिजनेस डील है। हम इसमें पार्टनर रहेंगे। मैं बिजनेस में इन्वेस्ट करूंगा और तुम कैफे चलाना। क्या हम डील कर सकते हैं?'

हालांकि कबीर को जवाब देने में समय नहीं लगा, फिर भी मैं उसके हाव-भाव से बता सकती हूं कि उसका दिमाग एक ही साथ कई दिशाओं में भाग रहा था। 'थैंक यू सो मच।' कबीर बहुत भावुक हो गया था।

एक पल हम सब ही खामोश हो गए।

'तो तुमने अपने कैफे का कोई नाम सोचा क्या?' मैंने पूछा।

'मैंने खुद को कभी इतना आगे के बारे में सोचने ही नहीं दिया,' उसने कहा। 'क्या तुम्हारे पास कोई सुझाव है?'

'कैफे कबीर,' मैंने मुस्कुराते हुए सुझाया।

कबीर ने हां में सिर हिलाते हुए आगे बढ़कर हमारे हाथ पकड़ लिए। 'हम इसे साथ में शुरू करेंगे,' उसने दृढ़ता से कहा।

• • •

आज का दिन भी क्या दिन था, मैंने अपनी फेवरेट नाइट शर्ट निकालते हुए सोचा और बिस्तर में घुस गई। मेरे दिमाग में पहले से घुसी हुई पुणे की आवाजों ने अब तक धीरे-धीरे बहना शुरू कर दिया था।

हमारी कहानी में आया ये अचानक बदलाव मेरे मन में बहुत सारे सवाल ले आया था। मैं सोच रही थी कि क्या हम सच में कैफे कबीर शुरू कर पाएंगे, लेकिन साथ ही मैं बहुत सी दूसरी बातों के बारे में भी सोच रही थी।

हम सभी के जिंदगी में बड़े लक्ष्य होते हैं, हम जानते हैं कि हम क्या हासिल करना चाहते हैं, लेकिन जब बदलाव का वह पल आता है, तो क्या हम वास्तव तैयार होते हैं? कबीर बदलाव से डर रहा था, और यह साफ दिखाई दे रहा था। वह अपने सपनों को सच करना चाहता था, लेकिन वह निश्चित नहीं था। विवान दुनिया घूमना चाहता था। मैं कल्पना नहीं कर पा रही थी कि मैं उसके बिना कैफे में बैठकर अपनी कॉफी पी रही होंगी। विवान के बिना मेरी आसपास की दुनिया ही मेरे लिए अजनबी हो जाती।

हालांकि मेरे अपने सपने थे, लेखक बनने के, ऐसा लग रहा था जैसे सब सच हो गया था। जब दूसरे लोग अपने जीवन में आगे बढ़ जाएंगे, तब मैं और लोगों के साथ कैसे फिट हो पाऊंगी? क्या वे मुझे भूल जाएंगे... या अपना नॉवल लॉन्च करने में मैं ही इतनी व्यस्त हो जाऊंगी कि मुझे उनकी याद तक नहीं आएगी?

मेरे विचारों में दखल फोन की बीप से पड़ी। मैंने करवट लेकर फोन उठाया, और मैसेज देखकर मेरे चेहरे पर खुद ही मुस्कान आ गई।

यकीनन वह विवान का मैसेज था। 'क्या तुम्हें अपनी स्टोरी मिली?'

'हां। मिली,' मैंने तुरंत जवाब दिया।

मैं फोन लेकर लेट गई और उसके जवाब का इंतजार करने लगी। 'तुम्हारी कहानी का

नाम क्या है?' उसने पूछा।

'हर किसी की होती है... कहानी!' मैंने जवाब दिया।

9

दो पैकेट

एक थकान भरे दिन के बाद मैं विवान के साथ कॉफी पीने के लिए कैफे पहूंची। मैंने उसे पहले ही मैसेज करके बता दिया था कि मुझे आने में लेट हो जाएगी; काम में कुछ प्रॉब्लम थी, जिसे सुलझाकर ही मैं निकल सकती थी।

विवान काउंटर पर मेरा इंतजार कर रहा था। अंदर जाते हुए वह मुझे खिड़की से ही दिख गया। उसने ब्लैक बिजनेस सूट पहन रखा था, जिस पर बहुत सुंदर नीली टाई लगाई हुई थी।

मैं माफी मांगते हुए आगे बढ़ी। 'सॉरी, सॉरी, मुझे देर हो गई।'

'कोई बात नहीं। तुम्हारा दिन कैसा रहा?' विवान ने मुस्कुराते हुए कहा।

मैं कराही। 'आज मैं बुरी तरह से थक गई हूं, बहुत टैंशन थी,' उसके सामने कुर्सी पर पसरते हुए मैंने कहा।

उसने सहानुभूति से मेरी ओर देखते हुए, मेरी बांह थपथपाई। 'वैल... मैं तुम्हारे बारे में ही सोच रहा था,' उसने कहा।

मैं खिलखिलाई। 'सच में?'

उसने हां में सिर हिलाया। 'मैं तुम्हारे लिए दो चीजें लाया हूं। मैं तुम्हें सरप्राइज देना चाहता था। इससे तुम्हारा खराब दिन तो नहीं बन पाएगा, लेकिन तुम्हें कुछ बेहतर जरूर महसूस होगा,' विवान ने आशा भरी आवाज में कहा।

शर्माते हुए, मैं खुलकर मुस्कुरा दी। 'तुम सच में मुझे सरप्राइज दे रहे हो?' मैंने पूछा।

'हां, बिलकुल। मैं चाहता था कि किसी तरह तुम्हारे चेहरे पर मुस्कान वापस आ जाए,' विवान ने मुझे फूलों का बुके और दो ब्राउन पेपर में लिपटे गिफ्ट देते हुए कहा। उन पर सुंदर सा रिबन बंधा हुआ था।

मैंने फूल लिए और तुरंत उनकी पंखुड़ियों को सूंघने लगी, गहरी सांस लेते हुए। 'मेरी मुस्कान के लिए तो ये फूल ही बहुत ही थे,' मैंने इशारा किया।

'नहीं, फूल तो बस यहां आते हुए मुझे दिखाई दिए और मैं ले आया। असली सरप्राइज तो इन पैकेट में बंद है। फूल जल्दी ही मुरझा जाएंगे, लेकिन इन पैकेट में रखी चीज हमेशा

तुम्हारे साथ रहेगी।'

मेरी उत्सुकता बढ़ गई; मैंने तुरंत फूल नीचे रखकर पहला पैकेट उठा लिया। उसे खोलने पर मुझे उसमें से एक ऑटोग्राफ हुई किताब मिली।

'यह उस लेखक की किताब है, जिससे हुई बातचीत के दौरान हम पहली बार कैफे में मिले थे। पता नहीं जिंदगी हमें आगे कहां ले जाएगी, लेकिन मैंने तय किया कि इन पलों को हम बहुत अच्छी तरह बिताएंगे। यह हमारी दोस्ती का शुरुआती पॉइंट था।'

खुशी के आंसू मेरी आंखों में छलछला आए, क्योंकि उस रात मैं भी यही सब सोच रही थी। 'ओह गॉड, मेरे पास बोलने लिए शब्द नहीं हैं,' मैंने कहते हुए किताब खोलकर देखी कि लेखक ने उसमें क्या लिखा था।

मेरे लेखक साथी,

आशा है मैं लेखक बनने के आपके सफर को प्रेरित कर पाने में सफल रहूंगा। आपके दोस्त ने मुझे आपके बारे में बहुत कुछ बताया है और मैं उस दिन का इंतजार कर रहा हूं, जब मैं कैफे में आपके लिखे शब्द सुनूंगा, जैसे आप मेरे सुनते हैं।

याद रखो महान लेखक सिर्फ अपने ही दिल की बात नहीं लिखते, बल्कि अपने पाठक के दिल की बात भी कह जाते हैं।

बेस्ट ऑफ लक

अर्जुन मेहरा।

मैंने बांहें खोलकर विवान को गले लगा लिया, बहुत प्यार से। 'वाओ, विवान! तुमने सच में ये किया! मुझे तो समझ नहीं आ रहा कि क्या कहूं। मुझे बहुत बहुत अच्छा लगा। मैं बहुत खुश हूं,' मैंने उसके गले लगे हुए ही कहा।

'अरे नहीं,' उसने मुझे वापस मेरी चेयर पर बैठाते हुए कहा। 'तुम अभी यह नहीं कह सकतीं। कुछ भी और कहने से पहले तुम्हें दूसरा पैकेट खोलना पड़ेगा।' विवान ने दूसरे पैकेट की तरफ इशारा किया, जो अभी तक पैक ही पड़ा था।

मैंने शांति से दूसरा पैकेट खोला, उसमें एक मोटी, मजबूत किताब थी, जिस पर कपड़े का कवर चढ़ा हुआ था। उस पर मेरा नाम छपा था। कन्फ्यूज होकर मैंने किताब खोली।

'यह किताब इस बात का इशारा है कि एक दिन तुम अपना नॉवल खत्म करके लेखक बन जाओगी, जो कि तुम बनना चाहती हो। मैंने तुम्हें कोरी किताब दी है; और अब तुम्हें इसका हर पन्ना अपनी कहानी से भरना है।'

मैंने किताब को सीने से लगा लिया, उतना ही कसकर जितना विवान को गले लगाया था। 'अगर मैं इसमें सिर्फ अपना नाम भी लिख पाई, तो भी मैं सबसे पहले तुमसे ही उसे पढ़वाना चाहूंगी,' मैंने कहा। 'लेकिन, इतने अच्छे उपहार आखिर किस अवसर के लिए दिए जा रहे हैं?' मैंने पूछा।

उसने मुस्कुराकर सिर हिला दिया। 'कुछ नहीं। क्या जिंदगी का उत्सव मनाने के लिए कुछ खास मौका होना चाहिए?'

मैंने उसे फिर से गले लगा लिया। 'इतने शानदार, बेशकीमती उपहार लाने के लिए तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया!' आंखों में खुशी के आंसू लिए में इतना ही कह पाई।

यह यकीन कर पाना मुश्किल था कि अभी कुछ समय पहले ही हम एक-दूसरे से अजनबी थे। वह अभी भी एक रहस्य ही था और मैं बस यहां लेखकों की मीटिंग के लिए आने वाली इंसान। हम अपनी रोजमर्रा की बातें करते। जिंदगी और संबंधों पर अपने विचार साझा करते।

हर दिन के साथ हमारी दोस्ती और गहरी होती जा रही थी। मैं उस समय की कल्पना भी नहीं कर पाती थी, जब विवान कैफे में कॉफी पीता हुआ मेरा इंतजार नहीं कर रहा होगा। उसके साथ हर विषय पर बात किए बिना मेरा दिन नही पूरा नहीं होता था।

मैं अपनी कहानी उसे ही समर्पित करना चाहती थी। यह समर्पण लिखने के लिए उसका गिफ्ट ही बढ़िया जगह थी।

• • •

विवान

10

सैंडल्स

हर दिन मिलने के साथ, हम एक-दूसरे के और करीब आते जा रहे थे। मैं हर समय मीरा के बारे में सोचता रहता था। काम पर भी उसके मुलायम बाल मेरे गालों को सहलाते हुए महसूस होते, और मुझे याद आता कि उस दिन कैफे में मेरे गले में बांहें डालते वक्त वह कितनी गर्म लग रही थी। किसी फूल के खुशबू उसकी खुशबू से ज्यादा हसीन नहीं थी; कोई सूर्यास्त इतना मनोरम नहीं हो सकता था, जितने हसीन रंग उसकी आंखों के थे।

सच कहूं तो मीरा का दिल जितना खुला था, उतना ही मैंने खुद को छिपा रखा था। मैं और खुलना चाहता था, लेकिन हर बार जब मैं वो फैसला लेने के करीब आता, मैं उन सागरों के बारे में सोचने लगता, जिन्हें पार करना मेरा सपना था। और मुझे वो कारण याद आ जाता जिसकी वजह से मैं सबसे भाग जाना चाहता था। आजादी मुझे उतना ही ललचाती थी, जितनी कैफे की वो प्यारी लड़की।

एक शाम हम कैफे में मिले। इस बार मीरा मुझसे पहले कैफे में पहुंच गई थी और जैसे ही उसने पलटकर मुझे देखा उसके गालों के वो गहरे डिंपल जवां हो गए।

'हाय, पार्टनर,' कबीर ने आगे आते हुए हाथ हिलाकर कहा। अब तक कैफे वाले उसकी योजना के बारे में जान चुके थे, तो यह कोई सीक्रेट नहीं था कि वह अपना कैफे खोलने वाला था।

'हैलो, कबीर,' मैंने भी अभिवादन किया। 'मीरा। तो तुम दोनों का आज का दिन कैसा रहा?'

जैसे ही उन्होंने जवाब दिया, अचानक से कई ग्राहकों के ऑर्डर आने लगे। कबीर मुड़कर मेरे लिए कॉफी बनाने लगा, लेकिन मैंने उसे रोक दिया।

'फिर किसी दिन, दोस्त,' मैंने कहा। मुझे मीरा की आंखों में हैरानी साफ दिखाई दे रही थी कि मैं आज क्यों मना कर रहा था।

मैंने काउंटर पर मीरा के कैपेचिनो के पैसे रखे और अपना हाथ उसके हाथ के लिए बढ़ा दिया।

'क्या हम कहीं जा रहे हैं?' उसने पूछा। 'मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा।'

'पांच दिनों से लगातार बारीश हो रही थी, और आज कहीं जाकर थमी है,' मैंने खिड़की की तरफ इशारा करते हुए कहा। 'चलो घूमने चलते हैं।'

मुस्कुराती हुई मीरा खड़ी हो गई और अपना कोट और बैग उठाने लगी। 'बहुत बढ़िया आइडिया है,' उसने कहा, उसकी आवाज में उत्साह था।

'पार्क पास में ही है,' कबीर ने मदद के अंदाज में कहा। 'बेंच तो शायद गीले होंगे, लेकिन घूमने के लिए सही मौसम होगा।'

मैंने मीरा को देखा। 'तुम्हें क्या लगता है?' उसने हां में सिर हिला दिया।

कबीर ने तुरंत मीरा की बची हुई कैपेचीनो एक पेपर कप में डालकर, उस पर ढक्कन लगा दिया। उसने मुझे भी पेपर कप में मेरी कॉफी दी। 'मजे करो, बच्चों,' शरारती आंखों से उसने कहा।

हम बाहर की ताजी, साफ हवा में आ गए। हवा थोड़ी गर्म, और कुछ चिपचिपी थी। मीरा ने अपने लंबे बालों की पोनीटेल बना ली और मैंने उसके चेहरों के पास उड़ती लटों को देखा।

हमने एक मोड़ से पार्क की ओर चलना शुरू कर दिया, सावधानी से जल्दी चलने वालों को रास्ता देते हुए, हम ज्यादा से ज्यादा समय लेना चाहते थे।

'और तुम्हारा दिन कैसा रहा,' मैंने अपनी उंगलियां उसकी उंगलियों से गूंथते हुए कहा। वह मेरे ऐसा करने पर कुछ हैरान थी, लेकिन बोली कुछ नहीं।

'उतना बुरा नहीं,' उसने कहा। 'मेरे बॉस छुट्टियों पर गए हैं, हालांकि मेरे पास काम ज्यादा है, लेकिन उनके ऑफिस में न होने पर मैं शांति से अपना काम कर पाती हूं।'

मैं खिलखिलाया। 'क्या वह तुम्हारे लिए मुश्किलें खड़ी करता है?' मैंने पूछा।

मीरा ने अपने कंधे उचकाए। 'मुझे नहीं लगता कि वह जान-बूझकर ऐसा करता है,' उसने कहा। 'लेकिन वह ऐसा इंसान है, जो हर चीज को इमरजेंसी की तरह देखता है। यहां तक कि आसान काम को भी मुश्किल बना देता है।'

'मैंने भी ऐसे लोगों के साथ काम किया है,' मैंने जवाब दिया। 'हर बात में प्रॉब्लम ढूंढने से काम लंबा ही खिंचता जाता है।'

'कल्पना करो कि वो लोग अंदर से कितना परेशान रहते होंगे,' उसने कहा। 'उन्हें जरूर तनाव से अल्सर ही हो जाता होगा। जिंदगी इतनी भी बड़ी नहीं है कि हर बात के लिए परेशान हुआ जाए!'

हम खामोशी से चलते हुए, आखिर पार्क के पास आ ही गए। हमने सड़क पार करने से पहले बत्ती के लाल होने का इंतजार किया, और फिर तेजी से उस बिजी रोड को पार कर लिया।

पार्क के किनारे पर अचानक से मीरा रुक गई। 'क्या हुआ?' मैंने पूछा।

उसने नीचे अपने पैरों को देखा, और सफाई में हाई हील की एक सैंडल उतारकर दिखाई। 'दरअसल मैंने वॉक लायक जूते नहीं पहने हैं,' उसने समझाया।

मैंने माथे पर हाथ मारा। 'सॉरी, इस तरफ तो मेरा ध्यान ही नहीं गया।'

उसने मेरी चिंता को खारिज करते हुए अपना सिर हिलाया। 'कोई बात नहीं,' उसने कहा। 'मुझे बस कुछ एडजस्टमेंट करने होंगे।'

एक हाथ से मेरी बांह टाइट पकड़ते हुए, उसने दूसरे हाथ से अपना सैंडल उतारा। 'तुम अपने सैंडल उतार रही हो?' मैं हंसा।

उसने हंसकर सिर हिलाया। 'क्या तुम जरा इसे पकड़ोगे?'

मैंने सैंडल पकड़कर फिर से उसे अपनी बांह पकड़ाई, ताकि वह दूसरा सैंडल भी उतार सके। फिर उसने दोनों सैंडल अपने बैग में रख लिए।

'अब ठीक है?' मैंने खुशी से पूछा।

उसने विश्वास से सिर हिलाया और हमने चलना शुरू कर दिया। मैं खुद को रोक नहीं पा रहा था; वह अब पहले से छोटी नजर आ रही थी, और मेरा मन उसके कंधों पर हाथ रखने का कर रहा था। बदले में, वह भी मेरे पास सरक आई और हम इस तरह करीब आकर चलने लगे।

शाम का मजा लेते हुए हम पार्क में घूम रहे थे, और हमने बचपन की कुछ यादों पर बात भी की। उसे हंसता देखना मेरे लिए सबसे खुशनुमा पल थे; उसकी हंसी की आवाज मेरी आत्मा को संतुष्टि दे रही थी, मैं सोच भी नहीं पा रहा था कि उससे मिले बिना मेरे दिन कैसे बीता करेंगे।

जब हम पार्क से निकलकर, वापस सड़क पर पहुंचे, तो मीरा ने बैग से सैंडल निकालकर उन्हें फिर से पहनने की कोशिश की। जब वह पहला सैंडल पहनने के लिए बैलेंस बनाने की कोशिश कर रही थी, तो वह सीधा मुझ पर गिर गई।

'आई एम सॉरी,' उसने हंसते हुए कहा, जब मैंने उसे थामा। मैंने उसे तब तक मजबूती से पकड़े रखा, जब तक उसने सैंडल को सही तरह से पहन नहीं लिया।

'कोई बात नहीं,' उसे थामे हुए ही मैंने जवाब दिया। मैं उसे जाने देना नहीं चाहता था।

मीरा मुझे हसरत से देख रही थी, जब मैंने आगे बढ़कर उसके चेहरे पर आई लट को अपनी उंगली से हटाया। 'मैं कबसे इस पल का इंतजार कर रहा था,' बड़ी मुश्किल से मैं यह कह पाया।

'सच में?' उसने पूछा, मुझसे नजरें मिलाते हुए।

मैं और कुछ नहीं कह पाया। मैंने हाथ से उसके गाल सहलाये, उसके आकर्षक डिंपल को उंगली से छुआ और फिर झुककर उसे चूम लिया।

• • •

मीरा

11

डर

दो महीनों की कड़ी मेहनत और समर्पण के बाद, हमारे प्यारे दोस्त का सपना अब बस पूरा होने ही वाला था। कैफे कबीर का उद्घाटन बहुत शान से और कबीर-निशा की शादी के ऐलान के साथ संपन्न हुआ।

उस दौरान मैं निशा से मिली और हम जल्द ही एक-दूसरे के करीब आ गए। वह मिलनसार स्वभाव की खूबसूरत लड़की थी; उसे देखकर समझ आया कि कैसे कबीर को उससे इतनी जल्दी प्यार हो गया।

उन खुशनुमा पलों में कबीर, निशा, विवान और मैं एक-दूसरे के बहुत अच्छे दोस्त बन गए। हम हर सप्ताहंत कैफे कबीर में मिलकर अच्छा समय गुजारते। हालांकि कबीर और निशा उस जगह को सफल बनाने के लिए जी जान से मेहनत कर रहे थे, लेकिन वे हमारी दोस्ती के लिए भी समय निकाल ही लिया करते थे। वो समय मेरे लिए बहुत कीमती था, और मैं जानती थी कि बाकी तीन लोग भी यही मानते थे।

'मैं जानती हूं कि मैं तुम्हें उतना नहीं जानती जितना कबीर को, लेकिन ये बात जरूर है कि तुमने उसे पूरी तरह बदल दिया है,' एक शाम मैंने निशा से कहा। 'वह तुमसे बहुत प्यार करता है! कभी-कभी मैं भी सोचती हूं कि मुझे भी कोई ऐसा प्यार करने वाला मिले।' मैं विवान के बारे में सोच रही थी। हम उसी के आने का इंतजार कर रहे थे।

निशा ने मुस्कुराते हुए मेरे हाथ पर हाथ रखा। 'मीरा, स्वीटहार्ट, अपनी आंखें खोलो। मैं भी समझ सकती हूं कि तुम विवान से प्यार करती हो। ये कोई सीक्रेट नहीं है, फिर तुम क्यों यह दिखावा कर रही हो कि तुम सिर्फ अपनी कहानी के लिए उसे चाहती हो। तुम्हारा दिल तुमसे कह रहा है कि उसे अपना साथी मिल गया है, कोई ऐसा जिसे दिल चाहता है,' उसने कहा। 'मैं जानती हूं कि प्यार में पड़ने का ख्याल उतना भी खूबसूरत नहीं होता। लेकिन विवान एक अच्छा इंसान है और मुझे लगता है कि तुम दोनों साथ में बहुत खुश रहोगे।'

मैं जानती थी कि वह सही थी। मेरे दिल में विवान के लिए बहुत प्यार था, लेकिन मैंने कभी उससे कुछ नहीं कहा था, सिवाय कुछ छोटे इशारों के। यहां तक कि पार्क में हुए उस किस के बावजूद भी हम कुछ और नहीं कह पाए थे।

'काश मैं उसे दिल की बात बता पाती,' मैं फुसफुसाई। निशा के सामने यह कहकर बहुत ही अच्छा महसूस हो रहा था, लेकिन उसी समय मेरा खून किसी अनजाने डर से जमने लगा था।

'तो तुम अपना हाल उसे बता क्यों नहीं देतीं? ये तो साफ है कि तुम्हें उससे सच्चा प्यार हो गया है!' मेरी फेवरेट कॉफी लाते हुए कबीर ने कहा।

मैंने कंधे उचकाए। 'लेकिन, कबीर, अगर वो मेरे बारे में ऐसा नहीं सोचता होगा तो? मुझे डर है कि वह मुझे ठुकरा देगा,' कहते हुए मेरा चेहरा लाल हो गया। अपने दोस्त से ऐसी बात कह पाना आसान नहीं था। लेकिन फिर भी उसने मुझे और विवान को निशा के बारे में बताया था, और सब कुछ अच्छा ही रहा था।

'मीरा, अगर तुम उसे प्यार करती हो, तो उसे बता दो,' कबीर ने ज़ोर दिया। 'अगर तुम उसे बताने की कोशिश नहीं करोगी, तो वो कभी नहीं जान पाएगा कि तुम्हारे दिल में क्या है। तुम भी कभी नहीं चाहोगी कि वह यूं ही तुम्हारे जीवन से चला जाए, क्या तुम चाहोगी?'

'नहीं, कबीर, मैं तो ऐसा सोच भी नहीं सकती,' मैंने तुरंत जवाब दिया, विवान दरवाजे से अंदर आता दिखाई दे रहा था।

• • •

मेरी कहानी ऐसे मोड़ों से गुजरी थी, जिसका कि मैं बस सपना ही देख सकती थी। विवान से मेरी पहली मुलाकात के बाद काफी कुछ बदल गया था। कबीर की कहानी ने भी मुझे बहुत बदल दिया था। मैं भी अपने लिए ऐसा ही रिश्ता तलाश रही थी, जैसा उसका और निशा का था। मुझे कोई ऐसा चाहिए था, जिसके साथ मैं अपनी जिंदगी और खुशियां साझा कर सकूं।

मुझे हिम्मत जुटाकर विवान को बताना ही होगा कि मैं उसके लिए क्या महसूस कर रही थी। दिल की बात बताने के ख्याल से ही मेरे हाथ कांपने लगे। अगर वह मुझ पर हंस दिया तो क्या होगा? नहीं, वह ऐसा कभी नहीं करेगा। लेकिन अगर वह मेरे बारे में वैसा महसूस नहीं करता होगा तो? मैं निश्चित नहीं थी कि मैं कभी उससे कह भी पाऊंगी कि मैं उसे कितना प्यार करती थी।

लेकिन मैं यह भी जानती थी कि मुझमें अब अपनी भावनाओं को और दबाए रखने की हिम्मत नहीं थी।

आधी रात हो चुकी थी, जब मैंने अपना फोन उठाकर विवान को मैसेज किया। 'मैं सो नहीं पा रही। क्या तुम भी जाग रहे हो?'

कुछ पलों बाद विवान ने मुझे एक कविता लिखकर भेजी।

'लोगों से नहीं, उनके दिमाग से,
तूफान से नहीं, खामोशी से,
जवाबों से नहीं, सवालों से,
परिणाम से नहीं, कारण से,
डर लगता है।

सचाई से नहीं, सपनों से,
पलों से नहीं, यादों से,

झूठ से नहीं, सच से,
मौत से नहीं, जिंदगी से,
डर लगता है।

अंत से नहीं, शुरुआत से,
अजनबियों से नहीं, अपनों से,
नफरत से नहीं, प्यार से,
दुनिया से नहीं, खुद से
डर लगता है।'

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दूं। उसकी सुंदर कविता की तारीफ करूं या चिंता करूं कि उसे क्या हो गया था? मैंने जवाब दिया, 'कल मिलते हैं।'

मैं फोन हाथ में लिए ही सो गई, उसके जवाब के इंतजार में।

12

अलविदा भी न कहा

अगली सुबह, जागने पर मैं हैरान रह गई कि विवान का कोई जवाब नहीं आया था। मैंने अंदाजा लगाया कि वह जरूर सो गया होगा, तो मैं ही उसे फोन कर लूंगी।

'जिस नंबर पर आप फोन कर रहे हैं, वो अभी स्विच ऑफ है,' एक पतली सी आवाज ने बताया। 'कृपया कुछ देर बाद दोबारा कोशिश करें।'

शायद कैफे कबीर खुलवाने और उसे सफल बनाने के रोमांच में वो फोन बिल जमा करवाना भूल गया होगा, मैंने सोचा।

मैं नहाकर तैयार हो गई। मैंने वही लंबी, मुलायम स्कर्ट पहनी, जो मुझे पता था कि विवान को पसंद थी।

मैंने उसे दोबारा फोन करने की कोशिश की, लेकिन दोबारा से वही रिकॉर्डिंग सुनाई दी।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि चक्कर क्या था। मेरा मन फिर से पिछली रात उसकी भेजी हुई उदास कविता पर चला गया। मैं उसका नंबर मिलाती रही, लेकिन उसका फोन स्विच ऑफ ही रहा।

आखिर, मैंने कबीर का नंबर डायल किया।

'हैलो,' उसने जवाब दिया।

'कबीर, विवान को कुछ हो गया है,' मैंने एक झटके से कह दिया। 'उसने मेरे मैसेज का जवाब नहीं दिया, और अब उसका फोन भी स्विच ऑफ आ रहा है।'

'वो शायद काम में बिजी होगा। मुझे यकीन है कि वह जल्दी ही तुमसे संपर्क कर लेगा,' कबीर ने मुझे समझाते हुए कहा। 'चिंता मत करो।'

'होप कि वो कर ले,' मैंने कहते हुए फोन काट दिया।

• • •

दो दिन बीत गए थे, लेकिन विवान का कोई मैसेज या फोन नहीं आया। अब कबीर को भी चिंता होने लगी थी। और मेरी हालत तो पागलों जैसी ही हो गई थी।

आखिरकार हमने विवान के बैंक जाकर पता करने का निर्णय लिया। गाड़ी में बैठकर सिटी बैंक पहुंचने में हमें ज्यादा समय नहीं लगा।

मैं बात करने की हालत में नहीं थी, तो कबीर ने पूछा। 'क्या हम विवान से बात कर सकते हैं?' उसने रिसेप्शनिस्ट से कहा।

उसने सिर हिलाया, उसके लंबे काले बाल आगे-पीछे हिल रहे थे। 'मुझे खेद है, मिस्टर

विवान अब यहां काम नहीं करते। उन्होंने दो दिन पहले ही इस्तीफा दे दिया।'

मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरे पेट में जोर का मुक्का मारकर, मेरी जान ही निकाल दी हो। विवान ने सिटी बैंक के असिस्टेंट मैनेजर के पद से इस्तीफा दे दिया था। उसने मुझे बताया भी नहीं कि वो इस्तीफा देने वाला था।

'क्या आपको पता है कि वह अभी कहां काम कर रहे हैं?' कबीर ने घबराहट में पूछा।

रिसेप्शनिस्ट ने फिर से सिर हिलाया। 'मैं नहीं जानती कि वह कहां गए हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि वो और कहीं पर काम कर रहे हैं। मैंने उन्हें मैनेजर को कहते सुना था कि वह जा रहे थे... नहीं, उन्होंने कहा था कि वह "भाग" रहे थे। ऐसा लग रहा था, जैसे वह लाइफ से बोर हो गए थे।'

मेरी सांस अटक गई और मेरे घुटने जवाब देने लगे, लड़खड़ाते हुए मैंने कबीर को थाम लिया। मैं अविश्वास से अपना सिर हिला रही थी। मुझे यकीन नहीं आ रहा था कि उसने सारी तैयारी की और हममें से किसी को बताया तक नहीं। मेरा शरीर, मेरा दिमाग सुन्न होता जा रहा था, जब मुझे अहसास हुआ कि वह सच में 'भाग' गया था। मैंने उसका नंबर कई बार मिलाया था, लेकिन कोई जवाब नहीं आया। क्या उसने गुडबॉय कहना या कोई सफाई देना भी जरूरी नहीं समझा था।

मैंने पहले तो हिम्मत दिखाने की कोशिश की, मुझे यकीन था कि मैं इसे हावी नहीं होने दूंगी। यह विवान था, और उसका सपना ही भाग जाना था। यह बात मुझे पहले दिन से ही पता थी, जब मैंने उसे देखा था। लेकिन उसने कभी ऐसा हिंट नहीं दिया था कि वह सच में एक दिन उठेगा और निकल जाएगा।

मैं खुद को यह सोचने से नहीं रोक पा रही थी कि न जाने कबसे उसके मन में यह प्लान चल रहा होगा? क्या उसका हमेशा से प्लान था कि वह एक दिन गायब हो जाएगा? उसने मुझे कई बार बताया था कि वह ज्यादा दिन तक एक जगह पर नहीं रह सकता, क्योंकि उसे घूमना पसंद था। मैं जानती थी। तो जब एक दिन सच में वह अपना सपना पूरा करने चला गया था, तो मुझे इतनी तकलीफ क्यों हो रही थी? वह आगे बढ़ गया था। मेरे बिना।

हम किसी तरह खुद को संभालते हुए कैफे कबीर पहुंचे।

'कम ऑन मीरा, अब रोओ मत,' कबीर ने देख लिया था कि मेरी आंखें भर आई थीं। 'मीरा, हम सब जानते थे कि उसका पहला प्यार ट्रेवलिंग ही था। लेकिन चिंता मत करो, वह लौट आएगा।'

'उसने हमसे गुडबॉय कहना भी जरूरी नहीं समझा,' मैं काउंटर पर हाथ रखकर फूट-फूटकर रोने लगी। मेरा दिल टूट चुका था, और बदतर तो यह था कि मुझे अभी से उसकी याद सताने लगी थी।

कबीर ने मेरे कंधे थपथपाए। 'ओह मीरा, अपने आंसू मत बहाओ। मैं तुमसे विनती करता हूं कि चुप हो जाओ, नहीं तो मैं भी रोना शुरू कर दूंगा,' कहते हुए उसकी आवाज भी लड़खड़ाने लगी थी।

मैंने सिर उठाकर उसे देखा। 'तुम मुझे रोने से मना कैसे कर सकते हो? मेरा कलेजा मेरे शरीर से बाहर आ गया है! जिस दिन मैंने आखिरकार सारी हिम्मत बटोरकर उसे अपने दिल की बात बताने का फैसला किया, उसी दिन वह चला गया। मैं उसके बिना टूट

जाऊंगी!' मैंने वापस अपना सिर नीचे टिकाया और रोने लगी।

'मीरा, हम सब उसे याद करेंगे और तुम्हें उसे याद करने का पूरा हक है,' कबीर ने सहारा देते हुए कहा। 'अभी बस हम यही कर सकते हैं कि खुद को काम में डूबा दें और उसके वापस आने तक उसकी यादों को अपने दिल में संजो कर रखें।'

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उसका ट्रिप कितना लंबा था, लेकिन विवान के बिना अपनी जिंदगी का एक-एक दिन मुझे बहुत लंबा लगने लगा था। उसकी खूबसूरत मुस्कान अब कभी मेरे दिल को नहीं सहलाने वाली थी।

मैं काउंटर पर बैठी हुई थी, और मेरे आसपास की दुनिया चरमराकर ढहने लगी थी।

कबीर मेरे लिए कैपेचिनो ले आया। 'कम से कम तुम्हारे पास लिखने के लिए तुम्हारी किताब है! तुम खुद को उसमें बिजी कर सकती हूं। और हो सकता है उसके वापस आने से पहले तुम्हारा नॉवल खत्म हो जाए। क्या इससे उसे खुशी नहीं होगी?'

मेरा शरीर अभी भी सुन्न था और भीड़ भरे कैफे में भी मैं खुद को बहुत अकेला महसूस कर रही थी। मैं जानती थी कि अभी मेरी जिंदगी में करने के लिए काफी कुछ था, लेकिन रह-रहकर एक ही ख्याल आ रहा था कि अब वह सब साझा करने के लिए मेरे पास विवान नहीं था। अब मुझे फिर से उस जगह में खुद को फिट करना था, जहां मैं उसके आने से पहले खुश थी।

अचानक ही मुझे महसूस होने लगा कि कैफे की दीवारों में अब कोई जादू नहीं बचा था। जिंदगी या कहानी के लिए मुझमें अब कोई दिलचस्पी नहीं बची थी। हर चीज मुझे विवान की याद दिला रही थी।

13

कोरे पन्ने

ऐसा लगने लगा था जैसे विवान वहां कभी था ही नहीं। अभी भी कैफे में जब किसी के लिए ब्लैक कॉफी सर्व की जाती, तो मैं घूमकर देखा करती कि कहीं विवान तो नहीं आ गया था कॉफी पीने।

लिखना मेरे लिए बहुत मुश्किल होता जा रहा था। कभी-कभी अपना लिखा पढ़कर मुझे खूब रोना आता। मैं उस किताब पर अपनी उंगलियां फिराया करती, जिस पर मेरा नाम लिखा था, और कोशिश करती कि काश एक पन्ना लिखकर आगे बढ़ सकूं।

विवान को खोने के बाद ही मुझे अहसास हुआ था कि मैं दुनिया में उसी को सबसे ज्यादा चाहती थी। उसे वापस पाने के लिए मैं कुछ भी छोड़ने को तैयार थी।

'कबीर ने मुझसे कहा था कि मैं आकर तुमसे कुछ बात करूं,' एक दिन निशा ने कहा। मैं एकदम अपनी कुर्सी से उछल पड़ी। मुझे उसके आने और वहां बैठने का अहसास तक नहीं हो पाया था।

'निशा तुम ऐसा कुछ नहीं कह सकती जिससे विवान वापस आ जाए,' मैंने उदासी से कहा। 'मैं खुद इस दुख से बाहर आकर इस कहानी को पूरा करना चाहती हूं।'

उसने समझते हुए सिर हिलाया। फिर उसने इशारे से कबीर से अपने लिए कोल्ड कॉफी विद आइसक्रीम मंगवाई।

उसने आह भरी। 'जिंदगी उतार-चढ़ावों से भरी पड़ी है,' उसने कहा। 'जो भी अनुभव आपको रास्ते में मिलते हैं, उनसे आपको गुजरना ही होगा। कुछ लोग मिलते हैं हमें सबक सिखाने के लिए, जबकि कुछ लोग हमेशा हमारा साथ देने के लिए मिलते हैं, हर हाल में। मैं नहीं जानती कि विवान अब तुम्हें कभी मिलेगा या नहीं, लेकिन समय तुम्हारे टूटे दिल पर मरहम जरूर लगा देगा।'

'मैं जानती हूं कि ऐसा ही होगा,' मैंने कहा, हालांकि मुझे उसके या अपने शब्दों पर कोई भरोसा नहीं था।

निशा ने जोर दिया। 'जो तुम चाहती हो, अभी उसी पर ध्यान दो। यही वो समय है, जब तुम सच में एक लेखक बन सकती हो। अब कोई ऐसा नहीं है, जो तुम्हारा ध्यान भटका सके, या तुम्हारे काम को धीमा कर सके।'

'लेकिन अगर मैं उससे कभी नहीं मिल पाई तो?' मैंने आखिरकार अपने सबसे बड़े डर को बयां किया।

निशा ने प्यार से मेरी बांह सहलाई। वह अच्छी दोस्त थी, और मैं सोच रही थी कि कबीर से मिलने से पहले वह भी ऐसे ही दर्द से गुजर रही होगी।

वह एक पल खामोश रही, फिर अपने शब्दों को इकट्ठा करते हुए बोली। 'मैंने सुना था कि अगर दो आत्माओं का मिलना लिखा है, तो ब्रहमांड किसी न किसी तरह उन्हें मिलवा ही देता है। यहां तक कि जब आप मिलने की सारी उम्मीदें भी खो दें, तो भी कोई कड़ी होती है जो टूट नहीं सकती। वो दिखाते हैं कि हम कौन थे, कौन हैं और क्या बन सकते हैं। सारी उलझनों के बीच भी प्रकृति अपना रास्ता ढूंढ़ ही लेती है।'

विश्वास से भरे उसके शब्दों और लिखने की अपनी दृढ़ता के बावजूद मैं खुद को विवान के बिना आगे बढ़ने के लिए समझा नहीं पा रही थी; सच तो यही था। भले ही विवान ने अपनी पूरी कहानी कभी नहीं बताई थी, लेकिन उसने हमेशा मुझे इतना बताया था, जिससे मुझमें उसे जानने की दिलचस्पी बनी रहे।

विवान की कहानी में जरूर कुछ ऐसा था, जो मुझे अपनी ही आत्मा का हिस्सा लगता था। यह मान पाना मुश्किल था कि वह चला गया था और उस पर ऐसी किताब पूरी करना जिसका मेन किरदार वही था, और उसके बारे में आये एक-एक ख्याल से निपटना मेरे लिए मुश्किल था। हर पन्ना उसी की कहानी कह रहा था।

मुझे हमारे बीच हुई एक बातचीत याद आ रही थी, जब उसने बताया था कि वह कहां जाना जाता था।

उसने समझाया, 'मैं घूमना चाहता हूं लेकिन इससे मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं टूरिस्ट बनना चाहता हूं। मैं एक मुसाफिर बनना चाहता हूं, जो दुनिया को अपने नजरिए से देख सके। मैं दूसरे देशों को देखकर उनका हिस्सा बनना चाहता हूं। पहाड़ों पर चढ़ना, नदियों में तैरना, बीच पर घूमना, लाइब्रेरी में खो जाना, रहस्यों को खोलना और दूसरी जगह के लोगों की कहानियां जानना।

'मैं खुद से अलग लोगों से मिलना चाहता हूं, लेकिन वो लोग जिनसे मिलने पर मुझे खुद को न बदलना पड़े। मैं चीजों को नई आंखों से देखना और नए कानों से सुनना चाहता हूं। मैं घर पर पूरा नहीं लौट आना चाहता; बल्कि चाहता हूं हर जगह पर मेरा एक हिस्सा रह जाए। और इस तरह, हर जगह का एक हिस्सा मेरे साथ भी चला आएगा।'

क्या इस तरह मेरी किताब खत्म होगी? और विवान हमेशा की तरह गायब हो जाएगा, बिना एक शब्द कहे या बिना अपना निशान छोड़े? मैं किताब को इस तरह खत्म नहीं करना चाहती थी, जिसका मेरे लिए ही कोई मतलब नहीं था। मैं इसका अंत किसी अचानक हुए नुकसान या ट्रेजेडी से नहीं करना चाहती थी। इस पल मैं बस दुनिया की सबसे अधूरी कहानी लिख रही थी।

कोई नहीं समझ सकता, सिवाय उसके कि मेरी कहानी अधूरी थी। जरा भी नहीं, विवान।

मैंने कैफे से निकलते वक्त किसी से एक शब्द तक नहीं कहा। इन दिनों मैं ज्यादा बात नहीं करती थी। जिंदगी में आगे बढ़ने का मेरा हौंसला, कुछ भी पूरा करने का मेरा आत्मविश्वास... सब ऐसा लगता था कहीं छिप गया था, बंद हो गया था। मुझे यह भी यकीन नहीं था कि मेरे सपने अभी भी मेरे अंदर कहीं छिप गए थे, या विवान उन्हें भी

अपने साथ ले गया था।

मैं कार तक पहुंची और ड्राइव करना शुरू कर दिया। रास्ता वही था, जिस पर मैं हजारों बार जा चुकी थी। ट्रेफिक पूरी तरह से ठसाठस था। सूरज डूबने जा रहा था, और शाम के सिंदूरी रंग आसमान में ऐसे लग रहे थे, मानो आग आसमान में डांस कर रही हो। सिंदूरी रंग के बीच नीले, गुलाबी और बैंगनी रंग मेरे ऊपर बिखरे हुए थे।

'मैं घूमना चाहता हूं, पूरी दुनिया में। मैं रोड ट्रिप पर जाना चाहता हूं। हर सनराइज और सनसैट देखना चाहता हूं, कभी किसी पहाड़ की चोटी से और कभी पेड़ों के पीछे से।' विवान की आवाज मेरे मन में गूंज रही थी।

मेरी आंखों से दोबारा आंसू बहने लगे थे, जबकि मेरा हाथ स्टीयरिंग व्हील पर था।

जितनी जल्दी मुझे गुस्सा आया था, उतनी ही जल्दी यह शांत हो गया था, और रह गई थी गहरी उदासी। 'आशा है विवान कि तुम यह सनसैट देख रहे होंगे, और तुम्हें मेरी याद आएगी, जहां तुम मुझे छोड़ गए हो,' मैं कार में ही शांति से फुसफुसाई।

विवान

14

मेरी यादें

पिछले तीन महीने पूरे पागलपन में गुजरे थे। जबसे मैंने इंडिया छोड़ा था, मैं काफी कुछ देख चुका था।

मैंने चीन से अपना सफर शुरू किया था। ग्रेट वॉल ऑफ चाइना पर चलते हुए मैंने अपने तलवों का जलना महसूस किया था और वहां खाया खाना तो इतना टेस्टी थ कि इतने दिनों बाद भी मेरे मुंह को उसका टेस्ट याद था। जुत्साई वैली में पीकॉक लेक ने मुझे मीरा की स्कर्ट की याद दिला दी थी, जो उसने मुझसे पहली बार मिलते समय पहनी थी। उस याद पर मैं मुस्कुरा उठा था और पार्क के वाटरफॉल की ओर बढ़ गया, उसकी कड़कती आवाज ने जल्द ही मेरी यादों पर कब्जा कर लिया था।

फिर मैं टोक्यो गया था। वहां के पार्क बहुत ही शानदार थे; वहां चिड़ियाघर और खूबसूरत झीलें थीं, जिनमें लोग पैडल बोट चला रहे थे। मैंने माउंट फीजी से सूरज निकलते हुए देखा, उस खूबसूरत दृश्य को देखकर मेरी तो सांस ही मानो अटक गई। अपने हाटेल से मैं योयोगी पार्क तक चलकर गया और फिर वहां से हमारिक्यो गार्डन की तरफ निकल गया। वह बहुत बिजी शहर था, और मुझे अब अगला स्टॉप किसी शांत जगह पर चाहिए था।

इटली में मैंने माउंट वुशुवियस देखा, और फिर पोम्पई का तबाह हुआ शहर देखने गया। एक तबाह हुए प्राचीन शहर में खड़े होकर वुशुवियस को देखना अपने आप में ऐतिहासिक था। ज्वालामुखी फटने पर वहां स्वाह हुए हजारों लोगों के बारे में सोचकर एक बार तो मेरी रीढ़ में ही सिहरन दौड़ गई।

आइले ऑफ कैपरी टूर के लिए मैंने फैरी का चुनाव किया और जब शिप उस जगह का चक्कर लगा रहा था, तो मैं उसकी खूबसूरती को देखकर जम गया। सागर के बीच आइसलैंड को उभरते देखना अपने आप में खूबसूरत था। मैंने आइसलैंड के ऊपरी दृश्य को देखने के लिए गोंडोला राइड की जगह शिप पर जाना चुना, क्योंकि मैं उस जगह की खूबसूरती को नीचे से, नजदीक से महसूस करना चाहता था।

मैं अलास्का गया और वहां की ठंड को अपनी हड्डियों में उतरते हुए महसूस किया, मैंने उत्तर ध्रुवीय ज्योति (ऑरोरा बोरिलीस) को भी देखा। चमकदार बैंगनी रंग, भुलाए न जा सकने वाले नीले और हरे रंग की उत्तरी रोशनियां, जो हवा में डांस करती हुई, बर्फीली सतह पर अपना प्रतिबिंब बनाती हैं। उन दिनों मैंने वो जानवर और पक्षी भी देखे, जिनके

अस्तित्व की कभी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। मूस, अमेरिकी हिरण को देखकर तो मेरी खुशी की कोई ठिकाना ही नहीं रहा; उस प्यारे भूरे, लंबी टांगों वाले जानवर में कुछ तो खास बात थी, लेकिन उनका लंबा कद तो कल्पना से भी परे था। उनमें से एक ने जब सिर उठाकर मेरी तरफ देखा, तो मैं बस मुस्कुरा ही सका। चबाने की प्रक्रिया में उसके मुंह से लार टपक रही थी। मनैं सावधानी से अपने कैमरे को फोकस किया, मैं इस अजीब खूबसूरती को उसमें समेट लेना चाहता था।

मैं न्यूयॉर्क शहर इसलिए गया, क्योंकि उसे 'गेटवे ऑफ वर्ल्ड' कहा जाता है। वह हमेशा व्यस्त रहने वाला शहर था, जो पूरी रात जागता रहता था। जल्दी सुबह भी सड़कों पर गाड़ियों की कतार लगी रहती थी, और दिन के समय भी लोग इधर से उधर भागने में ही लगे रहते थे। ऐसा लगता था कि जैसे वे एक-दूसरे के साथ जीना ही भूल गए थे। वहां सब कुछ बहुत तड़क-भड़क वाला था, शहर की जगमगाती रौशनियां, जिनमें मुझे तारे भी नहीं दिखाई देते थे। वहां बस काला आसमान था, मैं जानता था कि इन नियोन रौशनियों के पीछे कोई खूबसूरती नहीं थी।

वहां से तुरंत फ्लाइट लेकर मैं गड़गड़ाते नियाग्रा फॉल के सामने पहुंच गया था। मैं प्रोस्पैक्ट पॉइंट ऑबजर्वेशन टावर पर गया। सूरज छिपने के समय मैं उसके ठंडे कंक्रीट पर बैठ गया और बेसब्री से गिरते पानी से निकलते इंद्रधनुष को देखने लगा।

अगली सुबह मैं नीली पान्चो, नियाग्रा तक जाने वाली छोटी बोट, में बैठकर नियाग्रा को नीचे पास से देखने गया।

मुझे महसूस हो रहा था कि कैसे शक्तिशाली इंजन पानी के बहाव के साथ संघर्ष कर फॉल के पास जाने की कोशिश कर रहे थे। झरने का शोर कानों को सुन्न बना दे रहा था, लेकिन चेहरे पर पड़ते पानी की छींटों के साथ होने वाली खुशी को मैं छिपा नहीं पा रहा था। इंडिया के मानसून भी ऐसी ही तसल्ली देते हैं, लेकिन पानी का प्रवाह, उनसे निकलने वाले इंद्रधनुष और लोगों पर पड़ने वाले छीटों का कोई मुकाबला नहीं था। मैंने बहुत सारे जोड़ों को समुद्र यात्रा के दौरान एक-दूसरे से लिपटकर, किस करते देखा था। वे एक-दूसरे तक अपनी बात पहुंचाने की कोशिश में जोर-जोर से बात कर रहे थे।

फिर मैं ग्रैंड कैन्योन गया। मैं देखना चाहता था कि क्या वो वाकई इतना खूबसूरत था, जितना कि उम्मीद की जा सकती थी। सच में, कोई फोटो उस नजारे के साथ न्याय नहीं कर सकता। धरती के अंदर ऐसी कंदराएं देखना आश्चर्य से परे था। मैंने नीचे की जगह पर घूमने के लिए खच्चर की सवारी की। पथरीली राह पर उसके हर कदम के साथ बदन में एक सनसनी सी दौड़ जाती थी।

वापस ऊपर आकर मैंने सनसैट देखा। मेरी सांस तो मानो वहीं रुक जाना चाहती थी। नजारे को देखकर ऐसा लग रहा था, जैसे किसी बच्चे को उसकी मां की बनाई पेंटिंग मिल गई हो, और उसने शरारत से उस पर रंगों की कुछ कलाकारी कर दी हो।

15

एम्मा

पूर्वी तट पर वापस आकर मैंने कुछ दिन बोस्टन में बिताने का फैसला किया। न्यूयॉर्क के अनुभव के बाद, मैं निश्चित नहीं था कि मैं लोगों की इतनी भीड़ को बर्दाश्त कर पाऊंगा, लेकिन इस एरिया का समृद्ध इतिहास मुझे वापस यहां खींच लाया था। यह अमेरिका के पुराने शहरों में से एक था, और मैं यहां की संस्कृति के बारे में कुछ और जानना चाहता था।

बोस्टन कॉमन, शहर के बीच एक बड़े से पार्क जाने के लिए मैंने सबवे लेने का निर्णय लिया। सबवे का रास्ता बहुत उलझन भरा था, लेकिन मुझे कुछ मददगार कॉलेज के छात्रों का समूह मिल गया, जिन्होंने मुझे डिफरेंट कलर और लाइनों के बारे में काफी कुछ समझा दिया। तो मैं सबवे से बाहर, पार्क के नजदीक ट्रेमोंट स्ट्रीट पर आकर खुश था।

वहां लोगों की खासी भीड़ थी, लेकिन उतनी भी नहीं जितनी कि न्यूयॉर्क में थी। दरअसल, यहां के लोग मिलनसार थे। वहां घास पर लेटकर धूप का मजा लेते कॉलेज छात्र थे, तो फ्रिसबी खेलते कुछ लोग भी। प्लेग्राउंड से निकलते हुए मैं एक बूढ़े आदमी को बच्चों के लिए बैलून करैक्टर बनाता देख रुक गया। जब उसने मेरे हाथ में एक ग्रीन डॉग थमाया, तो वहां जमा बच्चे खिलखिलाकर हंसने लगे। जब मैं जाने लगा, तो एक छोटी लड़की का बैलून फट गया और वो रोने लगी। मैंने उसे अपना डॉग दिया, बदले में वह खुशी से मेरे गले लग गई। मैं हंसा। उसमें से सेब की महक आ रही थी।

'आपकी स्माइल बहुत प्यारी है,' छोटी बच्ची ने मासूमियत से कहा। 'हमारे साथ पूल में चलोगे?'

मैंने मदद के लिए उसके पिता को देखा। वैसे तो मेरी इंग्लिश बहुत अच्छी थी, लेकिन मैं बिलकुल नहीं समझ पाया कि वह क्या कह रही थी। उसके पिता मुस्कुराये। 'लगता है तुम्हें नया दोस्त मिल गया,' उन्होंने कहा। 'यह एम्मा है,' उन्होंने उसके घुंघराले, भूरे बालों में उंगलियां फिराते हुए कहा। 'मेरा नाम मैक्स है।' उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

'विवान,' मैंने कहा।

एम्मा हंसने लगी। 'कितना फनी नाम है,' उसने कहा। 'और आपकी बातें भी फनी हैं!'

'एम्मा!' उसके पिता ने धमकाया।

'कोई बात नहीं,' मैंने कहा। 'मैं दूसरे देश से आया हूं, बहुत, बहुत दूर से,' मैंने उस बच्ची को समझाया।

'आपकी बच्ची कहां है?' उसने पूछा।

'एम्मा!'

मैं मुस्कुराया। मुझे उस मासूम बच्ची का साथ खूब भा रहा था। 'मेरी अभी तक कोई बच्ची नहीं है। पर सोचता हूं कि जब भी होगी, बिलकुल तुम्हारे जैसी होगी!'

उसने अपने पिता का हाथ खींचना शुरू कर दिया। 'लगता है अब हमें पूल की तरफ चलना चाहिए,' मैक्स ने माफी मांगते हुए कहा। 'वैसे तुम भी हमारे साथ आ सकते हो। आज बहुत गर्मी है, मैं भी पूल में अपने पैर डूबोकर बैठने वाला हूं!'

मैं खुशी से तैयार हो गया। लंबे समय तक अकेले घूमने के बाद यूं किसी का साथ दरअसल अच्छा लग रहा था।

एम्मा ने मेरा हाथ भी पकड़ लिया, और वो उछलते-कूदते हुए हमारे साथ पूल की तरफ बढ़ने लगी। पूल दरअसल पत्थर का बड़ा सा एरिया था, जिसमें बीच में एक फव्वारा लगा था, और कुछ इंच पानी वहां भरा हुआ था। बच्चे फव्वारे के नीचे मस्ती कर रहे थे। पूल की साइड में, एम्मा ने जल्दी से अपने जूते उतारे और छपाक से पानी में छलांग लगा दी।

मैक्स और मैंने भी वैसा ही किया। मेरे लिए किसी अजनबी के सामने अपने जूते-जुराब उतारना जरा अजीब था, लेकिन मैक्स को इसमें जरा भी झिझक नहीं थी। उसने झटके से अपने स्नीकर्स उतारे और पूल के किनारे, पानी में पैर डालकर बैठ गया।

हम पानी में पैर डालकर बैठे हुए एम्मा को पूल में अपने बैलून डॉग के साथ खेलते हुए देख रहे थे।

'तुम यहीं रहते हो या घूमने आए हो?' मैक्स ने पूछा।

'मैं घूमने आया हूं,' मैंने जवाब दिया। 'मैं दुनिया देखना चाहता था, इसलिए इंडिया में अपनी जॉब छोड़कर, टूर पर निकल लिया।'

'वाह,' उसने कहा। 'तो तुम कब तक ट्रैवलिंग करने वाले हो?'

'पता नहीं,' मैंने कहा। 'मैं कभी घर नहीं जाना चाहता, लेकिन जाना पड़ेगा। अगर घूमना मुफ्त में होता, तो वे कभी दोबरा मुझे नहीं देख पाते।'

'वे?' मैक्स ने पूछा।

'इंडिया में मेरे दोस्त,' मैंने कहा।

'तो तुम मैरिड नहीं हो,' उसने कहा।

'नहीं,' मैंने कहा। 'और तुम?'

'नहीं। एम्मा की मां और मैं उसके पैदा होने के कुछ समय बाद ही अलग हो गए। हमें अहसास हुआ कि हम जीवनसाथी की बजाय दोस्त ही भले थे।'

'ओह, आई एम सॉरी,' अचानक ही मेरे मुंह से निकला।

'नहीं, नहीं, दरअसल यह हमारे लिए अच्छा है। यकीनन, मैं एम्मा को उतना नहीं देख पाता, जितना मैं चाहता हूं, लेकिन जो भी समय हम साथ बिताते हैं, वह अनमोल है। उसके साथ बिताए हर पल को मैं एन्जॉय करता हूं। तो ऐसा कोई खास नहीं है, जो तुम्हारा इंतजार कर रहा हो?'

मैंने मीरा के बारे में सोचा। 'हां, है तो,' मैंने अपने पैरों को ठंडे पानी में खींचते हुए कहा। 'हालांकि वह एक दोस्त ही है।'

'लेकिन...' उसने जोर दिया।

मैंने कंधे उचकाए। 'लेकिन शायद दोस्त से ज्यादा,' मैंने माना। किसी के सामने ये मानकर मुझे अच्छा महसूस हुआ, भले ही वह पूरी तरह अजनबी था।

'तुम्हें क्या लगता है, जब तुम लौटकर जाओगे, तो वह तुम्हारा इंतजार कर रही होगी?'

मैंने आह भरते हुए इस बारे में सोचा। 'शायद, उम्मीद तो है।'

उसने आगे झुककर मेरा कंधा थपथपाया। 'तो मेरे दोस्त, तुम्हें वापस जाने में देर नहीं करनी चाहिए।'

16

वो अजनबी

आखिरकार, मैं पैरिस में प्रोमेनेड प्लांटिआ पार्क में बैठा शाम की पिकनिक मनाते हुए क्रस्टी ब्रेड और कैंटल चीज खा रहा था। मेरे सामने मेरे सफर का सबसे सुंदर सनसैट होने वाला था। ऐसा लग रहा था जैसे सूरज आग के रंगों में फूटते हुए गुलाबी, नीले और जामुनी कपड़े पहन रहा था।

मेरे सामने बैंच पर सटकर बैठे जोड़े ने जरूर अच्छा समय बिताया था। मैंने आदमी को अपने घुटनों के बल बैठते हुए देखा।

'एलिजाबेथ, मैं मूर्ख था। मैं तुम्हें पीछे छोड़कर बिजनेस ट्रिप और दुनिया घूमने के लिए निकल गया था। अब मुझे अहसास हुआ है कि ऐसी कोई जगह नहीं है, जहां मैं तुम्हारे बिना रह सकूं। ऐसी कोई औरत नहीं है, जो तुम्हारे जैसी हो, न ही तुमसे ज्यादा मेरे लिए कोई खास है। तुम मेरा सब कुछ हो और हमेशा रहोगी। तुम्हारे बिना मेरी जिंदगी का कोई मकसद नहीं है, भले ही सांसें आएं या जाएं। मैं तुमसे प्यार करता हूं। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?'

सामने बैठी महिला, एलिजाबेथ की खुशी शब्दों में बयां नहीं की जा सकती थी।

प्यार एक खास शय है, उन्हें गले लगता देख मैंने सोचा। जब आपको प्यार होता है तो आपके पास जीने और जिंदगी का आभार जताने के लिए सब कुछ होता है, लेकिन जब आपका प्यार खो जाता है, तो हर दिन आप अपने ही खोल में बंद होते चले जाते हैं। इस धरती पर जीने का मकसद सिर्फ सर्वाइवल ही होता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप प्यार की तरह ही किसी दूसरी चीज को महत्वपूर्ण महसूस कर पाओ।

'ओह, स्टीव! मैं भी तुमसे प्यार करती हूं।' मैंने भावनाओं से भरे उसके शब्द सुने।

• • •

'यह खूबसूरत दिन है। तुम यहां क्या कर रहे हो? क्या तुम बिजनेस के सिलसिले में यहां आए हो?' बिजनेस सूट पहने एक वृद्ध व्यक्ति ने मुझसे पूछा। वह बैंच पर मेरे ही पास बैठ गए थे। अपने चॉकलेट क्रोइसेन में डूबे हुए मैंने उन्हें पास बैठने का न्यौता नहीं दिया था, लेकिन उनका मुझसे यूं बात करना मुझे बुरा नहीं लगा। अपने दिल की आह के साथ मुझे महसूस हुआ कि मैं कहीं न कहीं अकेलापन महसूस कर रहा था।

मैंने अपना सिर हिलाते हुए अपनी पेस्ट्री का डिब्बा दोस्ताना अंदाज में उनकी तरफ बढ़ा दिया। उन्होंने मुस्कुराकर हाथ बढ़ाकर एक पेन ऑ चॉकोलेट उठा ली। उन्होंने

खामोशी से उसे टोस्ट के अंदाज में उठाया और फिर बढ़िया सी बाइट ली। 'हम्म,' अपनी गोद से उसका चूरा झाड़ते हुए उन्होंने कहा। 'शुक्रिया मेरे दोस्त। इस ट्रीट के लिए मुझ पर तुम्हारी एक कॉफी उधार रही। लेकिन प्लीज, मुझे बताओ कि इस सुंदर शहर में तुम अकेले क्या कर रहे हो?'

'मैंने घूमने के लिए अपनी जॉब छोड़ दी,' मैंने समझाते हुए अपनी क्रोइसेन गोद में रखी। 'मैंने कुछ बहुत शानदार जगहें भी देखीं, और पैरिस उन सब शहरों में सबसे सुंदर है, जो मैंने देखे। इस खूबसूरत दिन में मुझे किसी की कमी नहीं खल रही, और इसकी खूबसूरती मुझे अंदर तक बांध रही है,' मैंने कहा।

वह हंसे। 'तुम्हें यकीनन कभी प्यार नहीं हुआ है। जब भी मैं अपनी जवां दुल्हन से दूर होता, तो मानो मेरी जान ही निकलने लग जाती। मेरे अंदर कुछ ऐसा था, जिसे मैं हटा नहीं सकता। ऐसा लगता था कि मैं उसके बिना जी ही नहीं पाऊंगा।'

'यही तो समस्या है। मुझे प्यार है, इसीलिए तो मैं ट्रैवल करता हूं। मैं भागने की कोशिश कर रहा हूं,' मैंने शांति से कबूला।

बुजुर्ग व्यक्ति ने धीरे से सिर हिलाया। 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम महिलाओं के बारे में क्या सोचते हो, मैं तुम्हें बताता हूं कि मैंने उनसे क्या सीखा। अपने सफेद होते बालों के साथ मैंने खूब अनुभव लिया है,' उन्होंने मजाक करते हुए कहा।

'प्लीज,' मैंने उन्हें उकसाते हुए कहा। 'मुझे आपके विचार जानने में पूरी दिलचस्पी है।'

बोलने से पहले उन्होंने पेस्ट्री की एक बड़ी सी बाइट ली। 'मेरी नैंसी काफी कुछ तुम्हारे जैसी ही थी। उसमें वह सब था, जिसके सपने एक आदमी देखता है। उसके बारे में कल्पना करने से ही मैं बहुत भावुक हो उठता। लेकिन मैं भी मूर्ख था, जो उससे कभी कहा नहीं कि मैं शुरुआत में उसकी कितनी परवाह करता था। जब मैंने उसे बताया, तब तक उसका अतीत हमारे वर्तमान पर हावी हो गया था, और उसने अतीत को हमारे बीच आने दिया। वह किसी से प्यार करती थी, जो जिंदगी के उतार-चढ़ावों में उसके खूबसूरत दिल को तोड़कर चला गया था।'

निशा के बारे में सोचते हुए मेरा मन भर आया था। मैं सोच रहा था कि वो और कबीर क्या कर रहे होंगे। क्या उनकी शादी हो गई होगी?

वह बोलते रहे। 'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैंने उसे क्या बताया, उसके घाव गहरे थे, और उसे अपना दिल खोलने में काफी समय लगा। तब तक हम दोनों अपना कैरियर बना चुके थे, और हमारी शादी हो गई थी। अब, जब समय बीत गया है, तो उसे वापस पाने के लिए मैं कुछ भी कर गुजरने को तैयार हूं।'

'क्या हुआ था?' मैंने पूछा।

'उसने मुझे तलाक दे दिया,' बूढ़े आदमी ने आह भरी। 'वह कभी उस आदमी को भूल नहीं पाई थी, जिसने उसका दिल तोड़ा था, और उसने मेरे प्यार का मरहम अपने घाव पर लगाने से मना कर दिया।'

मैंने अपने पैरों के नीचे ताजा कटी घास को देखा। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, उन्होंने अपनी बात जारी रखी।

'याद रखना, मेरे दोस्त। प्यार बहुत अजीब चीज है। जब आपको प्यार होता है, तो आप

चांद को भी जीत सकते हो, कोई तुम्हें नहीं रोक सकता। प्यार ऐसा होता है, जो नई खोजों के लिए तुम्हारी आंखें खोल देता है, भले ही जगह पुरानी हो। तुम इस दुनिया को उस व्यक्ति के साथ देखना चाहते हो, जिसका तुम्हारे दिल पर राज होता है। लेकिन एक बार प्यार खो जाने पर आपके आसपास की दुनिया चरमराकर गिरने लगती है।

'जब आप किसी को प्यार करते हैं, तो समय का कोई अंदाजा नहीं रहता, लेकिन यादें तुम्हारे दिल पर अमिट छाप छोड़ती चली जाती हैं। मुझे लगता है कि इतनी कम उम्र में तुम ऐसे भागकर बेवकूफी कर रहे हो। वही गलतियां मत दोहराओ, जो मैंने अपने अतीत में दोहराई थीं! जाओ और जाकर अपने प्यार को जियो। आखिर में हम उन चीजों के अफसोस करते हैं, जो हम नहीं कर पाए, वो प्यार जिसे हम कबूल नहीं पाए, वो सपने जिनके लिए हम लड़ नहीं पाए।

'जब भावनाएं निर्मल हों, और दिल सच्चा, तो भगवान भी नियति बदलने के लिए आपका साथ देता है,' वह मुस्कुराये।

मेरी उत्सुकता बढ़ गई। 'लेकिन क्या मैं यह सब छोड़ दूं?' मैंने अपने सामने के मनोरम दृश्य की तरफ इशारा करते हुए पूछा। 'मैं हमेशा से बस घूमना चाहता था। क्या यह सब मुझे एक औरत के लिए छोड़ देना चाहिए? और अगर वह मेरे लिए सही पसंद न हो तो?'

'बेटा,' उन्होंने मेरे घुटने को थपथपाते हुए कहा, 'कुछ औरतें अपनी सुंदरता से तुम्हारा दिल चुरा लेती हैं, कुछ अपनी होशियारी से तुम्हारा दिमाग और कुछ सिर्फ अपनी उपस्थिति से ही तुम्हारी आत्मा को चुरा लेती हैं। लेकिन अगर तुम किसी ऐसी महिला से मिलो, जो बिना कुछ किए ही तुम्हारा सब कुछ चुरा ले जाए, तो वही तुम्हारे लिए बनी है।'

उन्होंने खड़े होकर अपने सूट से चूरा झाड़ा। 'अपने सपनों के पीछे अकेले क्यों भागना, जब तुम अपने जीवन साथी के साथ उन्हें पूरा कर सकते हो?' वह बढ़े और मैंने उनसे हाथ मिलाया।

'आपने अच्छे पॉइंट उठाए हैं,' मैं दिल से कह रहा था। 'थैंक यू।'

वह मुस्कुराए। 'हो सकता है तुम दिनों, हफ्तों, महीनों, सालों या फिर दशकों तक इंतजार कर सकते हों। लेकिन तुम बस कैलेंडर को देखकर अपना समय ही बर्बाद कर रहे हो, और ऐसे में कई महत्वपूर्ण पल तुम्हारे हाथों से फिसले जा रहे हैं। लेकिन हममें से कुछ लोगों के लिए जो भी है, बस अभी ही है। और सच यह है कि हममें से कोई नहीं जानता कि भगवान कब हमारे चाहने वालों को हमसे दूर कर दे। तो अपनी जिदंगी के हर पल, और जिंदगी में आए हर इंसान का साथ एंजॉय करो।'

वृद्ध व्यक्ति जा चुके थे, लेकिन मेरा मन अभी भी उन्हीं की बातों को सोच रहा था। शायद वह सही कह रहे थे।

हालांकि अभी मेरा सफर पूरा नहीं हुआ था। अभी भी बहुत सी ऐसी जगहें थीं, जिन्हें मैं देख लेना चाहता था। मेरा प्लेन हैलीफैक्स, नोवा स्कॉटिया में उतरा था। वहां से मैंने गाड़ी किराए पर ली। मैंने लोगों को कहते सुना था कि केप ब्रेटन दुनिया का किनारा था। इंडिया वापस जाने से पहले मैं इसे देख लेना चाहता था। बाद में, मैंने कैंसो कॉजवे के झूलते पुल को पार किया और आइसलैंड पर पहुंचा, जहां गहराए कोहरे ने मुझे खुद में लपेट लिया।

अगले दिन, मैं मीट कोव, कैंपग्राउंड में चट्टान के किनारे बैठा लहरों को पत्थर से टकराते हुए देख रहा था। मेरी पीठ पर सूरज की नरम धूप पड़ रही थी, सूरज की किरणें मेरे कंधों को अपने आगोश में ले रही थीं।

मेरे आसपास की हवा में इंसानी और मशीनी शोर नहीं था। केप ब्रेटन के उत्तरी छोर पर बैठे हुए मैं सच में महसूस कर पा रहा था कि यह दुनिया का किनारा था। मैंने अपने बायीं ओर नरम ढलान को देखा जो आगे जाकर नजरों से ओझल हो रहा था। वह देखने में तो सुरक्षित लग रहा था, लेकिन मैं जानता था कि यह सिर्फ दिखावा था, और यह जगह ठंडे पानी के नीचे तेजी से ढह रही थी। मेरे दाहिनी ओर एक छोटा सा बीच था, जिसके ऊपर छाई बड़ी सी चट्टान उसे बौन दिखा रही थी। हालांकि वह छोटी सी जगह देखने में शांतिपूर्ण लग रही थी, लेकिन चट्टान से गिरती मिट्टी बता रही थी कि यह जगह खतरे से खाली नहीं थी।

मैंने अपना सिर पीछे की तरफ झुका लिया, जब तक सूरज की गर्मी ने मेरे सिर को तपा नहीं दिया। मैं कब तक भागता रहूंगा? जिंदगी के अकेलेपन को स्वीकारते हुए आखिरकार मैंने खुद से पूछ ही लिया। मेरे मन में मीरा के साथ गुजारे हुए आखरी पल जीवित हो उठे थे। आंखें बंद करने पर मुझे अपने कानों पर उसके नरम होंठों का अहसास हो रहा था। बेध्यानी में मेरे हाथ उसके स्पर्श को महसूस करने के लिए बढ़ गए, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। मुझे उसकी जरूरत थी; मुझे भूरी आंखों वाली उस खूबसूरत एंजल की जरूरत थी, जिसे मैं बीच राह में छोड़ आया था।

ऐसे पलों में मैं सोचता था कि क्या मैंने मीरा को छोड़कर गलती कर दी थी। हताशा से मैंने ठोड़ी अपने सीने पर टिका दी। सारे सफर पर, मन चुरा लेने वाले दृश्यों पर मेरा अकेलापन हावी होने लगा था। 'दुनिया को देखना है,' मैंने खुद से कहा, लेकिन अपनी ही आवाज मेरे कानों को बेगानी लग रही थी। 'कुछ नहीं! मैं बस कायर हूं, जो भाग रहा है... किस लिए? और किससे?'

बेध्यानी में, मेरी उंगलियां मेरे पास की घास को खींचन लगी, उसे मीरा की उंगलियां समझकर मेरी पकड़ मजबूत होने लगी। मैं कितना मतलबी था। मैं उसे चाहता था, लेकिन मैं तो उसकी नरम मुस्कान के लायक भी नहीं था। उसे इस तरह छोड़कर चले आने के बाद, उसे बाय तक न बोल पाने के बाद, मैं किसी तरह उसके लायक नहीं था।

मुझे अपने सामने फैली कोई सुंदरता नहीं दिख रही थी। बल्कि मुझे तो मेरी मीरा ही दिखाई दे रही थी। अपने अंधेरे कमरे में बैठी, गालों पर बहते गर्म आंसू। उसके बाल बिखरे हुए थे, और हमेशा तने रहने वाले कंधे दुख से झुक गए थे। उसका ये हाल मैंने ही किया था।

मुझे फटने की कुछ आवाज सुनाई और मैं अचानक वर्तमान में लौट आया। मैंने नीचे देखा तो जाना कि मेरे हाथ निराशा में घास को खींच रहे थे।

मैं जल्दी से खड़ा हुआ, मुझे अहसास ही नहीं था कि अचानक से बड़ा सा मलबा मेरे सामने गिरने वाला था। अचानक आए ख्याल से मैं डर गया कि अभी इस पल मेरी मौत हो सकती थी। लेकिन अब मैं संभल चुका था। मैं जल्दी से जल्दी अपने घर वापस लौट जाना चाहता था। उस पल मुझे अहसास हो गया था कि मीरा से मिलकर ही मेरा अधूरापन दूर हो पाएगा। यह अकेलापन मेरा दम घोंट रहा था। मुझे कुछ भी करके उसके पास पहुंचना

था।

मीरा

17

कभी-कभी

जैसे चांद धीरे-धीरे घटता है, ऐसे ही मेरा दर्द भी कम होने लगा था। विवान के जाने के बाद का खालीपन तो नहीं भर पाया था, लेकिन फिर भी उस अकेलेपन में मानो बरसात की हरियाली घर बनाने लगी थी।

कभी-कभी मेरे दिल का खालीपन नाराजगी से भर जाता और मैं विवान के यूं अचानक चले जाने से गुस्सा हो उठती।

कभी उस खालीपन में दृढ़ता भर आती कि मुझे कुछ भी करके अपने जीवन में आगे बढ़ना था, मैं खुद को समझाती कि मैं कभी उसका नाम नहीं लूंगी। कबीर और निशा से भी उसके बारे में कोई बात नहीं करूंगी; यहां तक मेरे निजी पलों में भी उसका कोई अस्तित्व नहीं होगा। ऐसे समय में मैं उसकी दी हुई किताब रद्दी में रख आती, जहां वह होनी चाहिए थी। लेकिन कुछ पलों, या घंटों बाद मैं हमेशा वापस जाकर उसे उठा लाती।

कभी बस ऐसे ही उदासी छा जाती और मैं अपने घुटनों को अपने सीने से लगाए, बिस्तर में पड़ी रहती।

कभी मैं हालात को समझने की कोशिश करती। आखिरकार, प्यार समझने का ही तो नाम था और अपने चाहने वालों को उनके सपने पूरा करने के लिए आजाद छोड़ने का।

कभी मुझे किसी बात की कोई परवाह नहीं होती। उसकी, अपने दोस्तों की, अपने काम की। मैं कोई बेकार सा बहाना बनाकर ऑफिस से छुट्टी ले लेती और पुणे की आसपास की जगहों पर यूं ही घूमती रहती। अगर विवान को भागने का इतना ही शौक था, तो मैं भी भाग जाऊंगी।

मैंने बेवकूफियां भी करनी शुरू कर दी थी, जैसे कभी मैं पूरी रात सड़कों पर अकेली घूमती। मुझे हमेशा बताया गया था कि रात में अकेले मत निकलना, लेकिन अब मुझे किसी की परवाह नहीं थी।

कभी मैं किसी परछाई को देखकर डर जाती, तो कभी अकेलेपन, अंधेरे का लुत्फ उठाती।

घंटों घूमने के बाद जब मैं अपने घर लौटती, तो मैं खुद को यूं जोखिम उठाने के लिए कोसती, अफसोस करती कि मुझे ऐसे रात में नहीं घूमना चाहिए था। अकेले। समाचार भयानक खबरों से भरे होते; महिलाओं का अपहरण, शोषण... या और बदतर। मैं खुद को खुशकिस्मत समझती कि मेरे साथ ऐसा नहीं हुआ था, मैं खुद से दोबारा ऐसा न करने का वादा करती!

और फिर अगली रात, मैं जबरन खुद को बिस्तर में रखने की कोशिश करती, जब तक कि मैं काबू खोकर दोबारा से रात में घूमने न निकल जाती।

सच पूछो तो मुझे किसी की परवाह नहीं थी।

विवान

18

खालीपन

मैं सिटी बैंक की नौकरी छोड़कर बस दुनिया घूमना चाहता था। और अब मैं खुद को दोषी मान रहा था, ऐसा कुछ नहीं था जिससे मेरा अफसोस कम हो पाता। बार-बार मैं खुद से पूछ रहा था कि आखिर क्यों मैंने किसी को गुडबाय तक नहीं कहा था।

हर दिन मैं इस दुनिया में खुशी की तलाश में निकल जाता। लेकिन ऐसा कुछ नहीं था जिससे मेरे दिल को सुकून मिल सके। मैं शानदार जगहों पर घूमा था।

यह वो मौका था, जिसके लिए मैं कुछ भी कर गुजरने को तैयार था। मैं बच निकला था, लेकिन यहां मैं एक अनजान जगह पर खुद अजनबी था। मैं बस एक घुमक्कड़ था, जो एक जगह पर ज्यादा देर तक नहीं ठहर सकता था, और किसी को भी मेरी कहानी में कोई दिलचस्पी नहीं थी, जैसी मीरा को थी।

मुझे याद है कि एक बार मैंने उससे उसकी राइटिंग के बार में पूछा था।

'मुझे जलन होती है,'मैंने माना था। 'मैं नंबर और आंकड़ों में बेहतरीन था, लेकिन शब्दों के मामले में मैं बिलकुल बेकार हूं। तुम लिख सकती हो, और तुम्हारा दिल पेपर पर मानो गाने लग जाता है।'

'मैं अपने लेखन से लोगों को प्रेरित करना चाहती हूं। मैं उनकी आत्माओं को छूना चाहती हूं,' उसने कहा था। 'मैं चाहती हूं कि वे कहें कि मैं उन्हें छू सकती हूं, उन्हें आगे बढ़ा सकती हूं।'

मैं उसकी आवाज सुन सकता था, लेकिन जब मैं कल्पना में उसे मुस्कुराते हुए देखने की कोशिश करता, तो मेरा दिल मेरा साथ छोड़ देता। काश मेरे पास उसकी कोई तस्वीर होती, लेकिन कोई कैमरा उस पल को कैद नहीं कर सकता था, जब वह हसरत से मेरी आंखों में देखा करती।

हां, अब मैं मानने लगा था कि जिंदगी में मुझे मीरा की जरूरत थी।

मुझे क्या हो गया था? मैंने खुद से वादा किया था कि मैं कभी प्यार नहीं करूंगा! लेकिन जब मैं मीरा की गहरी आंखों में देखता, तो अपना वादा तोड़ देता। वह वो जहान थी जिसमें पहली बार मैंने खुद को तलाशा था। वह खूबसूरत चेहरे वाली आकर्षक महिला थी। दुनिया के प्रति उसकी उत्सुकता, विषयों में उसकी दिलचस्पी मुझे घंटों तक उससे बात करने के लिए मजबूर कर देती थी।

मुझे याद था कि कैसे सफर के दौरान बार-बार मुझे उसका ही ख्याल आया था।

अलास्का में कांपते हुए, उत्तरी रौशनी मुझे उसके जड़ाऊ हरे नैकलैस की याद दिला रही थी।

केप ब्रेटन आइसलैंड में चट्टान पर बैठे हुए मैं कैसे उसके गुमान में घास को नोंच रहा था, मुझे रह-रहकर उस दिन की याद आ रही थी, जब पार्क में चलते हुए मैंने उसका हाथ पकड़ लिया था। वो दिन जब उसने अपने सैंडल उतारकर नंगे पैर चलना शुरू कर दिया था। वो दिन जब मैंने उसे किस किया था। मेरी आंखें बंद थीं। मैं अभी भी उसके होंठों की नरमी अपने होंठों पर महसूस कर सकता था।

मैं बोस्टन में मिली उस छोटी सी लड़की के बारे में सोच रहा था कि मीरा उस ग्रीन डॉग और लड़की के साथ पूल में कितनी मस्ती करती। उसे छोटे-छोटे पलों को जीना आता था, बिना ये सोचे कि दूसरे उसके बारे में क्या सोच रहे थे।

मेरे सफर के हर पड़ाव पर मीरा मेरे साथ थी। जब इंडिया से मैं बिना किसी को गुडबाय कहे निकला, तब भले ही मैं हर चीज से भागने की कोशिश कर रहा था, लेकिन किसी तरह मीरा ने मेरा साथ नहीं छोड़ा। एक भी जगह पर नहीं।

मीरा। वह हमेशा जोश के साथ कैफे में आती थी। ऐसा कुछ नहीं था जो उसे रोक सके। कुछ भी ऐसा नहीं था जो उसके जोश में कमी ला सके। वह हमेशा मुस्कुराती रहती; इससे आपको अहसास होता कि जिंदगी गुलजार है।

अचानक मुझे लगने लगा था कि मुझे घूमने की कभी पड़ी ही नहीं थी। मैं बस उसे ही याद कर रहा था, और इंडिया में बिताए अपने पलों को। सच यह था कि घूमने के बारे में तो मैंने काफी पहले ही सोचना छोड़ दिया था। मुझे अहसास भी नहीं हुआ कि मेरे पास किसी से बात करने के लिए कोई दूसरा टॉपिक नहीं था।

वास्तव में तो मैं कैफे कभी छोड़ ही नहीं पाया था, बल्कि मैं दूर से देख रहा था कि वह कैसे मुझे ढूंढ़ रही होगी। जब मैं उससे पूछता कि तुम्हारा दिन कैसे गुजरा, तो हमेशा उसका एक ही जवाब होता, 'अब जब तुम पास हो तो सब अच्छा ही होगा।'

• • •

दुनिया के अलग-अलग कोनों से देखा गया हर सनसैट मुझे मीरा के साथ बिताए समय की ही तो याद दिलाता था। हम अलग शहरों में थे, एक-दूसरे से दूर, तुम भले ही इसे पागलपन कहो, लेकिन हर बार जब भी सूरज निकलता या छिपता मैं खुद को तुमसे और जुड़ा हुआ महसूस करता।

मैं बिना कुछ कहे, बिना किसी को बताए, बिना गुडबाय कहे चला आया था। लेकिन उसके अपने कारण थे। काश मैं वो सब मीरा को बता पाता। मैंने पैरिस के पार्क में उस आदमी की कही बातों को सोचाः 'आखिर में हम हमेशा उन बातों का अफसोस करते हैं, जो हम नहीं कर पाए, उस प्यार का जिसे हमने नहीं कबूला, उन सपनों का जिनके लिए हम नहीं लड़े।'

मुझे अपने दोस्तों के पास वापस जाना था। सबके पासः कबीर, निशा और मीरा। काश मेरे यूं अचानक चले आने से हमारी दोस्ती में दरार न आई हो। अगर कुछ ऐसा होगा भी तो उनकी माफी के लिए मैं कुछ भी करूंगा।

मीरा

19

मरहम

एक सुबह उठकर मुझे अपने दिल का दर्द पहले से कुछ कम महसूस हुआ। मैंने खुद को खींचा और महसूस किया कि आखिरकार पिछली रात मुझे अच्छी तरह से नींद आ पाई थी। मैं पूरी रात बिना किसी परेशानी के सोई थी। न करवटें, न नींद से जागना, और न ही रोना।

मैं बिस्तर से उतरी और तैयार होने के लिए बढ़ी, दरअसल अब मैं अपने दिन का सामना करने को तैयार थी।

मुझे यकीन नहीं होता, मैंने सोचा। क्या मैं विवान को पीछे छोड़ चुकी हूं? क्या मैंने इस सच को मान लिया है कि वो कभी वापस नहीं आएगा?

मैं जल्दी से नहाई, और काफी अरसे बाद खुद को सही मायनों में आईने में देखा। मेरे बाल बढ़ गए थे और मुझे अच्छे से फेशियल की भी जरूरत थी।

खुद को आईने में देखकर मैंने अपनी नाक चढ़ाई। 'खुद की साफ-सफाई का टाइम आ गया है,' मैंने कहा। मैंने तय कर लिया था कि बस अब बहुत हो गया। मैं जल्दी से इंटरनेट पर सर्च किया और फोन उठाकर नंबर मिलाने लगी।

एक घंटे बाद मैं पुणे के स्पा में पहुंच चुकी थी। रिसेप्शन के भूरे सुनहरे इंटीरियर ने तुरंत मुझे शांत कर दिया। एक नरम आवाज महिला ने मेरा वेल्कम करते हुए कंप्यूटर से मेरी अपॉइंटमेंट निश्चित की।

मुझे एक कमरे में ले जाकर, मुलायम सा वाइट रोब देते हुए उन्होंने मुझे स्पा के अलग-अलग पैकेज के बारे में समझाया। मैंने अरोमाथैरेपी मसाज को चुना और उनकी हल्की मसाज से अपनी मांसपेशियों से तनाव को पिघलते हुए महसूस किया।

मैंने खुद को हल्के संगीत और पानी की आवाज के साथ बहने दिया।

उस दोपहर मैं खुद पर और ध्यान देते हुए अपने फेवरेट सैलून में फेशियल, मैनिक्योर और हेयरकट के लिए गई।

बाकी के बचे हुए दिन में मैं शॉपिंग के लिए निकल गई, जहां मुझे अपने लिए खूबसूरत ड्रैस मिल गई।

उस शाम मैं अपना शानदार दिन दिखाने के लिए कैफे कबीर गई। जब कबीर मुझे अंदर आता देख मुस्कुराया और सीटी बजाई, तो मैं खिलखिला पड़ी। मैंने निशा की त्यौरी चढ़ते देखा, जब उसने कबीर को किसी के लिए सीटी बजाते देखा, लेकिन फिर मुझ पर नजर

पड़ते ही वह खुशी से उछल पड़ी।

'मीरा!' वह चहचहाई। 'तुम बहुत सुंदर लग रही हो!'

मैं बहुत खुश थी। मैं वहां ऐसे पोज दे रही थी, जैसे मेरी फोटो मैगज़ीन कवर पर आई हो।

निशा ने जल्दी से आगे आकर मुझे गले लगा लिया। 'क्या हुआ है तुम्हें? क्या मेकओवर है! कुछ नया हुआ है न?'

मेरे कंधे पर हाथ रखकर वह खुशी से मुझे काउंटर तक ले गई। कबीर अभी भी मुस्कुरा रहा था। उसने काउंटर पर थोड़ा आगे झुकते हुए मुझे गले लगा लिया।

'वह कमाल की लग रही है न?' निशा ने कहा।

कबीर ने हां में सिर हिलाया। 'हां मीरा, सच में। मैं तुममें आए इस बदलाव को देखकर बहुत खुश हूं। क्या कुछ हुआ है?' उसने भी उत्सुकता से पूछा।

'अगर तुम्हारा मतलब है कि मैंने किसी खास से कुछ सुना है, तो जवाब है नहीं,' मैंने उनकी बात समझते हुए कहा। 'आज बस सुबह उठते ही मुझे अहसास हुआ कि अब सब हटाने का समय आ गया है। मैंने महसूस किया कि मैं कितनी झल्ली लग रही थी, तो मैं बस हेयर कट करवाने पहुंच गई।'

'सिर्फ हेयर ही तो नहीं,' निशा ने कहा।

'नहीं,' मैंने स्वीकार किया। 'मैंने मसाज और फेशियल भी करवाया... और फिर मैं शॉपिंग के लिए गई।' मैं मुस्कुरा रही थी।

'मुझे लगा ही था कि यह नई ड्रैस है,' कबीर ने कहा।

निशा ने नकली नाराजगी दिखाई। 'आदमी लोग कबसे ऐसी चीजों पर ध्यान देने लगे?' उसने छेड़ते हुए कहा।

'जबसे मैं तुमसे मिला हूं,' उसने कहते हुए उसकी तरफ एक किस उछाल दिया।

मैं एक खुशनुमा माहौल में थी; मेरी हंसी रुक ही नहीं रही थी, और फिर हम देर तक खिलखिलाते रहे।

'मैं अभी भी बहुत हैरान हूं,' निशा ने कहा। 'तुम बहुत बदल गई हो। और मेरा मतलब सिर्फ बाहर से ही नहीं है। तुम अंदर से भी बदली हुई लग रही हो। तुम सच में चमक रही हो।'

'पता नहीं,' मैंने कहा। 'आज मैं फिर से पुरानी मीरा बनकर उठी। मैंने खुद से लंबी बात की और कहा, "तुम्हें खुद से ईमानदार बनकर सच कहना चाहिए। खुद से मत भागो, अपने सपनों या जो लाइफ तुम डिजर्व करती हो उससे मुंह मत मोड़ो। हां, तुम अभी भी जी सकती हो, तुम्हें और सीखना है, और प्यार करना है। तुम्हारे पास खोने के लिए कुछ नहीं है और पाने के लिए पूरा जहान। उठो और दौड़कर उस लाइफ को हासिल करो जो सही मायने में तुम्हारी है"।'

'वाह,' निशा ने प्यार से कहा। 'यही सच है।'

'मुझे लगता है, हमें इसका जश्न मनाना चाहिए,' कबीर ने तय किया और निशा ने ताली बजाकर उसकी बात को स्वीकार किया। 'यहां अभी काफी शांति है... तो यहां की भीड़ को हम कुछ देर के लिए स्टाफ के हवाले कर सकते हैं। चलो बाहर डिनर पर चलते हैं।'

निशा ने मेरी बांह दबाई। 'मैं तुम्हारे लिए बहुत खुश हूं, मीरा।'

'मैं भी,' कबीर ने भी हाथ उठाया। 'ट्रीट हमारी तरफ से। चलो चलते हैं!'

हम बढ़िया खाना खाते हुए देर तक हंसते रहे। फिर से यूं खिलखिलाना अच्छा लग रहा था। जब हमने खाना खत्म किया, तो मैंने अपने दोस्तों का उस खूबसूरत शाम के लिए शुक्रिया अदा किया।

'वापस कैफे चलो न,' निशा ने कहा। 'मैं तुम्हारे लिए एक कैपेचिनो खरीदूंगी। मैं मालिक को जानती हूं,' उसने आंख मारते हुए कहा।

'थैंक यू, लेकिन अब मुझे अपने अपार्टमेंट में जाना चाहिए। मैंने अपनी किताब आधी छोड़ी हुई है, आज जाकर मैं उसे पूरा करने के मूड में हूं।'

उन दोनों ने मुझे गले लगाया। 'यह शाम बहुत शानदार रही,' कबीर ने कहा।

जब मैं घर की तरफ जा रही थी, तो सोच रही थी कि विवान क्या कर रहा होगा। मुझे अहसास हुआ कि अब मैं उसके बारे में बिना किसी कड़वाहट के सोच पा रही थी। महीनों से जो दुख था, वह छंट गया था।

विवान

20

पब्लिशर

जब प्लेन आखिरकार इंडिया में लैंड हुआ, तो मैं वहीं से टैक्सी लेकर सीधा कैफे कबीर पहुंचा।

कैफे में कुछ नहीं बदला था। वहां अभी भी वही रौनक थी, जो पहले हुए करती थी। कॉफी की महक तो मदहोश कर देने वाली थी। मैं बेसब्री से अपनी प्यारी ब्लैक कॉफी पीना चाहता था, लेकिन उससे भी ज्यादा मुझे अभी किसी और चीज की जरूरत थी।

'हाय निशा, क्या मीरा है यहां?' मैंने पूछा, तो निशा मुझे इतनी हैरानी से देख रही थी, जैसे उसने किसी भूत को देख लिया हो। वह गहरे सदमे में खड़ी थी। मैंने उसे गले लगाया और फिर से पूछा, 'क्या वो है यहां?'

'नहीं, तुमने उसे मिस कर दिया। वह अभी कबीर के साथ पब्लिशर के पास गई है। हम सब उम्मीद कर रहे हैं कि उन्हें उसकी किताब पसंद आ जाए।' अचानक उसकी आवाज में शिकायत उमड़ आई। 'क्या तुमने कभी नहीं सोचा कि इस तरह गायब हो जाने से पहले तुम्हें उससे बात कर लेनी चाहिए थी।'

मैं तड़प उठा। मैं जानता था, वह सही कह रही थी, लेकिन उसे नहीं पता था कि मैंने यह सब क्यों किया।

'विवान तुम्हारे जाने के बाद हर दिन वह रोई थी। तुमने उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ दिया था। विवान... सच में... तुम उसके साथ ऐसा कैसे कर सकते थे? हम सबके साथ?'

निशा ने मुझे ब्लैक कॉफी दी। मैंने बड़े मन से उसे पिया, हालांकि मेरे मन में ख्याल आ रहे थे कि उसने कितने बेमन से इसे बनाया होगा। 'मुझे सच में लगता है कि अगर तुम उसे बताकर गए होते, तो शायद उसकी इतनी बुरी हालत नहीं हुई होती। उसे इसी बात की तकलीफ ज्यादा थी कि तुमने उससे जाने से पहले कहा भी नहीं। विवान तुमने किसी से नहीं कहा कि तुम जा रहे हो। कोई नहीं जानता था कि तुमने सिटी बैंक में अपनी नौकरी छोड़ दी थी, जब तक कि मीरा और कबीर खुद तुमसे मिलने बैंक नहीं गए थे।'

'क्या वो मुझसे मिलने गए थे?' मैंने दुविधा से पूछा।

'हां, वो तुमसे मिलने गए थे, और तब जाकर हमें पता चला। मीरा को तुम्हारी परवाह थी। हम सबको तुम्हारी परवाह थी, विवान। तुमने यह भी नहीं बताया कि तुम अपने ईमेल अकाउंट और फोन भी बंद कर रहे हो। उसने हर दिन तुम्हारे मैसेज का इंतजार किया। हर दिन। लेकिन उसे कोई मैसेज नहीं मिला। वह उन टूटे सपनों में उलझ गई, जिन्हें

तुम चकनाचूर कर गए थे।'

'मुझे कुछ समझ नहीं आया। मैंने सोचा कि मैं और मीरा बस अच्छे दोस्त थे,' मैं फुसफुसाया।

'दोस्त एक-दूसरे को गुडबाय बोलते हैं। दोस्त बात करते हैं। दोस्त एक-दूसरे को सब समझाते हैं। अगर दोस्ती से तुम्हारा मतलब यूं अचानक चले जाने से हैं, तो विवान तुम्हें फिर से स्कूल जाकर दोस्ती का मतलब समझना चाहिए।

'विवान, तुम बिना एक शब्द कहे चले गए थे। तुमने जो किया उसे भागना कहते हैं, क्योंकि तुम जरूर किसी चीज को संभाल नहीं पा रहे थे। तुम इसी चीज में तो बेहतर थे, यही कहा था न तुमने शुरुआत में? तुमने तो मुझसे या कबीर तक से गुडबाय नहीं कहा। मुझे लगा था कि तुम दोनों एक दूसरे की बहुत कद्र करते हो। तुम्हारे लिए वो शायद फाइनेंशियल साझेदारी रही होगी, लेकिन कबीर सच्चे मन से तुम्हें अपना मानता था। मुझे लगता है अपने रहस्यी व्यक्तित्व से तुमने साबित कर दिया है कि तुम सिर्फ वही नहीं हो, जो हम सब तुम्हें समझते थे, तुम उससे बहुत अलग हो।'

मैंने अपना सिर लटका लिया। मैं जानता था कि मैंने जो इन लोगों को दुख दिया है उसकी बहुत भरपाई करनी होगी, लेकिन निशा की बातें सुनकर तो मुझे सच में खुद से बहुत शर्म आ रही थी।

उसने काउंटर से आगे आकर मुझे गले लगा लिया। एक पल के लिए तो मैं वहीं जम गया। अभी यह लड़की मुझे चले जाने के लिए दुत्कार रही थी, और अब वह मुझे प्यार से पुचकार रही थी।

'सबसे बड़ी बात है, विवान,' वह बोली। 'दोस्त एक दूसरे को माफ कर देते हैं।'

हम कुछ पल ऐसे ही खड़े रहे, मैंने उसके गुस्से को शांत होता महसूस किया। मुझे निशा की परवाह थी, तो उससे मिली यह माफी अभी मेरे लिए सबसे बड़ा उपहार थी।

अचानक मुझे अहसास हुआ कि निशा किसके बारे में बात कर रही थी। मैं उस पब्लिशर को जानता था। 'निशा,' मैंने जल्दी से कहा, 'तुम सही कह रही हो। मैंने बहुत बड़ी गलती कर दी है, और अब मैं उसे सुधारना चाहता हूं। मुझे माफ करना कि मैं फिर से भाग रहा हूं, लेकिन मुझे इसी वक्त कबीर और मीरा से मिलना है।'

'गुड लक,' मुझे पीछे से उसकी आवाज सुनाई दी।

व्ह पब्लिशर कबीर का दोस्त था, जिसके बारे में वह मीरा को बताता रहा था। उसने वादा किया था कि वह एक दिन उन दोनों की मुलाकात करवाएगा।

मैं एक छोटे से ऑफिस के रिसेप्शन पर पहुंचा। डेस्क पर कोई नहीं था, तो मैं सीधा ऑफिस की तरफ बढ़ गया, जहां पब्लिशर और एडिटर बैठे थे। वे वहीं पर निर्णय लेते थे कि किताब छापी जानी चाहिए या नहीं। मैं थोड़े बंद हुए दरवाजे से उन लोगों की बातें सुन पा रहा था।

'मुझे मानना पड़ेगा मीरा कि भले ही यह आपकी पहली किताब हो, लेकिन बहुत ही बेहतरीन है। यह बढ़िया तरीके से लिखी गई दिलचस्प कहानी है। आपको इस क्षेत्र का कोई अनुभव नहीं है, लेकिन ऐसा लगता है कि किसी खास ने आपको गहराई से प्रेरित किया है। यह पाठक के दिल को छू लेगी। हर पेज उन्हें एक नई दुनिया में ले जाएगा। इसके दो मुख्य

पात्रों, विवान और मीरा के बीच प्यार को हम सहजता से महसूस कर सकते हैं। आपने हमें दिखाया कि छोटे-छोटे बदलाव भी जिंदगी में बड़ा प्रभाव छोड़ सकते हैं। आपने एक रहस्यमयी आदमी के किरदार को गढ़ा है, जो उस लड़की के प्यार में पड़ जाता है। इसके प्लॉट में वाकई दम है,' उस कमरे में बैठा पब्लिशर कह रहा था।

लेकिन तभी मेरी सांस अटक गई, जब मैंने सुना।

'इसमें एक प्रॉब्लम है,' पब्लिशर ने कुछ देर ठहरने के बाद कहा।

'वो क्या?' मीरा ने पूछा।

'किताब अभी खत्म नहीं हुई है। आपने उसे वहीं खत्म कर दिया है, जहां विवान चला गया है। आपने इसमें नहीं दिखाया कि विवान के साथ क्या हुआ। आपने बस इतना ही दिखाया कि उन्हें प्यार हुआ, और एक दिन वह चला गया, बिना बताए। यह किताब का अंत है। विवान को क्या हुआ? क्या वह दुनिया का सफर कर पाया? क्या वह कभी लौटकर आया? अगर वह वापस नहीं आया, तो क्या मीरा को किसी और से प्यार हुआ?'

'मैं... मैं नहीं जानती कि विवान के साथ क्या हुआ,' मीरा ने धीमे से कहा।

'अगर आप इसे खत्म नहीं करती हैं, तो फिर इस पर बात करना समय की बर्बादी है। हम ऐसी अधूरी किताब नहीं छाप सकते। मैं समझता हूं कि कभी-कभी जिंदगी में छोटी चीजें बड़ा असर छोड़ जाती हैं, लेकिन अगर आपको यह मुझसे छपवानी है, तो इसका अंत बेहतर करना ही होगा।'

मैं तुरंत अंदर घुस गया। 'विवान यहां है। देखो मुझे। मैं वापस आ गया हूं, और अब मैं चाहता हूं कि तुम अपनी किताब पूरी करो।'

मीरा मुझे घूर रही थी, उसके खूबसूरत काले बाल उसके कुछ कुम्हलाए चेहरे पर आ गए थे। मैं उसे देख रहा था, उसकी किसी हरकत के इंतजार में। अचानक वह कुर्सी से उठते हुए चिल्लाई, 'विवान!'

'मीरा, मैं वापस आ गया हूं,' मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

मीरा की आंखों में आंसू भर आए और वह वहां से जाने लगी। मैंने आगे बढ़कर उसे अपनी तरफ खींच लिया इससे पहले कि वह दरवाजे से निकल जाती। मैं उसे भागने देना नहीं चाहता था, जैसे मैंने किया था।

मैंने उसका हाथ पकड़कर कहा। 'शायद हमें कैफे कबीर चलना चाहिए, वहां मैं कॉफी पीते हुए तुम्हें अपने बारे में सब बता देना चाहता हूं।'

कबीर ने मुझसे कुछ नहीं कहा, वह बस मेरे गले लगा, और फिर हम सब कैफे कबीर की तरफ चल दिए।

• • •

'मैं कहना चाहता हूं कि यूं अचानक चले जाने का मुझे बहुत अफसोस है,' मैंने अपने दोस्तों के साथ मेज पर बैठते हुए कहा। 'मैंने इस बारे में नहीं सोचा था कि इससे तुम लोगों को इतना दुख होगा; ऐसा करना मेरा मकसद कभी नहीं था। जाने का जो रास्ता मैंने चुना वो बेहद गलत था। मैंने तुमसे या कबीर और निशा को गुडबाय तक नहीं कहा।' मैंने हरेक का नाम लेते हुए उसकी तरफ देखा।

'उस बात का दुख मुझे हमेशा और हर दिन रहा, चाहे मैं जहां भी गया। मुझे तुम लोगों

को बता देना चाहिए था कि मेरे जाने का समय हो गया था, कोई चीज मुझे बुला रही थी... कि मेरे सपने पूरे होने का समय आ गया था।' मैंने आह भरते हुए अपना अंगूठा मीरा की सुंदर उंगलियों पर फिराया। 'यह बहुत बड़ा एडवेंचर था। मैंने पैरिस का सुंदर सनसैट देखते हुए तुम्हें बहुत याद किया। मैं चाहता था कि उस पल को बांटने के लिए तुम भी वहां मेरे साथ हो।'

मैंने उसकी भावनाएं जानने के लिए उसके चेहरे, उसकी आंखों को टटोला। लेकिन उनमें सिर्फ खामोशी थी।

'मैं कल तुमसे मिलना चाहता हूं। मुझे तुम्हें कुछ जरूरी बात बतानी है,' मैंने अपना चेहरा आगे करते हुए उसके कान में कहा। फिर, तेज आवाज में, मुस्कुराकर कहा, 'लेकिन आज रात तुम मेरे एडवेंचर की कहानियां जान सकते हो,' और फिर अपने सफर के किस्से सुनाने लगा।

एक और दिन, और फिर मीरा सारा सच जान जाएगी। यह मेरे मन पर एक लंबे समय से पड़ा हुआ बोझ था, और मैं उसे लेकर हमेशा परेशान रहता था। लेकिन, पैरिस में उन बुजुर्ग व्यक्ति से मिलने के बाद, मैं जान गया था कि अब मीरा को मेरे और मेरी भावनाओं के बारे में सब बताने का समय आ गया था।

21

वो शादी

अगले दिन जब मैं कैफे की कॉर्नर टेबल पर पहुंचा, तो मुझे अहसास हुआ कि मीरा मुझे देखकर खुश नहीं हुई थी। वह परेशान और नाराज थी, लेकिन इस बारे में बात नहीं कर रही थी।

'तुम मुझे कुछ बताना चाहते थे?' उसने पूछा।

'हां,' मैंने कुछ घबराहट से कहा। 'मैंने सोचा कि मुझे तुम्हें बताना चाहिए कि मैं क्यों बिना बताए चला गया था।' मैंने महसूस किया कि वह शायद कुछ और सुनना चाहती थी। मैंने आह भरके उसका हाथ थाम लिया।

उसके दूसरे हाथ में मैंने शादी का एक कार्ड रख दिया, जिस पर तीन साल पहले, 2012 की तारीख छपी थी।

उसकी आंखों में हैरानी थी, लेकिन फिर जोर से नाम पढ़ते हुए वह पूरी तरह नाराज हो चुकी थी।

'विवान संग राधा? तुम शादीशुदा थे?' उसने उसी गुस्से से पूछा।

'मीरा,' मैंने गुजारिश की, 'कुछ भी कहने से पहले क्या तुम मुझे पूरी बात बताने का मौका नहीं दोगी? ऐसा नहीं है, जैसे तुम सोच रही हो।'

'मैं क्या सोच रही हूं?' उसकी आवाज गुस्से में और तेज हो रही थी। 'तुम तो जानना भी नहीं चाहते कि मैं क्या सोचती हूं!'

मैंने उसके गुस्से को रोकने की कोशिश करते हुए कहा। 'मुझे पहले भी प्यार हो चुका है, लेकिन जब तुम मेरी कहानी जानना चाहती थी, तो मैं बताने के हालात में नहीं था। तो मैंने तुम्हारा ध्यान कबीर की कहानी की तरफ मोड़ दिया, उसकी लव स्टोरी की तरफ। मुझे गलत मत समझो, प्यार सच में खूबसूरत अहसास है! ये दो दिलों की धड़कन है, जो एक ही धुन बजाती है। मैं राधा के साथ कॉलेज में था। सब कुछ बहुत ही बढ़िया था। हमने एक-दूसरे के नंबर लिए और जल्द ही हमारा रिश्ता आगे बढ़ने लगा। हम एक-दूसरे को पागलों की तरह प्यार करते थे; वह ऐसा प्यार था जिसमें आप बस मदहोश रहते हो।' मैंने लंबी सांस ली। 'फिर हमने शादी का फैसला कर लिया।'

मैं मीरा को रोते हुए देख रहा था, लेकिन मैंने अपनी बात जारी रखी।

'जब उसने शादी के लिए हां कह दी, तो मैं बहुत खुश था। वह खूबसूरत, खुशमिजाज और बहुत इंटेलिजेंट थी। वह हर समय लोगों की मदद के लिए तैयार रहती।'

'विवान,' मीरा ने रुखाई से कहा। 'मैं सच में नहीं जानना चाहती कि तुम उसे कितना प्यार करते थे!'

'प्लीज, मेरी बात खत्म होने दो,' मैंने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, मैं नहीं चाहता था कि वह उठकर चली जाए।

उसने अपना हाथ मेरे हाथ से खींच लिया, लेकिन सिर हिलाकर बात पूरी करने का इशारा किया। 'ठीक है। मैं सुनुंगी,' उसने खुद पर नियंत्रण करते हुए कहा।

'थैंक यू,' मैंने कहा। 'शादी की तैयारियां जोरों से चलने लगीं। सब कुछ बहुत ही खूबसूरत था।'

मीरा कराही। क्या उसने अपनी आंखें भी घुमाई थीं? शायद। मैं जानता था कि मैं उसे परेशान कर रहा था, लेकिन आज उसे पूरी कहानी बताना जरूरी था। सच जानना उसका हक था।

उसे पूरी कहानी सुनाने के लिए मैंने खुद का मन मजबूत किया। मैंने पानी का बड़ा सा घूंट पिया और फिर आगे की कहानी शुरू की।

'शादी का दिन आ गया था। मैं पिंगेल गार्डन पहुंचा, जहां हमारी शादी होनी थी। मैं बहुत उत्साहित था; मैं बस जल्दी से अपनी दुल्हन को देख लेना चाहता था।' मैंने लंबी सांस ली। 'लेकिन वह कभी नहीं आई।'

मीरा ने हैरानी से थूक निगला।

'मैंने उसे फोन करने की बहुत कोशिश की लेकिन उसने फोन नहीं उठाया। हम आधा घंटा इंतजार करते रहे, फिर एक घंटा भी हो गया। मैं पागल हो रहा था। राधा हमेशा से टाइम की पाबंद थी, और वैसे भी वह तो उसका शादी का दिन था।'

'क्या हुआ था?' मीरा ने शांति से पूछा।

'वो तीन दिन गायब रही। मैं खा नहीं पा रहा था, सो नहीं पा रहा था। कुछ भी नहीं कर पा रहा था। पुलिस अपनी छानबीन कर रही थी, और एक समय तो ऐसा भी था, जब राधा के गायब होने में मुझे ही दोषी माना जा रहा था। क्या तुम कल्पना कर सकती हो? जिस लड़की से मैं शादी करने वाला था वह गायब हो गई थी, और सिर्फ इतना ही नहीं, मुझे ही उसका दोषी भी माना गया!'

मीरा ने तेजी से सिर हिलाया। 'मैं सोच भी नहीं सकती,' उसने कहा। 'तुम्हें कितने बुरे हालातों का सामना करना पड़ा।'

मैंने आह भरी। 'आखिरकार उन्हें उसकी बॉडी मिली...'

'उसकी बॉडी? विवान, ओह नो।'

मैंने हां में सिर हिलाया। 'वह शादी के लिए वेन्यु पहुंचने वाली थी, और कुछ पल अकेले में बिताना चाहती थी। उसने शादी का खूबसूरत जोड़ा पहन रखा था, और डायमंड नैकलैस और इयरिंग्स भी।'

मेरी आवाज सपाट हो गई थी, और आंखें भी पथरा गई थीं। 'उसका बलात्कार करने के बाद, उसे मार दिया गया था।'

'नहीं!' मीरा चिल्ला पड़ी थी।

'हां,' मैंने कहा, मेरी आंखों में आंसू थे। 'उसकी बॉडी पार्क में, अधनंगी हालत में मिली।

ज्वैलरी लूट ली गई थी; यहां तक कि कानों की बालियों को कान चीरते हुए खींचा गया था!' मेरी आवाज में गुस्सा था।

'प्लीज, मुझे बताओ कि इसका दोषी तुम्हें तो नहीं माना गया था न।'

'नहीं। मैं उस समय शादी के वेन्यु पर था, जब उसे... मारा गया।'

'क्या वो लोग अपराधी को ढूंढ़ पाए?'

'हां, आखिरकार।'

मीरा ने आगे एक शब्द नहीं कहा। वो यह भी नहीं कह पाई कि उसे बहुत अफसोस था, जैसे उसने कबीर की कहानी में निशा के अबॉर्शन के बारे में सुनकर कहा था। वह बस सुन्न बैठी थी।

'तो ये कहानी थी,' मैंने सिसकते हुए कहा। 'अब तुम जान जाओगी कि क्यों मैं कभी तुम्हें प्यार के बदले प्यार नहीं दे पाया, मीरा। मुझे माफ कर दो मीरा।'

'तुम ठीक तो हो न?' मीरा ने नरमी से पूछा।

'एक दिन जरूर ठीक हो जाऊंगा,' मैंने जवाब दिया। 'अभी के लिए मैं इन यादों को दिल में दबा लेना चाहता हूं। मैं कभी राधा को या हमारे उस प्यार को भूलना नहीं चाहता।'

मुझे अहसास हुआ कि उस पल मेरे हाथ कांप रहे थे, और मैं पसीने से तर हो रहा था।

'वो बदनसीब दिन आज भी मुझे डराता है। काश तुम राधा मिल पातीं,' मैंने कहा। 'मैं जानता हूं ये अजीब है, लेकिन वह जल्दी से लोगों से घुलमिल जाती थी।'

मीरा ने मेरा हाथ दबाया, भरी आंखों से वह इतना ही कर पाई। वह बड़ी मुश्किल से खुद को रोने से रोक रही थी।

'मैं उसके बिना टूट गया था, मीरा,' मैंने कहा। 'और आज टूटा हुआ हूं।'

मीरा भी अब मेरी तरह फूट-फूटकर रो रही थी। हम दोनों ही प्यार के दर्द को महसूस कर पा रहे थे। मैं उसे फिर से रुलाना नहीं चाहता था; सच में, बिलकुल नहीं। लेकिन उसे मेरी कहानी पता होनी चाहिए थी, और ये भी कि मेरा दिल किसका था, और हमेशा रहेगा।

'मैं समझती हूं कि तुम राधा से प्यार करते थे और कि हमेशा तुम्हारे दिल में उसके लिए एक खास जगह रहेगी,' आखिरकार मीरा ने कहा।

'मैंने तुम्हें बताया था कि जैसा तुम सोचती हो, वैसा नहीं है। मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए कभी राधा के साथ धोखा नहीं किया। धरती पर ऐसी कोई लड़की नहीं है, जो उसकी जगह ले सके। इसलिए मैंने भाग जाने का फैसला किया। मैं राधा की यादों और उन डरावने सपनों को नहीं संभाल पा रहा था। वह पुणे और इंडिया में ली गई हर सांस में मेरे साथ थी। वही थी जिसकी वजह से यह जगह मेरे लिए आबाद थी। और कुछ नहीं था जो मुझे यहां बांधकर रख सकता था। सफर करते हुए मैं खुद को उस दर्द से आजाद करवाने की कोशिश करता और उसके गम से उबरने की।'

मीरा ने समझते हुए धीरे से गर्दन हिलाई। पता नहीं कि वो मझी थी, या बस मुझसे सहमत हो रही थी।

उसने मेरे कंधे पर अपना हाथ रखा। 'मुझे बहुत अफसोस है कि ऐसे दिन पर तुम्हारे साथ इतना बुरा हादसा हुआ। राधा सच में बेहद अच्छी लड़की होगी। वह बहुत

खुशकिस्मत थी कि उसकी शादी तुम्हारे साथ होने वाली थी। मैं जानती हूं कि उसे खुशी ही होगी अगर तुम किसी को अपना बना लोगे तो।'

'यही तो मैं तुम्हें बताना चाहता हूं, मैं साफ बताना चाहता हूं कि मैं किसी और से प्यार नहीं कर सकता। मेरा दिल बुरी तरह से टूट चुका है, और मैं अभी भी सिर्फ राधा को चाहता हूं। तुम समझो कि मैं इसलिए तुमसे कोई रिश्ता नहीं जोड़ना चाहता। मैं तुम्हें वो प्यार नहीं दे सकता जिसकी तुम हकदार हो। मैं सिर्फ राधा का हूं, और तुम्हें कोई ऐसा इंसान ढूंढना चाहिए, जो सिर्फ तुम्हारा हो। मुझे तुम्हारे साथ समय बिताना अच्छा लगता है; प्लीज मुझे गलत मत समझना। मैं तुम्हें वैसे प्यार नहीं कर सकता, जैसे राधा को करता हूं।'

मीरा तभी खड़ी हो गई और पूछने लगी, 'फिर तुमने मुझे वो सब उपहार क्यों दिए? तुम्हें मेरी इतनी परवाह क्यों थी? तुमने मुझे किस क्यों किया था? क्या तुमने कभी मुझसे प्यार नहीं किया? एक पल के लिए भी नहीं?'

इससे पहले कि मैं कुछ जवाब दे पाता, वह जा चुकी थी।

मीरा

22

चढ़ाई

उसकी सचाई बर्दाश्त कर पाना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। हां, मैं विवान का प्यार समझ सकती हूं, और राधा के साथ जो हुआ, उसमें उसका यूं भाग जाना भी जायज था।

क्योंकि मैं उसे प्यार करती थी, इसलिए मैं उसके पास रहकर उसे सहारा देना चाहती थी, लेकिन चूंकि मैं उसे प्यार करती हूं, तो उसकी कहानी को समझने के लिए मुझे अपने लिए भी कुछ समय चाहिए था।

आंसू मेरे गालों पर बह रहे थे, मैं कार तक पहुंची और ड्राइव करनी शुरू कर दी। जाना कहां था, मैं नहीं जानती थी, लेकिन जब तक मेरे सामने रोड था, मुझे बस चलते रहना था।

कभी मैं रोड पर दांयें मुड़ती, तो कभी बांयें। लेकिन ज्यादातर समय मैं बस सीधे रास्ते पर ही गाड़ी दौड़ा रही थी।

अचानक मुझे अहसास हुआ कि मैं गुंजवणी पहुंच गई थी। यहीं आगे कहीं राजगढ़ का प्राचीन किला भी था। मैं सालों से वहां नहीं गई थी, लेकिन उसका पथरीला रास्ता अक्सर मुझे बुलाता सा प्रतीत होता था।

कार से निकलने से पहले मैंने निशा को एक मैसेज कर दिया। 'मैं ठीक हूं,' मैंने टाइप किया। 'राजगढ़ की चढ़ाई पर जा रही हूं। नीचे आकर तुमसे बात करूंगी। चिंता मत करना।'

चढ़ाई बहुत मुश्किल नहीं थी, लेकिन मैं खुश थी कि आज मैंने ढंग के जूते पहन रखे थे। मैं तेजी से रास्ते पर बढ़ गई। चढ़ते समय पैरों में हुई जलन से मुझे अच्छा लग रहा था। मुझे दर्द महसूस करना था। मैं समझना चाहती थी कि मैं जिंदा थी।

जब मैं किले पर पहुंची, तो मेरे फेफड़े धधक रहे थे, और मैंने घास के एक मैदान में पथरीला रास्ता ढूंढने के लिए अपनी चाल को धीमा कर लिया।

राजगढ़ पहुंचने पर हल्की बारीश होने लगी थी, जिससे मेरे तपते शरीर को बहुत ठंडक पहुंची। मैं एक पानी के टैंक पर रुकी और आगे बढ़ने से पहले पानी का लंबा घूंट लिया।

वहां कुछ देर सुस्ताते वक्त मैं विवान और राधा के बारे में ही सोच रही थी। मैं उसे प्यार करती थी, लेकिन बस उसकी दोस्त बनकर ही नहीं रह सकती थी? क्या मैं कभी उसे बता पाऊंगी कि मैं उसे कितना प्यार करती थी? और अगर वह भी मुझे प्यार करने लगे, तो क्या बाकी की जिंदगी मैं राधा की परछाई बनकर ही बिताऊंगी?

बारीश तेज होने पर मेरे आंसू भी फिर से बहने लगे थे। मैं फिर से विवान से बात करना

चाहती थी, और एक बार तो मुझे वापस उतरने का ख्याल भी आया। नहीं। मैं इतना आगे आ चुकी थी और चोर दरवाजा यहां से पास में ही था। मैं कभी इस रास्ते से नहीं गई थी क्योंकि यहां खड़ी चढ़ाई थी। लेकिन चोर दरवाजा देखने का लालच मुझे आगे बुला रहा था। शायद, उस दरवाजे से जाने पर मुझे विवान के दिल का भी कोई गुप्त दरवाजा मिल जाए? यह कितना बेवकूफाना था, लेकिन मुझमें और ज्यादा सोचने की हिम्मत नहीं थी।

मैंने खड़ी चढ़ाई पर चढ़ना शुरू कर दिया, पथरीला रास्ता, जिसके साथ मैटल रैलिंग लगी थी।

वह क्या था? मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मुझे बुला रहा हो। लेकिन यह तो हो ही नहीं सकता था।

एक मुश्किल जगह पर, मैं सांस लेने के लिए रुकी। मुझे सुस्ताने की जरूरत थी; मेरे पैर कांप रहे थे और बारीश की वजह से रास्ता फिसलन भरा हो गया था। जब मेरी सांस कुछ संभली, तो मैं खूबसूरत नजारा देखने के लिए मुड़ी। आह... ऐसा लग रहा था जैसे मैं यहां से जन्नत को भी छू सकती थी।

मैं मुस्कुराई, राहत का अहसास मेरे शरीर पर छा गया, लेकिन फिर मैंने विवान के बारे में सोचा तो महसूस किया कि मेरा यूं भाग आना कितना गलत था। मैंने आंखें बंद करके उसकी आंखों का दर्द महसूस किया। हां, वह उससे प्यार करता है। वह बहुत प्यार करता है, लेकिन यही प्यार उसे कितना दर्द भी तो दे रहा था।

उसे सच में मुझे राधा के बारे में बताने के लिए कितनी हिम्मत करनी पड़ी होगी। वह उसकी यादों से बचने के लिए ही दुनिया घूमने गया था, लेकिन वापस आने पर उन्हीं यादों को मेरे सामने यूं रखना पड़ा।

और जब आखिरकार हिम्मत जुटाकर मुझे बताया, तो मैंने क्या किया? मैं वो सारा दर्द लेकर मुंह मोड़कर आ गई। मैं तो उस हालात का अंदाजा भी नहीं लगा सकती, जिससे वो गुजरा होगा, और फिर से उसे उस दिन को याद करना पड़ा; मैंने कहानी सुनी और वापस उसे दर्द देकर भाग आई।

मुझे खुद पर बहुत शर्म आई। मुझे बस उसके वो शब्द ही याद रह गए थे, जब उसने कहा कि वह मुझे प्यार नहीं कर पाएगा। वो निजी बातचीत, उसका प्यार, बलात्कार, खून, शादी का दिन... सब फिसल गए और मेरा जवाब बस उन्हीं शब्दों पर टिक गया कि वह मुझे प्यार नहीं कर पाएगा।

मुझे उसके पास वापस जाना चाहिए। उससे माफी मांगने, उसे सहारा देने। मैं उस याद दिलाना चाहती थी कि जिंदगी आगे बढ़ने का नाम है। हम अपनो को खोते हैं, अफसोस करते हैं, लेकिन जब तक हम जिंदा हैं, हमें जिंदगी से प्यार तो करना ही पड़ता है।

मैंने दृढ़ता से सिर हिलाया। अब कैफे कबीर वापस जाने का समय आ गया था।

फिर वो अचानक से ही हुआ। मैंने नजारे को आखरी बार देखते हुए, अपने चेहरे पर गिर आए बालों को हटाने के लिए रैलिंग छोड़ी। मैंने खड़े पत्थर पर ध्यान देते हुए उतरने के बारे में सोचा, तभी मेरे पैर एक चट्टान से फिसल गए। मैं गिरने लगी, बेताबी से रेलिंग को पकड़ने की कोशिश करते हुए, लेकिन मेरे हाथ कुछ नहीं आया।

मैं लुढ़क रही थी, पत्थर मेरे शरीर को रगड़ रहे थे और मेरे मुंह से भयानक चीख निकल

रही थी।

शुक्र था कि तुरंत अंधेरा छा गया और अब मुझे किसी दर्द का अहसास नहीं हो रहा था।

विवान

23

गुमनामी

मीरा इतनी जल्दी में निकल गई थी कि मैं जान गया था मैंने उसे फिर से तकलीफ पहुंचाई थी। मैं उसके पीछे भागने ही वाला था, लेकिन मुझे नहीं लगता था कि अपनी ऐसी हालत में मैं उसकी कोई मदद कर पाऊंगा। मैंने एक पट्टी हटाकर उसे अपना बरसों पुराना जख्म दिखा दिया था, जिसे मैं अब तक छिपाता आ रहा था।

खुद को संभालने के लिए मैं लॉन्ग वॉक पर निकल गया। मैं चाहता था कि जब वह वापस आए, तो मैं खुद को संभाल चुका हूं।

कई घंटों बाद मैं वापस आया और उसी कॉर्नर टेबल पर गया। कबीर उस सीट पर आ बैठा, जिस पर पहले मीरा बैठी थी।

'मैंने सुना जो तुमने मीरा से कहा,' कबीर ने कहा और फिर लंबी सांस ली। 'प्लीज इसे गलत मत समझना, लेकिन मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि मुझे तुम पर कितना गर्व हो रहा है कि तुमने इतनी हिम्मत करके मीरा को अपने अतीत और राधा के बारे में सब बता दिया।'

कबीर के मुंह से उसका नाम सुनकर मैं चौंक गया। लेकिन मैंने सिर हिलाते हुए कहा, 'थैंक यू, दोस्त। और अब तुम समझ गए होंगे कि मैं इस तरह क्यों भाग गया था। मुझे तुमसे भी माफी मांगनी थी। मैंने हमारी दोस्ती की कद्र नहीं की।'

'गलतियां हम सबसे होती हैं, विवान,' उसने जवाब दिया। 'और उन्हें पीछे छोड़ हम आगे बढ़ जाते हैं। तुम अच्छे दोस्त हो, और मैं खुश हूं कि तुम लौट आए।'

कॉफी का घूंट लेते हुए मैं खुश था कि चलो कम से कम हमारी दोस्ती तो अच्छे मोड़ पर थी।

कबीर ने आगे कहा। 'मीरा तुमसे बहुत प्यार करती है।'

मैंने आह भरी। 'मैं उसे बता चुका हूं कि मैं उससे वैसे प्यार नहीं कर सकता।'

कबीर ने अपना सिर हिलाया। 'यही तो मैं तुम्हें समझाने की कोशिश कर रहा हूं। तुम भी उसे उतना ही प्यार करते हो, जितना वह तुम्हें। मैं समझ नहीं पा रहा कि तुम अपने दिल की बात खुलकर क्यों नहीं कह रहे, विवान। तुम खुद को सजा दे रहे हो! तुम्हें उसे राधा की तरह प्यार करने की जरूरत नहीं है; तुम उससे मीरा की तरह ही प्यार करो,' कबीर ने समझाया।

'यही तो मैं उसे बताने की कोशिश कर रहा था,' मैंने हताशा से कहा। 'मैं किसी से प्यार

नहीं कर सकता। यही सच है। इसीलिए मैं किसी को बिना बताए चला गया था। मैं जानता हूं कि वह मुझे पसंद करती है, लेकिन मैं उसे वो प्यार नहीं दे सकता।'

दरवाजे के पीछे एक परछाई पर मेरी नजर गई। मुझे पूरा यकीन था कि वहां कोई खड़ा होगा, लेकिन फिर मैंने अनुमान लगाया कि शायद कोई लाइट गुजरी होगी।

'मैंने राधा से प्यार किया था और हमेशा उसे ही प्यार करूंगा। मेरे पास कोई स्विच नहीं है जिसे बंद करके कहूं कि अब मैं उसे प्यार नहीं करता। मैं जानता हूं मीरा बहुत परेशान है, और मुझसे नाराज भी, लेकिन मैंने तय किया था कि इस बात के सामने आने में ही सबकी भलाई थी।'

कबीर ने मुझे देखते हुए असहमति से अपनी भौंहें उठाईं। 'तुम्हें पता है कि एक आदमी औरत के साथ सबसे बुरा क्या कर सकता है?'

मैंने कंधे उचकाए। 'हां उससे बेवफाई करके।'

'नहीं उसे अपने प्यार में पागल करके, वो भी तब जब वो उसे प्यार लौटा नहीं सकता।'

मैं कबीर से नजरें चुराकर नीचे देख रहा था। वह सही कह रहा था। मुझे दोबारा से खुद पर शर्म आ रही थी।

• • •

'कबीर! विवान! हमें अभी हॉस्पिटल जाना होगा!' निशा ने अपना फोन रखते हुए घबराकर कहा। उसकी आवाज के डर को सुन मेरा दिल बैठे जा रहा था।

'क्यों? क्या हुआ?' मैंने पूछा।

'मीरा! उसका एक्सीडेंट हुआ है।'

बिना एक शब्द कहे हम तुरंत कैफे से निकलकर कबीर की कार में आ बैठे।

'वह कहां थी?' मैंने पूछा।

'वह राजगढ़ गई थी,' निशा ने कहा।

'राजगढ़?' मैं चिल्लाया। 'वो वहां क्यों गई थी? और वहां क्या हुआ?'

निशा ने अपना सिर हिलाया। 'मैं नहीं जानती, विवान। हॉस्पिटल चलकर ही पता करते हैं।'

यह कैसे हो गया था? क्या वह नाराज थी और ध्यान नहीं दिया? मैंने सोचा।

हमने हॉस्पिटल पहुंचकर मीरा के बारे में पता किया। मिनट घंटों में बदल गए और हम इमरजेंसी वार्ड में बस बेसब्री से इंतजार ही कर रहे थे कि डॉक्टर आकर हमें कुछ बता पाएं। मैं जानता था कि वह एक्सीडेंट था। मैं फिर से वैसी ही लाचारी महसूस कर रहा था, जैसी राधा के गायब हो जाने के बाद थी। वहां लेटी मीरा के लिए मैं कुछ नहीं कर सकता था।

पता नहीं कैसे मेरे मन में ख्याल आ गया था कि जिन्हें भी मैं चाहता था, वो मुझसे दूर चले जाते थे।

मैं लगातार इधर से उधर चक्कर लगा रहा था। फिर मैं बैठ गया और अपने गिर्द बांहें लपेटकर रोने लगा। मैं अपनी कुर्सी पर ही आगे-पीछे हो रहा था।

'मुझे फिर से बताओ, निशा,' बोल सकने की हालत में आकर मैंने पूछा। 'राजगढ़?'

'यही बात उसने मैसेज में लिखी थी,' निशा ने कहा। उसकी आवाज भी आंसुओं से भारी

थी। कबीर ने उसे मजबूती से पकड़ रखा था।

'लेकिन क्यों?'

'वह भाग रही थी,' कबीर ने कहा। इसमें ताना था। मैं अपना सिर नीचे लटकाकर रोने लगा।

मुझे अपने कंधे पर किसी का हाथ महसूस हुआ और मैंने ऊपर देखा। निशा मेरा ध्यान खींचना चाहती थी क्योंकि डॉक्टर हमारी तरफ ही आ रहे थे। एक ही समय में जहां मुझे आशा की किरण दिखाई दी, वहीं डॉक्टर के चेहरे के भाव देखकर डर भी लगा।

'उनकी हालत अभी स्थिर है,' डॉक्टर ने शांति से कहा। 'उनका शरीर बुरी तरह से टूट गया है, लेकिन अभी जो हम कर सकते थे, कर दिया है।'

'उसे हुआ क्या था?' मैंने पूछा।

'पक्का तो नहीं कह सकता। खबर मिली थी कि फोर्ट की ओर जाते हुए वह गिर गई थीं। किस्मत से वहीं पास में दूसरे पर्वतारोहियों का समूह था, जिन्होंने तुरंत इमरजेंसी के लोगों को बुला लिया। अब प्लीज मुझे वापस जाना होगा।'

'क्या मैं जाकर उससे बात कर सकता हूं?' मैंने पूछा।

'सर,' उन्होंने संभलते हुए कहा। 'उनकी हालत स्थिर है, लेकिन इस समय वह बेहोश हैं। जब तक उन्हें होश नहीं आ जाता, वह किसी से बात नहीं कर सकतीं। हम उन्हें आईसीयू में शिफ्ट करने वाले हैं।'

'आईसीयू?' कबीर ने कहा। 'मुझे लगा स्थिर से आपका मतलब बेहतर था?'

'वह उतनी बेहतर हैं कि हम उन्हें शिफ्ट कर पाएं। लेकिन उनकी हालत अभी भी नाजुक है। लेकिन चूंकि वह अभी बेहोश हैं, तो बेहोशी में जान पर खतरे के चांस कम होते हैं।'

डॉक्टर के शब्द मेरे कलेजे को चीर रहे थे।

पता नहीं वहां मुझे कितना समय हो गया था? कुछ घंटे? या मिनट? मुझे याद नहीं लेकिन जब डॉक्टर मीरा को आईसीयू में भेज रहे थे, तभी मुझे कुछ होश आया। उस वार्ड में लोगों को नाजुक हालत में ही लाया जाता था। वहां मौजूद हर पेशेंट जिंदगी और मौत से जूझ रहा था। कुछ बीमारियों के वजह से थे, तो कुछ मीरा की तरह एक्सीडेंट केस।

मीरा का चेहरा सूजा हुआ था, उसकी पलकें बंद थीं। उसके सिर पर पट्टियां बंधी थीं और उसे कुछ मशीनें लगाई गई थीं, जिनसे वह सांस ले पा रही थी। मैं नहीं जानता कि उन मशीनों का क्या काम था, लेकिन इतना जानता हूं कि उनकी आवाज मुझे पागल बना रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे यह सब मेरी ही गलती है। मैं वो इंसान नहीं था, जिसे वह चाहती थी। मैं वो इंसान था, जिसने उसे राधा के बारे में बताकर उसका दिल तोड़ दिया था। वह गुस्से से कार चलाती हुई किले तक पहुंच गई, वहां पहाड़ पर चढ़ाई करने के दौरान ही यह एक्सीडेंट हुआ था; अब मैं उसकी जिंदगी के लिए प्रार्थना कर रहा था।

'मैं यहीं रहूंगा। प्लीज, तुम लोग घर जाकर आराम करो। मैं चाहता हूं, जब उसकी आंखें खुलें, वो मुझे ही अपने पास देखे,' मैंने निशा और कबीर से दृढ़ता से कहा।

मैं मीरा के पास ही रखी कुर्सी पर बैठ गया। उसके नाजुक हाथ में आईवी लगी थी और मुंह में सांस लेने की नली।

मुझे महसूस हुआ कि वह गुमनामी की हालत में थी, और मेडिकल के ये औजार उसे

जिंदा रखने की कोशिश कर रहे थे। मेरी आंखें टिमटिमाती लाल और हरी लाइट पर जमी थीं, और मैं उसे जिंदगी से लड़ते हुए देख रहा था। मुझे अहसास हुआ कि मैं भी अपनी सांसों के लिए लड़ रहा था।

'ये मैंने क्या कर दिया?' मैंने नरमी से उससे कहा। मुझे दोबारा से प्यार को महसूस करने का मौका मिला था, और देखो मैंने क्या किया। कबीर सही कह रहा था; एक आदमी औरत के साथ सबसे बुरा यही कर सकता है कि उसे अपने प्यार में पागल करे, और वो भी तब जब वो उसे उसका प्यार नहीं लौटा सके। यही तो मैंने मीरा के साथ किया था।

मैंने उसका हाथ पकड़ा और उसके सामने बैठकर सुबकने लगा। मेरी आंखें उसी पर टिकी थीं और मैं मन ही मन उससे कुछ बोलने की प्रार्थना कर रहा था। उसकी आंखों में कोई हरकत नहीं हुई। मशीनों का शोर मुझे वह बता रहा था, जो उसका शरीर नहीं बोल पा रहा था। उसे ऐसी हालत में देखकर मैं पूरी तरह से टूट गया था।

'मीरा!' मैंने कहा। 'मैंने तुम्हें तोहफे इसलिए दिए क्योंकि मैं तुम्हें प्यार करता हूं। मैं तुम्हारी परवाह इसलिए करता हूं क्योंकि मैं तुम्हें प्यार करता हूं। मैं तुम्हें इसलिए किस किया क्योंकि मैं तुम्हें प्यार करता हूं। मैंने हर पल तुमसे प्यार किया है। और हमेशा करूंगा। यही वजह है कि मैं इंडिया वापस आया। मेरा एक दिन भी तुम्हारे बारे में सोचे बिना नहीं गुजरा। तुम मेरी पूरी दुनिया थीं, और मैं बहुत शर्मिंदा हूं कि ये सोचता रहा कि मैं अभी भी राधा को प्यार करता हूं। ओह मीरा! अगर मैंने तुम्हें खो दिया, तो मेरी जिंदगी भी चली जाएगी। तुमने मुझे जीने की वजह दी। तुमने मुझे अपने सपने पूरे करने की हिम्मत दी। और अब खुद को देखो। तुम ट्यूबों और मशीनों के सहारे हॉस्पिटल के बैड पर पड़ी हो। उठो, मेरे प्यार। जब तुम उठोगी, तो मैं तुम्हें सब बता दूंगा कि मैं तुम्हारे बारे में क्या सोचता हूं। राधा की मौत से उबरने का जरिया मैं तुम्हारे साथ ढूंढ़ लूंगा। अगर तुम्हें कुछ हो गया तो मैं सह नहीं पाऊंगा। मैं ये सब संभाल नहीं पाऊंगा।'

बीच-बीच में नर्सें आकर मीरा को चैक कर जातीं। वे क्लिपबोर्ड पर कुछ लिख जातीं। कुछ नर्सों ने मुझसे बात करने की कोशिश भी की, जबकि कुछ ने मुझे अनदेखा किया। लेकिन मुझे किसी की परवाह नहीं थी। मैं बस मीरा का हाथ पकड़े बैठा था, और मैंने वहां से जाने से मना कर दिया था। जब दिन रात में बदल जाता, तो मैं वहीं कुर्सी पर मीरा का हाथ पकड़े हुए ही सो जाता। मशीनों की आवाज में मुझे अच्छी नींद नहीं आती, लेकिन मैं एक पल के लिए उसका हाथ छोड़ने को राजी नहीं था। वह भी सच जान जाएगी, और अंदर ही अंदर मैं भी समझ गया था कि वह राधा की जगह नहीं ले रही थी, बल्कि उसने मेरे दिल में अपनी एक अलग जगह बना ली थी। वह जगह सिर्फ उसी की थी।

जिंदगी के कुछ हिस्से हमसे इस कद्र जुड़े होते हैं कि हमें उनकी मौजूदगी का पता ही नहीं चलता, लेकिन उनके जाने के बाद अहसास होता है कि वे हमारे लिए कितने महत्वपूर्ण थे। हालांकि एक दिन हमें अहसास होगा कि हर हिस्सा धुंधला गया है, हर पल फीका पड़ गया है। किसी पुरानी किताब की तरह।

24

हाथ में हाथ

घंटे दिनों में बदल गए थे और दिन हफ्तों में। मैं बहुत थक गया था, और बिलकुल उजड़ा हुआ लग रहा था जब कबीर और निशा मेरे लिए खाना लेकर आए थे।

'वह कैसी है?' कबीर ने पूछा।

मैंने कंधे उचकाए। 'डॉक्टर का कहना है कि उसकी ब्रेन एक्टिविटी हो रही है, जो अच्छी बात है। इसके अलावा उसे अभी तक होश नहीं आया है। वह अभी भी कोमा में है। मुझे डर है कि मैं उसे खो दूंगा। मुझे अपने दिल की बात उसे बता देनी चाहिए थी, लेकिन मैं खुद को इस सबसे बचाने की कोशिश कर रहा था। और अब यहां मैं हॉस्पिटल के इस कमरे में दोबारा से उसी दौर से गुजर रहा हूं।'

'विवान तुम्हें घर जाकर नहा लेना चाहिए। कुछ घंटे आराम करो और अपना ध्यान रखो। कम से कम शेविंग तो कर लो, अब तो तुम्हारी दाढ़ी भी बड़ी हो गई है,' निशा ने ध्यान दिलाया।

'जब तक मीरा को होश नहीं आता, मैं कहीं नहीं जा सकता।' यह बात कहते हुए मैं बिलकुल बच्चे की तरह जिद कर रहा था, लेकिन मैं किसी भी तरह उसके पास से हटने को तैयार नहीं था।

नर्सों ने मुझे उससे बात करने के लिए प्रेरित किया। कभी-कभी मैं उसे अपने सफर की कहानी बताता; कभी अपने दिल की।

मैंने उसे बताया कि सफर के दौरान मुझे अहसास हुआ कि कोई खुद से, या अपनी आत्मा से नहीं भाग सकता।

'जिस दिन हम मिले थे, मैं बिलकुल जम ही गया था... तुम इतनी खूबसूरत लग रही थीं कि मैं तुमसे बात करना चाहता था, लेकिन मुझे कुछ भी कहने से डर लग रहा था। मैं अपनी सांस रोककर, बहते समय को रोक देना चाहता था। शुरू से ही मैं जान गया था कि मेरे दिल को अपना ठिकाना मिल गया था।'

नर्स आई तो मैंने बोलना बंद कर दिया। उसने मुझे अपनी बात जारी रखने का इशारा किया।

'मीरा, तुमने मेरी दुनिया पूरी तरह बदल दी। तुमने मुझे बहुत खुशी दी... तुम मेरी आत्मा हो। मेरी जान, मैं पांच साल पहले की अपनी जिंदगी को मुड़कर नहीं देखना चाहता। मैं जानता था कि हमारी जोड़ी अच्छी लगेगी, लेकिन मन ही मन डरता था।

पिछले पांच सालों ने मेरे दिल में डर पैदा कर दिया था। अपनों के खो जाने का डर। लेकिन अब मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।'

नर्स ने मीरा के चार्ट में कुछ लिखा। मैंने उसकी तरफ नहीं देखा, लेकिन आंखों के कोने से मुझे पता था कि वह अपनी आंखों के आंसू पोंछ रही थी।

'स्वीटहार्ट,' मैंने गुजारिश की। 'मेरा हाथ पकड़ो। इसके साथ मेरा दिल, आत्मा, प्यार, विश्वास, आशा, सपने अतीत और भविष्य सब तुम्हारा है।

'मेरा हाथ पकड़ो, और मैं हमेशा के लिए सिर्फ और सिर्फ तुम्हारा हूं।'

मैं कहीं नहीं गया; मैं नहीं भागा। हर किसी को लगता था कि मुझे अपने जरूरी काम करने के लिए कमरे से बाहर जाना चाहिए। उन्होंने मुझे बताया कि हालात में जरा भी सुधार आने पर हॉस्पिटल से मुझे फोन आ जाएगा। लेकिन मुझे उनके फोन की जरूरत नहीं थी। मैं खुद उसकी गहरी भूरी आंखों को खुलते हुए देखना चाहता था।

मीरा

25

कसमसाहट

मैंने आसपास देखा, लेकिन कुछ भी जाना-पहचाना नहीं लगा। मैं कहां थी? मैंने जमीन देखने की कोशिश की, लेकिन कुछ दिखाई नहीं दिया।

ऐसा लग रहा था जैसे एक ही समय में मैं कहीं नहीं थी, और हर जगह थी भी।

क्या मैं उड़ रही थी?

मेरे मन में बहुत कन्फ्यूजन था।

फिर मुझे कोई अपने पास महसूस हुआ। मैं उसे देख नहीं पा रही थी, लेकिन जानती थी कि वह कौन था।

'मैंने तुम्हें देख लिया विवान,' मैं चिल्ला रही थी।

'हमारे बीच इस अनजानी दूरी के बावजूद मैं तुम्हें महसूस कर सकती हूं। मेरे पास बैठकर कहे शब्दों से मैं तुम्हें देख सकती हूं। जब भी तुम मुझे चैक करने के लिए छूते हो, मैं तुम्हारा स्पर्श महसूस कर सकती हूं। लेकिन किसी चीज की कमी है। कुछ ऐसा जिसे मैं महसूस नहीं कर पा रही। तुम्हारी गर्माहट।

'कुछ रातों को जब तुम मेरा हाथ पकड़कर बैठते हो, तो मैं अपनी हथेलियों पर तुम्हारे आंसू महसूस कर पाती हूं। लेकिन ये नहीं पता पड़ता कि वे ठंडे हैं या गर्म। क्या मुझमें अब महसूस करने की क्षमता नहीं रही? विवान, मुझे बताओ कि जब भी तुम्हें सुबकता हुए देखती हूं तो मेरा रोने का मन क्यों करता है। मैं रोने के लिए बहुत जोर लगाती हूं, जिससे मेरे अंदर का सारा गुस्सा, सारी हताशा निकल सके। लेकिन हमेशा फेल हो जाती हूं।

'विवान मुझे माफ कर दो, लेकिन मैं डरी हुई हूं। मैं बस यही चाहती हूं कि किसी तरह हाथ हिलाकर मजबूती से तुम्हारा हाथ थाम लूं। मैंने अपनी उंगली तक उठाने की बहुत कोशिश की, जिससे तुम्हें बता सकूं कि आशा मत खोना। लेकिन सब बेकार रहा। मुझे उन पलों के सपने आते हैं, जब हम पहली बार मिले थे, और हमने कितना अच्छा समय साथ बिताया था। मैं अभी अपने सच से भागने की कोशिश कर रही हूं, ताकि उन सपनों में खो सकूं, जहां तुम और मैं साथ हों। लेकिन फिर जब मेरी आंख खुलती है तो मेरा सामना अंधेरी सचाई से ही होता है। मैं अपनी आंखें बंद कर अंदर की रौशनी देखना चाहती हूं, लेकिन मैं तो अपनी आंखों को भी महसूस नहीं कर पा रही।

'विवान, ऐसा लग रहा है, जैसे मैं अपने ही अंदर फंस गई हूं। प्लीज मेरी मदद करो।'

विवान

26

एक भूली हुई डायरी

मशीनें चल ही रही थीं और मीरा आईसीयू में बेजान सी ही लेटी थी। मुझे नहीं पता था कि वहां रहते हुए मुझे कितना समय हो गया था। नर्सें आतीं और मीरा को चैक कर, उसकी रिपोर्ट लिखकर चली जातीं।

एक दिन एक नर्स ने मेरे कंधे पर अपना हाथ रखकर कहा, 'उसकी यादें जिंदा हैं। उसे हर बात याद है।'

मुझे समझ नहीं आया कि क्या कहूं, तो मैंने बस अपना सिर हिला दिया। आठ महीने हो आए थे, और मुझे मीरा की हालत में कोई सुधार नजर नहीं आया था। मैं तो एक छोटी सी भी हरकत का इंतजार कर रहा था। लेकिन वह बेजान पड़ी थी।

मैं मीरा के पास से नहीं हिला था, सिवाय बाथरूम जाने के। जब नर्सें मुझे नहाने का ऑडर देतीं, तो मैं जल्दी से जाकर पानी के नीचे खड़ा होकर आ जाता। कभी-कभी मैं वही गंदे कपड़े पहन लेता; तो कभी कबीर के लाए हुए साफ कपड़े पहनकर आ जाता।

मैं घर नहीं गया था। निशा या कबीर रोज खाने के समय पर खाना लेकर आते। एक दिन वे मीरा का कुछ सामान लेकर आए थे, इस उम्मीद में की होश में आने के बाद वह सामान देखकर खुश होगी। निशा के लाए सामान में मीरा की एक डायरी भी थी।

'क्या कुछ सुधार हुआ है?' एक दिन कबीर ने पूछा था।

मैंने अपना सिर हिलाया। 'नहीं, लेकिन डॉक्टर का कहना है कि ब्रेन एक्टिविटी बरकरार है। उन्हें लगता है कि वह मेरी बातें सुन रही है। जो कुछ भी मैं उसके लिए पढ़ता हूं, वह सुन रही है। आशा है यह बात सच होगी। मैं उसके लिए तेज आवाज में कहानियां पढ़ता हूं, और हर बार उम्मीद करता हूं कि कहानी खत्म होने से पहले वह उठ जाएगी।'

कबीर ने जाने से पहले झुककर मुझे सीने से लगा लिया।

मैं फिर से मीरा से बात कर रहा था। 'ओह, मीरा! काश मैंने तुम्हें सब कुछ बता दिया होता, बजाय इतना घुमा-फिराकर कहने के। मैं गलत था! मैं तुमसे बहुत कुछ कहना चाहता था!'

मैंने उसके बालों में हाथ फिराया। 'मैं तुम्हें बताना चाहता था कि मैं वापस इंडिया लौटकर क्यों आया था, इसलिए नहीं कि तुम्हें राधा के बारे में बताना था, बल्कि इसलिए कि मैं तुम्हें प्यार करता हूं। मैं तुम्हें उससे भी ज्यादा प्यार करता हूं, जितना कह रहा हूं। मेरे दिल में राधा के लिए हमेशा जगह रहेगी, लेकिन मेरे दिल में एक अलग जगह तुम्हारे

लिए है। उठो, मीरा, मैं तुम्हें अपने दिल की बात बताना चाहता हूं।'

मैं चाहता था कि उसकी गहरी भूरी आंखें वापस से सिर्फ मुझे ही देखें, लेकिन उन पलकों में अब कोई हरकत नहीं थी।

मैंने आह भरी। कबीर सही था--मुझे तोहफा मिला था। ये श्राप नहीं था, बल्कि प्यार का दूसरा मौका मिला था। मैंने उसे देखा। उसका चेहरा सूजा हुआ था, और उसकी आंखें अभी भी बंद थीं और वह ट्यूब से ही सांस ले रही थी। वह वो खूबसूरत चेहरे वाली लड़की नहीं थी, जो एक्सीडेंट से पहले मीरा हुआ करती थी। जब वो उस दिन गुस्से से कैफे से निकलकर गई थी।

'जानेमन,' मैं विनती की। 'बस सांस मत लो, अपनी जिंदगी खुलकर जियो।'

अभी भी कुछ हरकत नहीं हुई।

मैंने उसकी पुरानी डायरी उठाकर उसे देखा। उसकी मदद का जरूर कोई न कोई जरिया तो होगा ही। भले ही वह कोमा में थी, मैं उसकी कुछ मदद तो कर ही सकता था। मैं नहीं जानता था कि इससे वह हमारी दुनिया में वापस आ पाएगी या नहीं, लेकिन उसकी लिखी कहानी को जोर से पढ़ना शुरू किया। हर दिन वह अपने आसपास की दुनिया से अनजान बनी रहती। मैं उसे कैफे के मुसाफिर के बारे में बताता और कैसे वह एक दिन दुनिया देखने के एडवेंचर को पूरा करने निकल गया, लेकिन अब वह उसके सामने बैठा, उसका हाथ अपने हाथों में ले पुणे का सनसैट देख रहा था।

फिर, मैंने पन्ना पलटकर देखा, तो सामने वो लिखा था, जिसे उस दिन कैफे में कबीर ने जोर से पढ़ा था। उन्हीं पन्नों के बीच एक नैपकिन रखा था, जिस पर 'खूबसूरत' लिखा हुआ था। वह खूबसूरत थी, और उसकी राइटिंग तो खूबसूरत से भी बढ़कर थी... काश ये बात मैं उसके होश में आने पर उससे कह पाऊं।

विवान, मुसाफिर के साथ शुरू हुआ सफर अभी भी जारी था। उसने हमारी हर छोटी बात को नोट किया था। उसने साथ में गुजारे हमारे हर पल को ऐसे कैप्चर किया था, जैसे उसका दिमाग कोई कैमरा हो। उन पलों का मैं गवाह था। मैं पन्ने पलटता गया और उस दिन के पन्ने पर पहुंचा, जब मैं चला गया था। वहां के पन्ने आंसुओं से भीगे हुए लग रहे थे और बीच से कई पन्ने फाड़ दिए गए थे। ये वो पन्ने होंगे जिन्हें उसने अंत समझा था।

मैं जानता था कि मैं कोई राइटर नहीं था, लेखक होना तो दूर की बात थी। मैंने पन्ना पलटा। 'विवान वापस आ गया था!' उस पर लिखा था। वहां पर लंबा सा पैराग्राफ था कि कैसे मैंने उसे हैरान किया था। मैं आगे पढ़ता रहा, उसमें लिखा था कि मैं उसे अगले दिन कैफे में कुछ बताने के लिए बुला रहा था। 'मुझे लगता है कि आखिरकार वह कबूल करने वाला था कि वह मुझसे प्यार करता था! शायद वह मुझे प्रपोज करने वाला था। मुझे डर लग रहा है, लेकिन मैं उत्साहित भी हूं। मेरे पेट में तो अभी से गुड़गुड़ होने लगी थी।'

मैंने पढ़ना बंद कर दिया। बदकिस्मती से उस दिन ऐसा कुछ नहीं हुआ था। मेरी आंखों में फिर से आंसू भर आए थे। मैं क्या सोच रहा था? मैं इतना कठोर कैसे हो सकता था?

27

तुम

मीरा अभी भी बेहोश थी। मेरा सब्र भी जवाब देने लगा था और मैं जानता था कि मैं बस अब टूटने ही वाला था। मुझे अपनी बात कहनी ही थी, नहीं तो मैं पागल हो जाने वाला था।

मैंने उसका हाथ पकड़ा, अपनी आंखें बंद कीं और अपने दिल का हाल कह दिया।

'मैं कहानीकार नहीं था और न ही कभी बनने की ख्वाहिश थी। मैं तो कभी अच्छा पाठक भी नहीं रहा और नहीं जानता कि कभी बन भी पाऊंगा कि नहीं। लेकिन अब, मेरे पास उससे भी बहुत ज्यादा है।

हर सुबह, मैं उठकर जीने के बहाने खोजा करता। हर रात, सोने से पहले ना मरने की वजह तलाशता। हर पल, मैं आशा, ख्वाहिश और प्यार के कारण ढूंढता, लेकिन कोई कारण नहीं मिला। जब तक मैं तुमसे नहीं मिला।

मैंने खुद को झमेलों, कन्फ्यूजन और डर में घिरा हुआ ही पाया। लेकिन तुमसे मिलकर मेरा मन शांत हो गया।

हमारी किस्मत और सफर का फैसला समय के हाथों में ही होता है। और जब समय बदलता है, तो सब बदल जाता है। सब कुछ। कभी बुरे के लिए, और कभी अच्छे के लिए। तुमसे मिलने से पहले तक मैं ऐसा कभी नहीं मानता था।

यह कोई कहानी नहीं है, और शायद प्यार भी नहीं। यह कहानियों से ज्यादा वास्तविक और प्यार से ज्यादा ताकतवर है। यह तुम हो। हां, तुम। सच्ची और ताकतवर।

मैं कभी किसी के साथ खुश नहीं हुआ। मैं अलग-अलग लोगों के साथ, अलग-अलग जगहों पर होकर कुछ अलग महसूस करना चाहता था। लेकिन फिर तुम मुझे मिलीं। और मैंने पाया कि तुम महज एक इंसान नहीं हो, तुम अनंत हो। प्यार, परवाह, भरोसे, सम्मान और समझ की अनंत। शायद तुम ही वो ब्रह्माण्ड हो, जिसे मैं ढूंढ रहा था। या वह ब्रह्माण्ड मेरे ही अंदर था।

तुम्हारी न तो कोई शुरुआत है, न ही अंत। तुम निरंतर हो, लेकिन तुम्हारा रूप बदलता रहता है। तुम हर जगह हो और सिर्फ मेरे साथ भी। तुम मेरी निर्माता हो, या मेरी रचना, मैं खुद से ही यह सवाल करता हूं।'

'खूबसूरत,' यही शब्द मुझे सुनाई दिए। हर अक्षर बड़ी मेहनत, और कोशिशों से बोला गया था। मैंने आंख उठाकर देखा, मैं हैरान था। मेरी मीरा थी, उसकी आंखों में आंसू भरे थे।

मैं नहीं जानता था कि क्या कहूं। क्या यह चमत्कार था या प्यार की ताकत? या नियती?

मैंने उसे चूमा, और अपना चेहरा उसके चेहरे से सटाकर दोनों के आंसू मिला दिए।

उपसंहार

हर किसी की होती है... कहानी

किस्मत ने मुझसे मेरी कहानी निकलवा ही ली। जब विवान से मिली थी, तो मैं जानती थी कि उसी की कहानी थी, जिसे मैं कहना चाहती थी, लेकिन मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि उसके लिए मुझे इतनी परतों में उतरना पड़ेगा।

मैं अभी भी छड़ी की मदद से चल रही थी; मेरी बॉडी धीरे-धीरे रिकवर कर रही थी। मेरी बहुत सारी हड्डियां टूट चुकी थीं, मेरे पैरों को बहुत नुकसान पहुंचा था। कई दर्दनाक थैरेपी से मैं दो-चार हो चुकी थी, एक बार तो मुझसे कहा भी गया कि मैं कभी नहीं चल पाऊंगी।

लेकिन मुझे भरोसा था कि जिस दिन मैं कैफे में लोगों के सामने अपनी किताब से पढ़ूंगी, उस दिन मैं अपने पैरों पर खड़ी होऊंगी। मैं व्हील चेयर से अपनी नई शुरुआत नहीं करने वाली थी।

विवान से मिले हुए लगभग दो साल हो गए थे। तभी से उसकी कहानी मेरे मन में बुनने लगी थी। उस दिन अर्जुन मेहरा की कहानी सुनते हुए मैं कितनी बच्ची थी। मैं बेसब्री से लेखक बनना चाहती थी।

अब अपने सामने लोगों को बैठा देख, मुझे अपने हाथ कांपते से महसूस हो रहे थे। मैं हमेशा से उन्हें अपनी कहानी सुनाना चाहती थी और आज महसूस हो रहा था कि सच में मेरी लाइफ पूरी तरह से बदल गई थी। विवान ने इस पर ध्यान दिया और अपना हाथ बढ़ाकर हौंसले से मेरा हाथ थामा। उसके हाथ की एनर्जी से मेरा कांपना थमा और मुझे ताकत सी मिलती महसूस हुई।

आखिरकार मेरी किताब खत्म हो चुकी थी। अब वह अधूरी कहानी नहीं थी। मैं हैरान थी कि पब्लिशर को यह आइडिया अच्छा लगा था कि विवान भी उसमें अपना नजरिया रखे, और मैं इस बात से रोमांच में थी कि भले ही उसकी शुरुआत मैंने अकेले की थी, लेकिन अंत हम दोनों ने साथ किया था।

'चिंता मत करो! सब ठीक होगा!' विवान ने फुसफुसाते हुए मुझे किस किया।

'तुम ऐसे दिखा रहे हो, जैसे तुम्हें पूरा भरोसा है,' मैंने फुसफुसाते हुए उसे चूम लिया। 'काश मुझमें भी तुम्हारी तरह हिम्मत होती।'

'मैं तुम्हें हिम्मत दूंगा,' वह मुस्कुराया। 'इस बार तुम्हें अकेले पब्लिक का सामना नहीं करना पड़ेगा। हम दोनों साथ में करेंगे। लेकिन राइटर तो तुम हो, तो तुम ही शुरू करो।

तुम्हें अपना मंच खुद ही संभालना होगा। आखिरकार अगर तुम नहीं होतीं, तो यह किताब कभी लिखी ही नहीं जाती।'

उसकी आंखों में देखते हुए मैं मुस्कुराई। उसकी आंखों की दुनिया से मुझे प्यार था, जिनमें न सिर्फ मुझे मेरी कहानी और मेरा अस्तित्व मिला था, बल्कि उन्होंने ही मुझे अहसास कराया था कि खुशियां बांटने से ही सपने पूरे होते हैं।

कबीर ने अपनी घड़ी देखते हुए मुझे इशारा किया। उसने मुस्कुराकर अपना गला साफ किया।

'लेडीस एंड जैंटलमैन,' उसने तेज आवाज में कहा। 'वो समय आ गया है, जिसका आप सबको बेसब्री से इंतजार था। मैं आज आप सबको मीरा से मिलवाते हुए बहुत खुश हूं। हमारी ऑथर मीरा। मीरा ने भी आप ही की तरह शुरुआत की थी। वह भी वहां घंटों उन कुर्सियों पर बैठी रहती, कभी-कभी तो पूरी रात, कभी सप्ताह तक, ताकि बेहतरीन कहानी लिख सके,' कबीर ने कहा।

भीड़ ने खुशी से, तालियों के साथ मेरा स्वागत किया। मेरा दिल इतनी जोर से धड़क रहा था कि मुझे पूरा यकीन था कि कोई गड़बड़ तो मैं कर ही दूंगी। मेरी आंखें भीड़ को देख रही थीं। सबकी आंखें मुझ पर जमीं थीं, लेकिन मेरी विवान पर। उसने प्रोत्साहन से सिर हिलाया।

'मेरा नाम मीरा है और मैं इस किताब की लेखिका हूं। दो साल पहले, मैं ऐसे ही कैफे में बैठकर, ऑथर अर्जुन मेहता को सुन रही थी। मैं अपनी ही छोटी सी दुनिया में खोई हुई थी, और बड़े मन से उनकी बातें सुन रही थी। मैं खुश थी, लेकिन नहीं जानती थी कि मेरे पीछे जो आदमी बैठा है, उसका सपना दुनिया घूमने का था। उस पल मुझे अहसास हुआ कि उस आदमी की जिज्ञासा में जरूर दोस्ती, प्यार और जिंदगी की बेहतरीन कहानी होगी। हालांकि कोई नहीं जानता था कि उसका अंत कैसे होग,' मैंने कहा।

मैंने पानी के कुछ घूंट लेकर अपनी बात शुरू की, 'हर दिन एक नया पन्ना जुड़ता गया। एक चैप्टर खत्म होता, तो दूसरा शुरू हो जाता।'

'याद रखो, कहानी हरेक के पास है। भले ही वह लव स्टोरी हो या नहीं। वह कहानी सपनों, दोस्ती, आशा, अस्तित्व या फिर मौत की भी हो सकती है। और हर कहानी को कहना जरूरी है। और इससे भी ज्यादा हर कहानी को जीना जरूरी है।

'अगर मैं कोई सलाह दे सकती हूं, तो वो यही होगी कि हर दिन को जियो, चाहे दिन खराब ही क्यों न हो। हर दिन तुम्हारा पन्ना है, और उसमें शब्द भरने की पावर बस तुम्हारे ही हाथों में है। मजबूत रहो, लेकिन मत भूलो कभी-कभी कमजोर पड़ने में भी कोई बुराई नहीं।'

मैंने कबीर और निशा को देखा। वे मेरी बात सुन रहे थे, लेकिन अभी उनका ध्यान कहीं और था। मैं उसके हाथ को निशा के फूले हुए पेट पर देख सकती थी। कैफे के नॉर्मल शोर--कॉफी पॉट को रखना, कुर्सियों के सरकने के बीच मैं कबीर की खुशी की आवाज महसूस कर सकती थी।

मेरी आंखों में खुशी के आंसू भर आए, और मैंने उन्हें पोंछते हुए वापस अपना ध्यान ऑडियंस पर लगाया। 'खूब प्यार करो, और गलतियों को माफ करो। न सिर्फ दूसरों की

गलतियां, बल्कि खुद की भी।'

भीड़ ने एक बार फिर से तालियां बजानी शुरू कर दीं।

'अब आप क्या करोगी?' कॉर्नर से एक लड़की ने पूछा, उसकी आवाज तेज थी।

विवान खड़े होकर मेरे पास आ गया था। विवान से परिचय होने के बाद लोग खुशी से चिल्लाने लगे।

उसने अपनी बांह मेरे कंधे पर रखी, और प्यार से उसे दबाया। 'हम दोनों साथ में दुनिया घूमने जाएंगे और अपने सफर की खूब कहानियां लिखेंगे,' उसने विश्वास से कहा।

'आप कहां जाओगे?'

मैंने जवाब दिया। 'हर जगह। लेकिन हमेशा साथ।'

उसने मेरे माथे को चूमा और फिर ऑडियंस से कहा। 'हालांकि किताब तुम लोगों के हाथों में है, लेकिन हमारी कहानी अभी शुरू हुई है।'

आभार

मैं उन लोगों का आभार व्यक्त करना चाहती हूं, जिन्होंने इस किताब के जरिये मुझे देखा; उन सबको जिन्होंने अपना सहयोग दिया, बातें कीं, इसे पढ़ा और किताब को बेहतर बनाने में अपनी सलाह दी।

मैं अपने माता-पिता, परिवार और दोस्तों का आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने मुझे हमेशा प्रोत्साहित किया।

अपने मेंटर, आशीष बागरेचा का--आज मैं जो हूं, उन्हीं की वजह से।

अपने प्रकाशक, वैस्टलैंड लिमिटेड के गौतम पद्मनाभन का, जिन्होंने मेरी संभावनाओं को समझते हुए मुझे अपनी कहानी सुनाने का मौका दिया।

सवि शर्मा

E-Books

Best Telegram Channel for Every Book Lovers. Join today and Enjoy Reading .

Link of this Channel - t.me/Ebooks_Encyclopedia27

What you can find here?

Thousands of Books

Every Category of E-Books

New and Popular Books

And many More Things

Don't forget to Join Our All Channels

For Marathi Books - @MarathiEbooks4all

For Hindi Books - @HindiEbooks4all